इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

BSKC-134
संस्कृत व्याकरण

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

खंड

3

समास प्रकरण

खण्ड 3 का परिचय

संस्कृत व्याकरण पाठ्यक्रम का यह तृतीय खण्ड है। इस खण्ड में 4 इकाइयाँ हैं। खण्ड की ये सभी इकाइयाँ समास प्रकरण से सम्बन्धित हैं। इन इकाइयों में समास प्रकरण के सूत्रों की व्याख्या की गई है। समसनं समासः अर्थात् संक्षिप्त होने को समास कहते हैं। समास पाँच हैं – केवल समास, अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास तथा द्वन्द्व समास।

इस खण्ड की नौवीं इकाई में समर्थः पदविधि सूत्र से झयः तक के सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस इकाई के माध्यम से आप केवल समास तथा अव्ययीभाव समास के सूत्रों को भली-भाँति समझ सकेंगे। खण्ड की दसवीं इकाई में तत्पुरुषः सूत्र से शकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम् तक के सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस इकाई के माध्यम से आप तत्पुरुष समास का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

खण्ड की ग्यारहवीं इकाई में नञ् सूत्र से अर्धर्चाः पुंसि च तक के सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस इकाई के माध्यम से आप नञ् समास, गति समास, उपपद समास आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे। खण्ड की 12वीं इकाई में शेषो बहुव्रीहिः सूत्र से न पूजनात् तक के सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस इकाई के माध्यम से आप बहुव्रीहि समास तथा द्वन्द्व समास का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इस खण्ड की प्रत्येक इकाई में इकाई से सम्बन्धित कठिन शब्दावली दी गई है जिनका अर्थ जानना आपके लिए नितान्त अपेक्षित है, इन शब्दों का अर्थ जानकर आप अपने भाषिक सामर्थ्य में वृद्धि कर सकते हैं। इकाइयों के अन्त में उपयोगी पुस्तकों की सूची दी गई है। आप इन पुस्तकों का अध्ययन कर सम्बन्धित विषय की और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

शुभकामनाओं के साथ

इकाई 9 समास प्रकरण – भाग 1

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- समास की परिभाषा के बारे में जानेंगें।
- समास के भेदों के बारे में जान पाएँगे।
- व्याकरणशास्त्र में प्रसिद्ध पाँच वृत्तियों में एक प्रकार समास का है।
- वृत्ति का स्वरूप, विग्रह वाक्यादि का निर्वचन भी ज्ञात होगा।
- किसी भी विशेष संज्ञा से विनिर्मुक्त केवल समास का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।
- अव्ययीभाव प्रकरण के सूत्रों को विस्तार से सोदाहरण विवेचन के साथ पढ़ेंगे।
- अव्ययीभाव समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई में आपको समास प्रकरण के बारे में अध्ययन करना है। इस इकाई में सर्वप्रथम आपको पाठ के आरम्भ में समास के बारे में बताया जाएगा। उसके बाद समास के भेदों का विवेचन संज्ञा निर्देश के साथ संक्षेप में किया जाएगा। विभागशः प्रत्येक विशेष संज्ञा से संज्ञित समास तथा उसका विधान करने में सहायक सूत्रों का विवेचन अग्रिम पाठों में विस्तार से किया जाएगा। फलतः प्रस्तुत पाठ में आप केवलसमास (जो कि तत्पुरुष आदि संज्ञाओं से बहिर्भूत है) तथा अव्ययीभाव समास के बारे में अध्ययन करेंगें। साथ ही केवलसमास तथा अव्ययीभाव समास से सम्बन्धित उदाहरणों का विवेचन भी रूप साधन प्रक्रिया के माध्यम से आप कर पाएँगें।

9.2 समास तथा उसके भेद

समसनं समासः ऐसी परिभाषा लघुसिद्धान्तकौमुदी में दी गई है। सम् –उपसर्गपूर्वक असुँ क्षेपणे धातु से भाव में घञ् (अ) प्रत्यय कर घञ् के ञित्त्व के कारण "अत उपधायाः" से उपधावृद्धि करने पर 'समास' शब्द निष्पन्न होता है। संक्षेप, संक्षिप्तीकरण या मिलाने को समास कहते हैं। यह शब्द व्याकरण में योगरूढ या पारिभाषिक माना गया है। अतः प्रत्येक संक्षेप को समास नहीं कहते, अपितु जब दो या दो से अधिक पद मिल कर एक पद हो जाते हैं तो उसे समास कहते हैं। समास हो जाने पर उन समस्यमान पदों की प्रायः अपनी–अपनी विभक्तियां लुप्त हो जाती हैं (परन्तु उन का अर्थ तो रहता ही है)। पुनः नये सिरे से समास को एक शब्द या प्रातिपदिक मान कर नई विभक्ति आती है। तब वह एक प्रकार से नया पद बन जाता है। स्वरप्रक्रिया में तब उसे एकपद समझ कर ही स्वर लगाया जाता है। समास का उदाहरण यथा – गङ्गायाः जलम् = गङ्गाजलम्। यहां 'गङ्गायाः' तथा 'जलम्' इन दो पदों के मिलने से 'गङ्गाजलम्' यह एकपद बन गया है। इसी प्रकार कृष्णं श्रितः – कृष्णश्रितः, हरिणा त्रातः – हरित्रातः, चोराद् भयम् – चोरभयम् इत्यादि स्थलों में समास जानना चाहिये। यह समास पाँच प्रकार का होता है।

1) **विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः प्रथमः** – जब समास तो किया जाता है परन्तु उसकी शास्त्र में अव्ययीभाव, तत्पुरुष आदि की तरह कोई विशेष संज्ञा नहीं की गई होती तो उसे केवलसमास ही कहा जाता है। यह समास "सह सुपा" सूत्र से या इसके योग विभाग द्वारा ही सम्पन्न होता है। यथा – पूर्वं भूतः भूतपूर्वः। यहाँ "सह सुपा" से समास तो हुआ है परन्तु उस का कोई विशेष नाम नहीं रखा गया अतः यह केवलसमास ही कहा जायेगा। इसी समास को प्राचीन परम्परा में सुप्सुपासमास नाम से जाना जाता है। यह नाम इस लिये रखा गया है कि इस में एक सुबन्त दूसरे सुबन्त के साथ विशेषनाम के विना समास को प्राप्त होता है। इस समास के अन्य उदाहरण 'वागर्थाविव' इत्यादि हैं। आगे स्पष्ट किये जायेंगे।

2) **प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः द्वितीयः** – अव्ययीभाव एक अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुसारी संज्ञा है। इस समास में प्रायः पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद अनव्यय, परन्तु समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है। अनव्ययम् अव्ययं भवति – अव्ययीभावः। अव्ययीभावसमास में प्रायः पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है। यथा – हरौ इति अधिहरि (हरि में)। यहाँ 'अधि' यह पूर्वपद है जो अधिकरण का द्योतक है, अतः 'अधिहरि' इस समस्त में भी अधिकरण की प्रधानता है। इसी प्रकार कृष्णस्य समीपम् – उपकृष्णम्, शक्तिमनतिक्रम्य – यथाशक्ति इत्यादि उदाहरण हैं।

   यहाँ अव्ययीभाव की परिभाषा में प्रायेण ऐसा कहा है जिससे ज्ञात होता है कि कहीं कहीं पूर्व पदार्थ की प्रधानता नहीं रहती तथापि अव्ययीभाव समास अधिकार के अन्तर्गत होने से उसे अव्ययीभाव कहा जाता है। जैसे – उन्मत्तगङ्गम्, लोहितगङ्गम् इत्यादि। यहाँ उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन् सः देशः उन्मत्तगङ्गम् ऐसा विग्रह होने से बहुव्रीहि की तरह अन्यपदार्थ की प्रधानता है।

3) **प्रायेण उत्तरपदार्थ प्रधानः तत्पुरुषसमासः तृतीयः। तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः। कर्मधारयभेदो द्विगुः।** "तत्पुरुषः" सूत्र के अधिकार में विहित समास 'तत्पुरुष' कहा जाता है। द्वितीया विभक्त्यन्त से लेकर सप्तमी विभक्त्यन्त तक जिस जिस विभक्त्यन्त का उत्तरपद के साथ समास का विधान किया जाता है वह तत्पुरुषसमास उसी विभक्ति के नाम से व्यवहृत होता है। यथा – 'कष्टं श्रितः कष्टश्रितः' यहाँ द्वितीयातत्पुरुष समास, हरिणा त्रातः हरित्रातः यहाँ तृतीयातत्पुरुषसमास, 'भूताय बलिः भूतबलिः' यहां चतुर्थीतत्पुरुष समास, 'चोराद् भयम् चोरभयम्' यहाँ पञ्चमीतत्पुरुषसमास, 'राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः' षष्ठीतत्पुरुष समास तथा 'अक्षेषु शौण्डः – अक्षशौण्डः' यहां सप्तमीतत्पुरुष समास है। इस समास में उत्तरपद के अर्थ की प्रायः प्रधानता होती है। यथा – पुरुषः – राजपुरुषः, यहां षष्ठीतत्पुरुषसमास में उत्तर पद 'पुरुषः' के अर्थ की ही प्रधानता है। यदि कहें कि 'राजपुरुषमानय' (राजपुरुष को लाओ) तो राजसम्बन्धी पुरुष का ही आनयन क्रिया में अन्वय होगा राजा का नहीं, वह तो केवल पुरुष को ही विशिष्ट करेगा।

तत्पुरुषसमास का ही भेद है – कर्मधारयसमास। तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। जब तत्पुरुषसमास में दोनों पदों का वाच्य एक ही हो अथवा जिन दो पदों के वाच्य का अधिकरण समान हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। यथा –नीलमुत्पलम् – नीलोत्पलम् (नीला कमल) इत्यादि।

इस कर्मधारयसमास में जब पूर्वपद संख्यावाचक होता है तो उसे "संख्यापूर्वो द्विगुः" अर्थात् द्विगुसमास कहते हैं यह कर्मधारय के भेद के रूप में जाना जाता है। यथा – पञ्चानां गवां समाहारः – पञ्चगवम्। अन्य उदाहरण त्रिफला, त्रिलोकी आदि।

यहाँ भी 'प्रायेण' इसलिये कहा है कि कहीं–कहीं इस से विपरीत भी पाया जाता है। यथा मालामतिक्रान्तः – अतिमालः, यहाँ माला यद्यपि उत्तरपद है तथापि इस के अर्थ का प्राधान्य नहीं है, पूर्वपद के अर्थ की ही प्रधानता है। इसी प्रकार अर्धपिप्पली, पूर्वकायः, निष्कौशाम्बिः इत्यादि में भी उत्तरपदार्थ की प्रधानता नहीं है तथापि तत्पुरुष समास है।

4) **प्रायेण अन्यपदार्थ प्रधानः बहुव्रीहिः चतुर्थः। बहुव्रीहिः –समास शेषो बहुव्रीहिः** (965) के अधिकार में जिस समास का विधान किया जाता है उसे बहुव्रीहिसमास कहते हैं। इस समास में समस्यमान पदों से भिन्न तत्सम्बद्ध किसी अन्य पद के अर्थ की ही प्रायः प्रधानता होती है। यथा – पीतम् अम्बरं यस्य स पीताम्बरः (पीले कपड़े हैं जिस के वह, अर्थात् श्रीकृष्ण आदि)। यहां पीत और अम्बर पदों से भिन्न अन्य पद के अर्थ की प्रधानता है। समस्यमान पद उस अन्य पद के केवल विशेषण बन कर रह गये हैं। अत एव कहा भी गया है – सर्वोपसर्जनो बहुव्रीहिः (बहुव्रीहिसमास में सब पद उपसर्जन अर्थात् गौण होते हैं)।

यहाँ भी प्रायेण इस पद का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योकि द्वित्राः इत्यादि समासों का ग्रहण भी बहुव्रीहि में हो जाए। जबकि द्वौ वा त्रयो वा इस तरह का विग्रह होने से यहाँ उभयपदार्थ प्रधान हैं।

5) **प्रायेण उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः।** 'च' के अर्थ (समाहार तथा इतरेतरयोग) में "चार्थे द्वन्द्वः" सूत्र द्वारा द्वन्द्व समास का विधान किया जाता है। द्वन्द्व समास में दोनों (या दो से अधिक सब) पदों के अर्थों की प्रायः प्रधानता होती है। यथा – हरिश्च हरश्च हरिहरौ। यहां दोनों पदों के अर्थों का प्राधान्य होने से क्रिया में दोनों का ही अन्वय होता है।

यहाँ भी लक्षण में प्रायः शब्द का प्रयोग इसलिए किया क्योंकि इतरेतरयोगद्वन्द्व में ही सभी पदार्थों की प्रधानता होती है। जबकि समाहार द्वन्द्व में समाहार (समूह) की। यथा – दन्ताश्च ओष्ठौ च दन्तोष्ठम् (दाँतों और ओठों का समाहार), तो इस प्रकार से आपको ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त जो भी लक्षण समासों के कहे हैं उन सभी में कुछ वैपरीत्य दृष्टिगत होता है और एक समास में किसी दूसरे समास के लक्षण की प्रतीति होती है, इसलिए सभी लक्षणों में प्रायेण/प्रायः ऐसा कह दिया गया।

9.3 समास –"समर्थः पदविधिः" सूत्र से "झयः" सूत्र पर्यन्त

प्रिय छात्रों अब आप यहाँ "समर्थः पदविधिः" सूत्र से लेकर "झयः" सूत्र पर्यन्त आने वालों सूत्रों का अध्ययन क्रमशः करेंगें। जैसा कि प्रस्तावना में हमने आपको बताया कि जो समसनं या संक्षेपीकरण अर्थात् दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एकपद बना देना समास वृत्ति कहलाता है (वृत्ति स्वरूप तथा उसके भेदों का विवेचन आगे इसी पाठ में किया जाएगा)। वृत्ति जो है वह पदसम्बन्धी विधि है और वह समर्थाश्रित होती है। तो पदसम्बन्धी विधि समर्थाश्रित होती है यह बताने वाले सूत्र का विवेचन आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं –

सूत्र – समर्थः पदविधिः 2.1.1

सूत्रवृत्ति – पदसम्बन्धी यो विधिः स समर्थाश्रितो बोध्यः।

सूत्रानुवाद – पदविधि अर्थात् पदसम्बन्धी कार्य (पदों से सम्बन्ध रखने वाला कार्य) समर्थ पदों के आश्रित होता है।

व्याख्या – समर्थः, पदविधिः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। विधीयते इति विधिः = कार्यम्। विपूर्वक डुधाञ् धारण–पोषणयोः धातु से कर्म में उपसर्गे घोः किः सूत्रद्वारा 'कि' (इ) प्रत्यय कर आकार का लोप करने पर 'विधि' शब्द निष्पन्न होता है। विधान किये गये कार्य को विधि कहते हैं। पदानां विधिः – पद विधिः, यहाँ सम्बन्धषष्ठीतत्पुरुषसमासः। 'समर्थः' पद यहाँ 'समर्थाश्रितः' के अर्थ में लाक्षणिक है। पदविधिः = पदों से संबन्ध रखने वाला कार्य (समर्थः) समर्थ पदों के आश्रित होता है। यह एक परिभाषासूत्र है। अतः प्रस्तुत परिभाषा के कारण सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में जहां–कहीं पदसम्बन्धी कार्य कहा जायेगा वह कार्य समर्थ पदों के आश्रय पर ही होगा असमर्थ पदों के नहीं। आकाङ्क्षा आदि के वशात् परस्पर सम्बद्धार्थ होना ही पदों का सामर्थ्य है। समास पदसम्बन्धी विधि (कार्य) है क्योंकि इस में एक सुबन्त का दूसरे सुबन्त के साथ योजन होता है अतः प्रकृत परिभाषा द्वारा यह समास समर्थ पदों के आश्रित होगा। जैसे – राज्ञः पुरुषः –राजपुरुषः (राजा का सेवक)। यहां दोनों पद समर्थ हैं, स्वस्वामिभावसम्बन्ध से परस्पर सम्बद्ध हैं अतः यहां समास हो कर 'राजपुरुषः' ऐसा समस्त रूप बन जाता है। परन्तु 'भार्या राज्ञः पुरुषो देवदत्तस्य' (स्त्री राजा की है,

पुरुष देवदत्त का है) यहां 'राज्ञः' और 'पुरुषः' का समास नहीं होता, कारण कि ये दोनों पद परस्पर निरपेक्ष होने से असमर्थ हैं। राज्ञः का सम्बन्ध भार्या के साथ है, न कि पुरुषः के साथ, एवं पुरुषः का देवदत्तस्य के साथ है न कि राज्ञः के साथ। इसी प्रकार पश्यति कृष्णं श्रितो देवदत्तो गुरुकुलम् यहां पर कृष्णं श्रित में समास नहीं होता। 'वस्त्रम् उपगोः अपत्यं देवदत्तस्य' यहाँ उपगोरपत्यम् में "तस्याऽपत्यम" द्वारा तद्धित अण प्रत्यय न होने से 'औपगवः' नहीं बनता। यहाँ ध्यातव्य है कि तद्धित की उत्पत्ति भी प्रायः सुबन्त से ही होती है अतः तद्धितविधि भी पदविधि ही है।

जैसा कि हमने आपको बताया था कि समर्थ पद समर्थाश्रित में लाक्षणिक है उसके अनुसार जिनमें सामर्थ्य हो उनमें ही पदविधि होती है। तो वह सामर्थ्य भी दो प्रकार का होता है –– व्यपेक्षाभावसामर्थ्य और एकार्थीभावसामर्थ्य। वाक्य में व्यपेक्षाभाव सामर्थ्य होता है क्योंकि इस में पद परस्पर अपेक्षा रखा करते हैं। परन्तु समास में एकार्थीभाव (सभी पदों का मिल कर एक अर्थ को कहना) रूप सामर्थ्य होता है। सम्बद्धार्थकों का जब एकार्थीभाव हो जाता है तो पुनः उस एकार्थीभूत अर्थ में पृथक्–पृथक् विशेषणों का योग नहीं हो पाता। यही कारण है कि एकार्थीभूत हुए राजपुरुषः के 'राज्ञः' अंश के साथ 'ऋद्धस्य' आदि विशेषणों का योग हो कर ऋद्धस्य राजपुरुषः इत्यादि प्रयोग नहीं होते। जैसा कि महाभाष्य में कहा गया है – सविशेषणानां वृत्तिर्न, वृत्तस्य वा विशेषणयोगो न।

अन्य एक बात ध्यान देने योग्य है कि यह समर्थपरिभाषा केवल पदविधि के लिये ही है वर्ण विधि आदि में इसकी प्रवृत्ति नहीं होती। इसलिए "तिष्ठतु दध्यानय तक्रम्" इस वाक्य में यहाँ 'दधि आनय' इन परस्पर निरपेक्ष पदों में "इको यणचि" द्वारा यणसन्धि प्रवर्तति होती है।

सूत्र – प्राक्कडारात् समासः 2.1.3

सूत्रवृत्ति – "कडाराः कर्मधारये" इत्यतः प्राक् समास इत्यधिक्रियते।

सूत्रानुवाद – "कडाराः कर्मधारये" इस सूत्र से पहले समास का अधिकार होता है।

व्याख्या – प्राक्, कडारात्, समासः यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र एक अधिकार सूत्र है। प्राक् यह एक अव्यय पद है। कडारात् पञ्चमी का एकवचन तथा सूत्र की अवधि को दर्शाता है। समासः यह प्रथमान्त है। इस सूत्र का अधिकार "कडाराः कर्मधारये" सूत्र से पूर्व तक होता है। 'कडार' शब्द से "कडाराः कर्मधारये" सूत्र के आद्य अंश का अनुकरण किया गया है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होता है – कडारात् = कडाराः कर्मधारये सूत्र से प्राक् = पूर्व समासः = समास अधिकृत किया जाता है। तात्पर्य यह है कि अष्टाध्यायी में इस प्रस्तुत सूत्र से ले कर "कडाराः कर्मधारये" सूत्र के पूर्व तक समास का विधान किया जायेगा।

एक बिन्दु पर ध्यान देना आवश्यक है कि प्रकृत सूत्र में 'प्राक्' पद की आवृत्ति कर ली जाती है जिसके फलस्वरूप कडाराः कर्मधारये सूत्र से प्राक् (पूर्व) समास संज्ञा करने पर भी किए जा रहे विधान में अव्ययीभावतत्पुरुषादि अन्य संज्ञा का समावेश भी हो जाएगा। जिससे कडाराः कर्मधारये से पूर्व समास–सामान्य संज्ञा को प्राप्त होता हुआ

कार्य अव्ययीभावादिविशेष संज्ञा को भी प्राप्त करेगा। अर्थात् संज्ञाद्वय समावेश इस अधिकार में होगा।

सूत्र – सह सुपा 2.1.4

सूत्रवृत्ति – सुप् सुपा सह वा समस्यते। समासत्वात् प्रातिपदिकन्वेन सुपो लुक्।

सूत्रानुवाद – सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।

व्याख्या – सुप्, सुपा, यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र समास विधायक सूत्र है। इसमें "सुबान्मन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे" सूत्र से सुप् पद की तथा "प्राक्कडारात् समासः" सूत्र से समास पद की अनुवृत्ति की जाती है। सुप् जो कि एकवचनान्त है, से सुबन्त का ग्रहण किया जाता है। यह ग्रहण 'प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः' इस परिभाषा से होता है क्योंकि सुप् प्रत्यय का स्वरूप है। जहाँ प्रत्यय का ग्रहण किया हो वहाँ प्रत्ययान्त का ग्रहण किया जाए ऐसा परिभाषार्थ है। इसी प्रकार सुपा जो कि तृतीयान्त है, से सुबन्तेन ऐसा अर्थ होगा। तो इस प्रकार से पूर्ण सूत्रार्थ फलित होगा – सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे सुबन्त 'राज्ञः' का सुबन्त 'पुरुष' के साथ समास होने पर राजपुरुष बनता है। तो यहाँ जो राजन् शब्द का षष्ठ्यन्त राज्ञः है इसकी षष्ठी कहाँ कैसे लुप्त हुई इस जिज्ञासा के शमन के लिए ग्रन्थकार ने लिखा – समासत्वात् प्रातिपदिकेन सुपो लुक्। इसका अर्थ यह है कि समास संज्ञा होने पर समास की "कृत्तद्धितसमासाश्च" इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" सूत्र से सुप् विभक्ति का लुक् होता है। यह पाठ के अन्त में रूप साधन प्रकिया में और अधिक स्पष्ट हो जाएगा। जैसा कि पाठ के आरम्भ में हमने बताया था कि समास एक वृत्ति है तो अब ग्रन्थोक्त क्रम से वृत्ति का स्वरूप बताया जाएगा साथ ही विग्रह वाक्य क्या होता है ? कितने प्रकार का होता है ? इत्यादि भी स्पष्ट किया जाएगा क्योंकि रूपसाधन प्रक्रिया हेतु इनका ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है।

वृत्ति का स्वरूप – परार्थाभिधानं वृत्तिः। परार्थ = दूसरे अर्थ का, अभिधान = कहना (बोध कराना), ही वृत्ति है अर्थात् परार्थ के बोधन कराने को 'वृत्ति' कहा जाता है। प्रत्यय अथवा अन्य पद को साथ लेकर जो विशिष्ट अर्थ प्रतीत हुआ करता है, उसे 'परार्थ' कहते है। वृत्ति से इसी 'परार्थ' का बोध हुआ करता है।

वृत्ति के भेद – कृत्तद्धितसमासैकशेषसनाद्यन्तधातुरूपाः पञ्चवृत्तयः। अर्थात् कृत्, तद्धित, समास, एकशेष तथा सनाद्यन्तधातुरूप ये पाँच वृत्तियाँ होती हैं। 'कृत्' से तात्पर्य कृत् प्रत्यय है जिनका विवेचन 'कृदन्त' प्रकरण में किया गया हैं। तद्धित से तात्पर्य तद्धित प्रत्यय है जिनका विवेचन तद्धित प्रकरणों में किया गया है। 'समास' तथा 'एकशेष' वर्तमान प्रसङ्ग में आपके पाठ्यांशमें यहाँ बतलाये ही जा रहे हैं तथा सनाद्यन्त धातुरूप वृत्ति से तात्पर्य ण्यन्त, सन्नन्त, नामधातु आदि प्रक्रियाओं से है जिनका विवेचन उन उन सम्बन्धित प्रकरणों में किया गया है। इस वृत्ति के कार्य हैं – सन, क्यच्, काम्यच् आदि प्रत्यय।

विग्रहवाक्य की परिभाषा व भेद – वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः। वृत्ति के अर्थ का ज्ञान कराने वाले वाक्य को 'विग्रह' कहा जाता है। जैसे राजपुरुषः यह समासवृत्ति है।

इसके अर्थ की प्रतीति 'राज्ञः पुरुषः' इस वाक्य द्वारा होती है। अतः इसी का नाम विग्रह है। स च लौकिकोऽलौकिकश्चेति द्विधा। वह लौकिक और अलौकिक भेद से दो प्रकार का है। (1) लौकिक विग्रह – जिसका लोक में प्रयोग किया जाता है उसे लौकिक कहा जाता है। जैसे – राजपुरुषः का राज्ञः पुरुषः यह लौकिक विग्रह है। (2) अलौकिक विग्रह – जिसका लोक में प्रयोग नहीं होता उसे अलौकिक विग्रह कहा जाता है। जैसे – राजपुरुष का 'राजन्. ङस्, पुरुष. सु' यह अलौकिक विग्रह है।

उदाहरण – भूतपूर्वः– "पूर्वं भूतः" इस लौकिक एवं "पूर्व अम् भूत सु" इस अलौकिक विग्रह में "सुप् सुपा" सूत्र से सुबन्त 'पूर्व' का 'भूतः' इस सुबन्त के साथ समास हो जाने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा हो जाने पर "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" सूत्र से सुप् विभक्ति 'अम्' और 'सु' का लोप होकर 'पूर्व भूत' रूप बन जाने पर "भूतपूर्वे चरट्" इस सूत्र के निर्देश से 'भूत'शब्द के पूर्व निपात हो जाने पर 'भूतपूर्व' प्रातिपदिक से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय करने पर भूतपूर्वः रूप बनता है।

वार्तिक –इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च । (वार्तिक)

वृत्ति – सुप् इवेन सह समस्यते समासावयव–विभक्तेरलोपश्च भवति।

अनुवाद – सुबन्त का इव अव्यय के साथ समास होता है, परन्तु समासावयव विभक्ति का लोप नहीं होता।

व्याख्या – इवेन, समासः, विभक्त्यलोपः, च यह पदच्छेद है। इस प्रकार चतुष्पदात्मक वार्तिक है। इस वार्तिक में भी "सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे" सूत्र से 'सुप्' की पूर्ववत् अनुवृत्ति होती है। तो इसका अर्थ होता है – इव इस अव्यय पद के साथ 'सुबन्त' का समास होता है और विभक्ति का लोप नहीं होता है।

उदाहरण – वागर्थाविव – वागर्थौ इव इस लौकिक विग्रह एवं वागर्थ औ+इव इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत वार्तिक से 'इव' के साथ वागर्थौ इस सुबन्त का समास होने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" से समास की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" से विभक्ति का लोप प्राप्त होता है उसका इसी वार्तिकांश 'विभक्त्यलोपश्च' से निषेध करने पर वागर्थौ+इव स्थिति में औ के स्थान पर 'आव्' आदेश होकर 'वागर्थ् आव् इव' = 'वागर्थाविव' सिद्ध होता है।

इस प्रकार केवलसमास प्रकरण के समाप्त होने पर अव्ययीभाव प्रकरण का आरम्भ अग्रिम सूत्र से होता है।

सूत्र – अव्ययीभावः 2.1.5

सूत्रवृत्ति – अधिकारोऽयं प्राक् तत्पुरुषात्।

सूत्रानुवाद – यह अधिकार (सूत्र) है, इसका अधिकार यहाँ से "तत्पुरुषः" सूत्र से पूर्व तक होगा।

व्याख्या – अव्ययीभावः यह एकपदात्मक सूत्र है। यह अधिकार सूत्र है अतः "तत्पुरुषः" सूत्र से पूर्व सूत्र तक जो भी समास विधान किया जाएगा वहाँ इसका अधिकार रहेगा और उसकी समास के साथ साथ अव्ययीभावसंज्ञा भी होगी।

सूत्र – अव्ययं विभक्ति–समीप–समृद्धि–व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति–शब्दप्रादुर्भाव–पश्चाद्–यथाऽऽनुपूर्व्य–यौगपद्य–सादृश्य–सम्पत्ति–साकल्याऽन्तवचनेषु। 2.1.6

सूत्रवृत्ति – विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह नित्यं समस्यते। प्रायेणाऽविग्रहो नित्यसमासः, प्रायेणाऽस्वपदविग्रहो वा।

सूत्रानुवाद – विभक्त्यर्थादि में विद्यमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। प्रायः नित्य समास का अविग्रह (जिसका लौकिक विग्रह न कहा जा सके) अथवा अस्वपदविग्रह (जिसका समस्यमान पदों से भिन्न पदों से लौकिक विग्रह दर्शाया जाए) होता है।

व्याख्या – अव्ययम्, विभक्तिसमीप.....वचनेषु, यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक विधि सूत्र है। यहाँ "सुबान्मन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे" से सुप् तथा "समर्थः पदविधिः" समर्थ पद की अनुवृत्ति होती है जिसका तृतीयान्ततया विभक्ति विपरिणाम करके "समर्थेन" कर दिया जाता है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होता है – 1. विभक्ति, 2. समीप, 3. समद्धि (ऋद्धि का आधिक्य), 4. व्यृद्धि (ऋद्धि का अभाव), 5. अर्थाभाव (वस्तु का अभाव), 6. अत्यय (नष्ट होना, अतीत होना, गुजर जाना), 7. असम्प्रति (अब युक्त (उचित) न होना), 8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द की प्रकाशता वा प्रसिद्धि), 9. पश्चात् (पीछे), 10. यथा (योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य), 11. आनुपूर्व्य (क्रमानुसार, क्रमशः), 12. यौगपद्य (एक साथ होना), 13. सादृश्य (सदृश), 14. सम्पत्ति (अनुरूप आत्मभाव), 15. साकल्य (सम्पूर्णता), और 16. अन्त (समाप्ति) इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय है उसका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है। इस समास में विकल्प नहीं कहा गया अतः यह नित्यसमास है।

विभक्त्यर्थ का उदाहरण – अधिहरि – हरौ इति इस अस्वपदविग्रह में हरि ङि+अधि इस अलौकिकविग्रह में अधिकरणरूप विभक्त्यर्थ में विद्यमान अव्यय अधि का हरि ङि इस सुबन्त के साथ "अव्ययं विभक्ति...." इत्यादि सूत्र से समास करने पर प्रश्न होता है कि हरि ङि+अधि इस अवस्था में किस पद को पूर्व रखा जाए तो इसके लिए अग्रिम सूत्र प्रस्तुत है –

सूत्र – प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् । 1.2.43

वृत्ति – समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात्।

अनुवाद – समासशास्त्रे = समास विधायक सूत्रों में प्रथमानिर्दिष्टम् = प्रथमाविभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती हैं।

व्याख्या – प्रथमानिर्दिष्टम्, समासे, उपसर्जनम् यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। समासे पद से समासशास्त्र अर्थात् समास विधायक सूत्र का ग्रहण किया जाता है।

यदि समासे पद को यथाश्रुत मान लिया जाए तो समास में जो प्रथमाविभक्त्यन्त है उसकी उपसर्जन संज्ञा हो जाएगी। जैसे कृष्णं श्रितः इस विग्रह में श्रित पद प्रथमान्त श्रूयमाण है, तो इसकी उपसर्जनसंज्ञा होने पर पूर्वनिपात होने लग जाएगा और कृष्णश्रित यह अभीष्टरूप सिद्ध नहीं होगा। अतः समासे पद से समासविधायक सूत्र ग्रहण करने पर कृष्णं श्रित इस विग्रह में समास के विधायक सूत्र में "द्वितीया श्रितातीतपतितगत्यस्तप्राप्तापन्नैः" द्वितीया पद प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट है। श्रितादि तो तृतीयान्त है। अतः समास विधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट की ही उपसर्जनसंज्ञा होती है। प्रस्तुत उदाहरण में समास विधान करने वाले सूत्र 'अव्ययं विभक्ति' में 'अव्ययम्' पद प्रथमान्त है। अतः प्रकृत सूत्र से यह 'उपसर्जन' संज्ञक होगा। 'हरि ङि: अधि' में 'अधि' यह अव्यय है। अतः यह उपसर्जन हुआ। तो इस प्रकार अधि की उपसर्जन संज्ञा हो जाने पर उसके प्रयोजनीभूत कार्य को बताने हेतु अग्रिमसूत्र –

सूत्र –उपसर्जनं पूर्वम् । 2.2.30

वृत्ति – समासे उपसर्जनं प्राक् प्रयोज्यम्। इत्यधेः प्राक् प्रयोगः। (सुपो लुक, एकदेशविकृतस्यानन्यत्वात्प्रातिपदिकसंज्ञायां स्वाद्युत्पत्तिः, 'अव्ययीभावश्च' इत्यव्ययत्वात् सुपो लुक–अधिहरि।)

अनुवाद – समास में जिसकी उपसर्जन संज्ञा की है उसका पूर्वप्रयोग होता है। जैसे– हरि ङि अधि में अधि उपसर्जन संज्ञक है। अतः प्रकृत सूत्र से उसका प्रयोग पहले होगा। तब स्थिति होगी– अधि हरि ङि

व्याख्या – उपसर्जनम् पूर्वम् यह द्विपदात्मक सूत्र है। उपसर्जनम् पूर्वम् इति द्वितीयैकवचनान्तं क्रियाविशेषणम्। समासे सप्तमी एकवचनान्त का प्राक्कडारात्समासः से अधिकृत 'समासः' पद को सप्तम्यन्ततया विपरिणत कर लिया जाता है। 'प्रयोज्यम्' का अध्याहार करते हैं। तो इस प्रकार समुदित सूत्रार्थ फलित होता है – समासे = समास में उपसर्जनसंज्ञक को पूर्व अथाव पहले प्रयुक्त करना चाहिये। समास में किसी को पहले प्रयुक्त करना पूर्वनिपात तथा बाद में प्रयुक्त करना परनिपात कहा जाता है। प्रस्तुत सूत्र उपसर्जनसंज्ञक के पूर्वनिपात का प्रतिपादन करता है।

तो इस प्रकार अधि शब्द का पूर्वनिपात करने पर अधि हरि ङि इस अवस्था में "कृत्तद्धितसमासाश्च" से सम्पूर्ण समास–समुदाय की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" द्वारा प्रातिपदिक के अवयव सुप् (ङि विभक्ति) का लुक करने से अधिहरि बन जाता है। इसके बाद एकदेशविकृतमनन्यवत् न्यायानुसार इस की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके पुनः सुबुत्पत्ति करके प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके उसका "अव्ययीभावश्च" इस सूत्र से अव्ययसंज्ञा करने पर "अव्ययादाप्सुपः" से सुब्लुक् करने पर अधिहरि रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – अव्ययीभावश्च । 2.4.18

वृत्ति – अयं नपुंसकं स्यात्। गाः पातीति गोपाः तस्मिन् अधिगोपम्।

अनुवाद – अव्ययीभावसमास नपुंसक हो।

व्याख्या – अव्ययीभावः, च यह पदच्छेद है। "स नपुंसकम्" सूत्र से 'नपुंसक' पद की अनुवृत्ति कर ली जाती है। 'च' शब्द जो कि अव्यय है, समुच्चयार्थ प्रयुक्त किया गया है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होगा कि अव्ययीभावसमास भी नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होगा।

सूत्र –नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः । 2.4.83

वृत्ति – अदन्तात् अव्ययीभावात् सुपो न लुक्, तस्य पञ्चमीं विना 'अम्' आदेशः स्यात्। गाः पातीति गोपास्तस्मिन् अधिगोपम्।

अनुवाद – अदन्त अव्ययीभावसमास से परे सुप् का लुक् न हो, परन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुप् प्रत्ययों के स्थान पर अम् आदेश हो।

व्याख्या – न, अव्ययीभावात्, अतः, अम्, तु, अपञ्चम्याः यह पदच्छेद है। न एक अव्ययपद है। 'अव्ययीभावात्' तथा 'अतः' पञ्चमी विभक्त्यन्त एकवचनान्त हैं। 'अतः' पद अव्ययीभावात् का विशेषण है जिससे तदन्तविधि होकर अदन्तात् अव्ययीभावात् ऐसा अर्थ होता है। इस सूत्र में "ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुक्" सूत्र से लुक् की तथा "अव्ययादाप्सुपः" सूत्र से स्थानषष्ठ्यन्त 'सुपः' पद की अनुवृत्ति होती है जिसका अर्थ है सुपों के स्थान पर। अपञ्चम्याः का अर्थ पञ्चमी को छोड़कर है, तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्रार्थ यह फलित होता है कि – अदन्त अव्ययीभावसमास से परे सुप् का लुक् न हो, परन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुप् प्रत्ययों के स्थान पर अम् आदेश हो। इस सूत्र में जो 'तु' अव्ययपद है इसके ग्रहण से विलक्षण अर्थ यह होता है कि पञ्चमी का न तो लुक् होता है न ही अमादेश। यदि सूत्र में तु का ग्रहण नहीं किया जाता तो सूत्र का अर्थ होता कि पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुपों का लुक् हो तथा उनके स्थान पर अमादेश हो, इस प्रकार पञ्चमी को अम् आदेश तो नहीं होता लेकिन "अव्ययादाप्सुपः" सुपः से पञ्चमी का लुक् हो जाता जो कि अनिष्ट है।

उदाहरण – अधिगोपम् – गाः पाति इति गोपाः (गोपा के रूप विश्वपा की तरह) तस्मिन् गोपि इति इस अस्वपदविग्रह में गोपा ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में अधिकरणरूप विभक्त्यर्थ में विद्यमान अव्यय अधि का गोपा ङि इस सुबन्त के साथ "अव्ययं विभक्ति...." इत्यादि सूत्र से समास करने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" इस सूत्र से समाससंज्ञा करने पर "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर गोपा अधि इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा तथा "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से 'अधि' का पूर्वनिपात करके अधि गोपा इस अवस्था में समास समुदाय की "अव्ययीभावश्च" सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हो जाने पर "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य" सूत्र से ह्रस्व होने पर अधिगोप इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करने पर अधिगोप सु इस अवस्था में "अव्ययादाप्सुपः" सूत्र से सुप् का लुक् प्राप्त होने पर "नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः" इस सूत्र से सु को अम् आदेश करने पर अधिगोप अम् इस दशा में "अमिपूर्वः" से पूर्वरूप करने पर अधिगोपम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् । 2.4.84

वृत्ति – अदन्तात् अव्ययीभावात् तृतीया–सप्तम्योर्बहुलम् 'अम्' भावः स्यात्। कृष्णस्य समीपम् उपकृष्णम्। उपकृष्णेन। उपकृष्णे।

("अव्ययं विभक्ति..." सूत्र के अन्य उदाहरण – मद्राणां समृद्धिः – सुमद्रम्। यवनानां व्यृद्धिः – दुर्यवनम्। मक्षिकाणामभावः – निर्मक्षिकम्। हिमस्यात्ययः – अतिहिमम्। निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति – अतिनिद्रम्। हरिशब्दस्य प्रकाशः – इतिहरि। विष्णोः पश्चाद् – अनुविष्णु। योग्यता–वीप्सा–पदार्थाऽनतिवृत्ति–सादृश्यानि यथार्थाः। रूपस्य योग्यम् – अनुरूपम्, अर्थमर्थं प्रति – प्रत्यर्थम्। शक्तिमनतिक्रम्य – यथाशक्ति।)

अनुवाद – अदन्त अव्ययीभावसमास से परे तृतीया और सप्तमी के स्थान पर बहुल रूप से अम् आदेश हो।

व्याख्या – इस सूत्र में तृतीयासप्तम्योः, बहुलम् यह दो पद हैं। अव्ययीभावात्, अतः, अम्, यह तीन पद पूर्व सूत्र से अनुवृत्त हैं। पूर्ववत् अतः अव्ययीभावात् का विशेषण है, तृतीयासप्तम्योः में इतरेतरयोगद्वन्द्व समास और स्थानषष्ठी द्विवचनान्त है। तृतीया और सप्तमी के स्थान पर ऐसा अर्थ लब्ध होता है। अम् आदेशात्मक पद है। तो इस प्रकार सूत्र का अर्थ हुआ कि अदन्त अव्ययीभाव समास से परे तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर अम् भाव बहुलप्रकार से होता है। बहुल का अर्थ शब्दावली में अधिक स्पष्ट करेंगें। इस सूत्र में तो एक प्रकार से विकल्प अर्थ है। इस सूत्र के द्वारा होने वाला अम् भाव विकल्प से मलतब तृतीया और सप्तमी में दो दो रूप बनेंगें, एक अम् भाव से युक्त दूसरा तृतीया तथा सप्तम्यन्त। यह कह सकते है कि पूर्व सूत्र से जहाँ नित्य अम्भाव प्राप्त था उसको बाधकर इस सूत्र से विकल्प से अम् भाव होता है।

उदाहरण (यह अव्ययं विभक्तिसमीप... इत्यादि सूत्र का समीपार्थक अव्यय के समास का उदाहरण है) –**उपकृष्णम् –उपकृष्णेन** – कृष्णस्य समीपम् इस अस्वपदविग्रह में कृष्ण ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में समीपार्थक अव्यय उप का कृष्ण ङस् इस सुबन्त के साथ "अव्ययं विभक्ति...." इत्यादि सूत्र से समास करने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" इस सूत्र से समाससंज्ञा करने पर "सुपो धातुप्रातिपदिकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर कृष्ण उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा तथा "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से 'उप' का पूर्वनिपात करके उपकृष्ण इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके तृतीया एकवचन विवक्षा में टा–प्रत्यय करने पर उपकृष्ण टा इस अवस्था में "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" इस सूत्र से टा को नित्य अम् आदेश प्राप्त होने पर "तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्" सूत्र से बहुलम् अम्भाव करने पर उपकृष्ण अम् इस दशा में "अमिपूर्वः" से पूर्वरूप करने पर उपकृष्णम् तथा अम्भाव के अभाव में टा के स्थान पर इन आदेश आदि विभक्तिकार्य करके उपकृष्णेन रूप सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार से सप्तमी में भी अम्भावयुक्त एक रूप तथा उसके अभाव में सप्तमीघटित होकर उपकृष्णे यह रूप बनेंगें।

ध्यातव्य – नित्य अम्भाव, बहुलम् अम्भाव के पञ्चमी को छोड़कर प्रवृत्त होने के कारण तृतीया विभक्ति के प्रत्येक वचन में दो रूप (उपकृष्णम्–उपकृष्णात्, उपकृष्णम्–उपकृषणाभ्याम्, उपकृष्णम्–उपकृष्णैः), सप्तमी के प्रत्येक वचन में दो रूप (उपकृष्णम्–उपकृष्णे, उपकृष्णम्–उपकृषणयोः, उपकृष्णम्–उपकृष्णेषु) तथा पञ्चमी में तो विभक्ति विशिष्टरूप उपकृष्णाा्, उपकृषणाभ्याम्, उपकृष्णेभ्यः रूप बनेंगें।

सूत्र – अव्ययीभावे चाऽकाले । 6.3.81

वृत्ति – सहस्य सः स्यादव्ययीभावे न तु काले। हरेः सादृश्यं सहरि। ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण इति अनुज्येष्ठम्। चक्रेण युगपत् सचक्रम्। सदृशः सख्या ससखि। क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम्। तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम् अत्ति। अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते साग्नि।

अनुवाद – अव्ययीभावसमास में 'सह' के स्थान पर 'स' आदेश हो। परन्तु कालविशेषवाचक शब्द यदि उत्तरपद में हो तो यह आदेश न हो।

व्याख्या – अव्ययीभावे, च, अकाले यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में "सहस्य स संज्ञायाम्" सूत्र से सहस्य पद की अनुवृत्ति होती है। और "अलुगुत्तरपदे" सूत्र से उत्तरपदे का अधिकार है। अकाले में नञ् तत्पुरुषसमास है – न काले अकाले = कालवाचकभिन्न पदे ऐसा अर्थ होता है। यहाँ काल शब्द से काल शब्द का ग्रहण अभिप्रेत नहीं है, अपितु काल विशेषवाची (पूर्वाह्न, अपराह्न इत्यादि) शब्दों का अभिप्रैत है। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्रार्थ – अव्ययीभावसमास में 'सह'शब्द के स्थान पर 'स' आदेश होता है परन्तु अकाले = कालविशेषवाची उत्तरपद के परे रहते नहीं। यहाँ 'स' आदेश अनेकाल् (स अ) है अतः "अनेकाल्शित्सर्वस्य" सूत्र के कारण सम्पूर्ण सह के स्थान पर होता है।

उदाहरण –सहरि – हरेः सादृश्यम् इस अस्वपदविग्रह विग्रह में हरि ङस् सह इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप...." इत्यादि सूत्र से सादृश्यार्थक अव्यय सह का हरेः इस सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास–प्रातिपदिकसंज्ञा–सुब्लुक्–पूर्वनिपातादि प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद सहहरि इस अवस्था में "अव्ययीभावे चाऽकाले" इस सूत्र से सह के स्थान पर स–आदेश करने पर सहरि बनने के बाद पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा विभक्त्यादिकार्य करके सहरि रूप निष्पन्न होता है।

सूत्र – नदीभिश्च । 2.1.20

वृत्ति – नदीभिः सह संख्या समस्यते। वार्तिकम् –समाहारे चायमिष्यते। पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्।

अनुवाद – संख्यावाची सुबन्त नदीवाचक सुबन्तों के साथ अव्ययीभावसमास को प्राप्त करता है। वार्तिकार्थ – यह समाहार अर्थ में ही इष्ट है।

व्याख्या – नदीभिः च यह पदच्छेद है। इस सूत्र में "संख्या वंश्येन" सूत्र से 'संख्या' पद की तथा "सह सुपा" सूत्र से 'सह' पद की अनुवृत्ति होती है। "प्राक्कडारात् समासः" "अव्ययीभावः" इनका अधिकार पूर्ववत् है ही। यहाँ नदीभिः में बहुवचन ग्रहण करने से नदीसंज्ञक (गौरी इत्यादि) शब्दों का तथा नदी शब्द का ग्रहण अभिप्रेत नहीं है, अपितु नद्यर्थकों का ग्रहण होता है। नद्यर्थकों से नदीविशेष वाचकों गङ्गा, यमुना इत्यादि तथा स्वयं नदी शब्द का ग्रहण हो जाता है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित होता है कि – संख्यावाची सुबन्त का नद्यर्थक सुबन्तों के साथ जो अव्ययीभाव समास होता है वह पूर्वोक्त वार्तिक (समाहारे चायमिष्यते) के नियम से समाहारार्थ में होता है।

यहाँ ध्यातव्य है कि समाहार अर्थ में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" "संख्यापूर्वो द्विगुः" इन सूत्रों से विहित द्विगु समास का यह अपवाद है।

उदाहरण – पञ्चगङ्गम् – पञ्चानां गङ्गानां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गङ्गा आम् इस अलौकिक विग्रह में "नदीभिश्च" इस सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर पञ्चन् गङ्गा इस अवस्था में यहाँ समासविधायकसूत्र "नदीभिश्च" सूत्र में अनुवर्तित संख्या पद प्रथमान्त होने के कारण "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से संख्यावाचक पञ्चन् शब्द की उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर पञ्चन् गङ्गा इस अवस्था में "न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य" सूत्र से पञ्चन् के नकार का लोप करने पर पञ्च गङ्गा इस अवस्था में "अव्ययीभावश्च" सूत्र से अव्ययीभावसमास को नपुंसक विधान करके "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदकस्य" सूत्र से ह्रस्व करके पञ्च गङ्ग इस अवस्था में पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् पञ्चगङ्गम् सिद्ध होता है।

सूत्र – तद्धिताः । 4.1.76

वृत्ति – आपञ्चमसमाप्तेरधिकारोऽयम्।

अनुवाद – इस सूत्र से लेकर अष्टाध्ययी के पञ्चमाध्याय समाप्तिपर्यन्त इसका अधिकार है।

व्याख्या – यह एकापदात्मक सूत्र अधिकार सूत्र है। इस सूत्र के उपदेश (जहाँ यह पढ़ा गया है) से लेकर अष्टाध्यायी के पञ्चमाध्याय की समाप्तिपर्यन्त इस सूत्र का अधिकार क्षेत्र है। अर्थात् चतुर्थाध्याय में पहले पाद के 77वें सूत्र से ही इसका अधिकार शुरु हो जाता है। इसका प्रयोजन समासान्त प्रत्ययों की भी तद्धितसंज्ञा करना है। जिससे कि "नस्तद्धिते" से टिलोप, "यस्येति च" से भसंज्ञक इवर्ण–अवर्ण का तद्धित प्रत्यय परे लोपादिकार्य समास में भी किए जा सके।

सूत्र –अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः । 5.4.107

वृत्ति – शरदादिभ्यष्टच् स्यात् समासान्तोऽव्ययीभावे। शरदः समीपम् उपशरदम्। प्रतिविपाशम्। गणसूत्रम् "जराया जरस्"। उपजरसमित्यादि।

अनुवाद – अव्ययीभावसमास में शरद् आदि प्रातिपदिकों से परे तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय हो तथा वह समासान्त (समास का अन्तावयव हो)। यहाँ "जरायाः जरस्" इस गणसूत्र से जरा शब्द के स्थान पर जरस् आदेश हो।

व्याख्या – यह एकापदात्मक सूत्र अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में "राजाहस्सखिभ्यष्टच्" से टच् की अनुवृत्ति होती है, तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च तथा ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन सभी सूत्रों का अधिकार भी है। शरत्प्रभृति शब्द से शरद् शब्द से लेकर शरदादिगण में पठित सभी शब्दों का ग्रहण है। शरत्प्रभृतिभ्यः में पञ्चमी होने से शरद् इत्यादि प्रातिपदिक के पर में ऐसा अर्थ लब्ध होता है। तो सम्पूर्ण सूत्रार्थ इस प्रकार होगा कि अव्ययीभाव समास में शरद् आदि प्रातिपदिकों के पर में समासान्त टच् प्रत्यय होगा जो कि समास समुदाय का अन्तावयव होगा। 'टच्' में टकार व चकार की इत्संज्ञा हो जाने से 'अ' ही शेष रहता है। इस प्रकार शरद् इत्यादि से युक्त हलन्त

समाससमुदाय भी अदन्त हो जाएगा। फलस्वरूप नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः तथा तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् सूत्रों की प्रवृत्ति भी होगी।

उदाहरण – उपशरदम् – शरदः समीपम् इस अस्वपदविग्रह में शरद् ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर शरद् उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर उपशरद् इस अवस्था में "अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः" सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय अनुबन्ध लोप होने पर उप शरद् अ इस अवस्था में सभी को मिलाकर समुदाय के अदन्त हो जाने पर उपशरद शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् उपशरदम् सिद्ध होता है।

सूत्र – अनश्च । 5.4.108

वृत्ति – अन्नन्ताद् अव्ययीभावात् टच् स्यात्।

अनुवाद –अन्नन्त (अन् जिसके अन्त में हो) अव्ययीभावसमास से परे तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय हो तथा वह समासान्त (समास का अन्तावयव हो)।

व्याख्या – अनः, च यह पदच्छेद है। इस सूत्र में भी "राजाहस्सखिभ्यष्टच्" से टच् की अनुवृत्ति होती है, तथा पूर्वसूत्र से अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः से अव्ययीभावे की अनुवृत्ति होती है जिसका पञ्चम्यन्त में विभक्तिविपरिणाम हो जाता है। तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन सभी सूत्रों का अधिकार भी है। अनः यह पञ्चमी एकवचनान्त है तथा अव्ययीभाव का विशेषण है जिससे तदन्तविधि होकर सम्पूर्ण सूत्रार्थ अनन्त अव्ययीभाव से पर में टच् समासान्त हो ऐसा अर्थ लब्ध होता है।

सूत्र – नस्तद्धिते । 6.4.144

वृत्ति –नान्तस्य भस्य टेर्लोपः स्यात् तद्धिते। उपराजम्। अध्यात्मम्।

अनुवाद – नकारान्त भसंज्ञक की टि का लोप होता है तद्धित पर में रहने पर।

व्याख्या – नः, तद्धिते यह पदच्छेद है। इस सूत्र में "भस्य" का अधिकार है। टेः सूत्र से 'टे' की, अल्लोपोऽनः सूत्र से 'लोपः' की अनुवृत्ति दोती है। नः पद षष्ठ्यन्त है जिसका अर्थ है नकार का। भस्य का विशेषण होकर तदन्तविधि होने से नकारान्त भसंज्ञक का तद्धित परे लोप होता है यह अर्थ फलित होता है।

उदाहरण – उपराजम् – राज्ञः समीपम् इस अस्वपदविग्रह में राजन् ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर राजन् उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर उप राजन् इस

अवस्था में "अनश्च" सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय अनुबन्ध लोप होने पर उप राजन् अ इस अवस्था में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिभाग = राजन् का अन् का लोप करने पर उप राज् अ इस अवस्था में सभी को मिलाकर समुदाय के अदन्त हो जाने पर उपराज शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् उपराजम् सिद्ध होता है।

सूत्र – नपुंसकादन्यतरस्याम् । 5.4.109

वृत्ति – अन्नन्तं यत् क्लीबं तदन्तादव्ययीभावात् टच् वा स्यात्। उपचर्मम्, उपचर्म।

अनुवाद – अव्ययीभाव के अन्त में अन्नन्त नपुंसक शब्द होने पर अव्ययीभावसमास से परे तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से हो तथा वह समासान्त (समास का अन्तावयव हो)।

व्याख्या – नपुंसकात्, अन्यतरस्याम् यह पदच्छेद है। अनश्च सूत्र से अनः पञ्चम्यन्त अनुवृत्त होता है एवं "राजाहस्सखिभ्यष्टच्" से टच् की अनुवृत्ति होती है, तथैव पूर्वसूत्र से अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः से अव्ययीभावे की अनुवृत्ति होती है जिसका पञ्चम्यन्त में विभक्तिविपरिणाम हो जाता है। तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन सभी सूत्रों का अधिकार भी है। अनः तथा नपुंसकात् यह पञ्चमी एकवचनान्त हैं। तथा अव्ययीभाव के विशेषण हैं जिससे तदन्तविधि होकर सम्पूर्ण सूत्रार्थ अनन्त अव्ययीभाव के अन्त में नुपंसक शब्द होने पर अव्ययीभाव से पर में टच् समासान्त हो और वह अन्यतरस्याम् ग्रहण से विकल्प से होता है – ऐसा अर्थ लब्ध होता है।

उदाहरण – उपचर्मम् –उपचर्म – चर्मणः समीपम् इस अस्वपदविग्रह में चर्मन् ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर चर्मन् उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर उपचर्मन् इस अवस्था में "अनश्च" सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय प्राप्त होने पर "नपुंसकादन्यतरस्याम्" सूत्र से विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप होने पर उप चर्मन् अ इस अवस्था में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिभाग = चर्मन् का अन् का लोप करने पर उप चर्म अ इस अवस्था में सभी को मिलाकर समुदाय के अदन्त हो जाने पर उपचर्म शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् उपचर्मम् ऐसा प्रथम रूप तथा समासान्त टच् के अभाव में उपचर्मन् इस अवस्था में प्रातिपदिकसंज्ञा, विभक्तिकार्यादि के पश्चात् "न लोप प्रातिपदिकान्तस्य" सूत्र से नकार लोप करने से उपचर्म यह द्वितीय रूप सिद्ध होता है।

सूत्र –झयः । 5.4.111

वृत्ति –झयन्तादव्ययीभावात् टच् वा स्यात्। उपसमिधम्, उपसमित्।

अनुवाद –झयन्त अव्ययीभाव से विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय हो।

व्याख्या –झयः यह एकपदात्मकसूत्र है। झयः पञ्चमी एकवचनान्त है। इस सूत्र में "राजाहस्सखिभ्यष्टच्" से टच् की अनुवृत्ति होती है, तथैव पूर्वसूत्र नपुंसकादन्यतरस्याम् से अन्यतरस्याम् की तथा अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः से अव्ययीभावे की अनुवृत्ति होती है जिसका पञ्चम्यन्त में विभक्तिविपरिणाम हो जाता है। तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन सभी सूत्रों का अधिकार भी है। इस प्रकार सूत्रार्थ होता है –झय प्रत्याहार (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण) जिसके अन्त में हो ऐसे अव्ययीभावसमास से परे तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से हो तथा वह समासान्त (समास का अन्तावयव हो)।

उदाहरण – उपसमिधम् – उपसमित् – समिधः समीपम् इस अस्वपदविग्रह में समिध् ङस्. उप इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर समिध् उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर उप समिध् इस अवस्था में "झयः" सूत्र से विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय अनुबन्ध लोप होने पर उप समिध् अ इस अवस्था में सभी को मिलाकर समुदाय के अदन्त हो जाने पर उपसमिध शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् उपसमिधम् सिद्ध होता है। वैकल्पिक होने से समासान्त टच् के अभाव में उपसमिध् इस अवस्था में प्रातिपदिकसंज्ञा विभक्तिकार्यादि के उपरान्त धकार को जश्त्व–चर्त्व करने पर उपसमित् यह द्वितीय रूप सिद्ध होता है। यहाँ चर्त्व के भी "वाऽवसाने" सूत्र से वैकल्पिक होने के कारण उपसमिद् यह तृतीय रूप भी सिद्ध होता है। इस प्रकार टच् पक्ष में उपसमिधम् तथा टच् अभाव पक्ष में उपसमित्–उपसमिद् यह रूप बनते हैं।

9.4 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

सुमद्रम् – मद्राणां समृद्धिः इस अस्वपद लौकिक विग्रह में मद्र आम् सु इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से समृद्धि के अर्थ में अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर मद्र सु इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर सुमद्र इस अवस्था में सुमद्र शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके सुमद्र सु इस अवस्था में "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् सुमद्रम् सिद्ध होता है।

दुर्यवनम् – यवनानां व्यृद्धिः इस अस्वपद लौकिक विग्रह में यवन आम् दुर् इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से व्यृद्धि के अर्थ में अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर यवन दुर् इस

अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर दुर् यवन इस अवस्था में दुर्यवन शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु–प्रत्यय करके दुर्यवन सु इस अवस्था में "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् दुर्यवनम् सिद्ध होता है।

निर्मक्षिकम् – मक्षिकाणाम् अभावः इस अस्वपद लौकिक विग्रह में मक्षिका आम् निर् इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अभाव के अर्थ में अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर मक्षिका निर् इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर निर् मक्षिका इस अवस्था में "अव्ययीभावश्च" सूत्र से अव्ययीभाव समास को नपुंसक मानकर "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य" सूत्र से निर्मक्षिका के आकार को ह्रस्व करके निर्मक्षिक शब्द हो जाने पर उसकी पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके निर्मक्षिक सु इस अवस्था में "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् निर्मक्षिकम् सिद्ध होता है।

अतिनिद्रम् – निद्रा सम्प्रति न युज्यते इस अस्वपद लौकिक विग्रह में निद्रा सु अति इस अलौकिक विग्रह में असम्प्रति अर्थ में समास होगा तथा निर्मक्षिकम् की तरह प्रक्रिया।

प्रत्यर्थम् – अर्थम् अर्थं प्रति इस अस्वपद लौकिक विग्रह में अर्थ अम् प्रति इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से यथार्थ के वीप्सा अर्थ में अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर अर्थ प्रति इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से प्रति का पूर्वनिपात होने पर प्रति अर्थ इस अवस्था में "इको यणचि" से यणादेश करके प्रत्यर्थ शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके प्रत्यर्थसु इस अवस्था में "नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् प्रत्यर्थम् सिद्ध होता है।

यथाशक्ति – शक्तिम् अनतिक्रम्य इस अस्वपद लौकिक विग्रह में शक्ति अम् यथा इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से पदार्थानतिवृत्ति नामक यथार्थ में अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर शक्तियथा इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर यथा शक्ति इस अवस्था में पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा

एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "अव्ययीभावश्च" सूत्र से अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा कर "अव्ययादाप्सुपः" सूत्र से सु का लोप करके यथाशक्ति सिद्ध होता है।

सचक्रम् – चक्रेण युगपत् इस अस्वपदविग्रह विग्रह में चक्र टा सह इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप...." इत्यादि सूत्र से यौगपद्य अर्थ में विद्यमान अव्यय सह का चक्रेण इस सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास–प्रातिपदिकसंज्ञा–सुब्लुक्–पूर्वनिपातादि प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद सह चक्र इस अवस्था में "अव्ययीभावे चाऽकाले" इस सूत्र से सह के स्थान पर स–आदेश करने पर सचक्र बनने के बाद पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा विभक्त्यादिकार्य सु के स्थान पर अम्–भावादि करके सचक्रम् रूप निष्पन्न होता है।

सक्षत्रम् – क्षत्राणां सम्पत्ति इस अस्वपदविग्रह विग्रह में क्षत्र आम् सह इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप...." इत्यादि सूत्र से सम्पत्ति अर्थ में विद्यमान अव्यय सह का क्षत्राणां इस सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास–प्रातिपदिकसंज्ञा–सुब्लुक्–पूर्वनिपातादि प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद सह़क्षत्र इस अवस्था में "अव्ययीभावे चाऽकाले" इस सूत्र से सह के स्थान पर स–आदेश करने पर सक्षत्र बनने के बाद पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा विभक्त्यादिकार्य सु के स्थान पर अम्–भावादि करके सक्षत्रम् रूप निष्पन्न होता है।

द्वियमुनम् – द्वयोः यमुनयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह में द्वि ओस्, यमुना ओस् इस अलौकिक विग्रह में "नदीभिश्च" इस सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर द्वि यमुना इस अवस्था में यहाँ समासविधायकसूत्र "नदीभिश्च" सूत्र में अनुवर्तित संख्या पद प्रथमान्त होने के कारण "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से संख्यावाचक द्वि शब्द की उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर द्वि यमुना इस अवस्था में "अव्ययीभावश्च" सूत्र से अव्ययीभावसमास को नपुंसक विधान करके "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदकस्य" सूत्र से यमुना के आकार को ह्रस्व करके द्वि यमुन इस अवस्था में पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् द्वियमुनम् सिद्ध होता है।

उपजरसम् – जरायाः समीपम् इस अस्वपदविग्रह में जरा ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में "अव्ययं विभक्तिसमीप......" इत्यादि सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर जरा उप इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र से समासविधायक सूत्र में अव्ययपद के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर उप जरा इस अवस्था में "अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः" सूत्र के अन्तर्गत गणसूत्र "जराया जरस्" से जरा शब्द को जरस् आदेश तथा समासान्त टच् प्रत्यय अनुबन्ध लोप होने पर उप जरस् अ इस अवस्था में सभी को मिलाकर समुदाय के अदन्त हो जाने पर उपजरस शब्द की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु–प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः" सूत्र से सु को अम्–भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् उपजरसम् सिद्ध होता है।

अन्य सभी उदाहरणों की प्रक्रिया भी समान है।

बोध प्रश्न

क) बहुविकल्पीय प्रश्न –

1. सामर्थ्य होता है –

(क) एक प्रकार का (ख) दो प्रकार का

(ग) तीन प्रकार का (घ) चार प्रकार का

2. परार्थाभिधानम् को कहते है –

(क) समास (ख) कृदन्त (ग) वृत्ति (घ) विभक्तिलोप

3. अव्ययीभावः यह अधिकार है –

(क) तत्पुरुष से पूर्व (ख) बहुव्रीहि से पूर्व (ग) द्वन्द्व से पूर्व

(घ) एकशेष से पूर्व तक–

4. समासविधायक सूत्र में जो प्रथमानिर्दिष्ट हो उसकी संज्ञा होती है –

(क) पूर्वनिपात (ख) उपसर्जन (ग) समास (घ) अव्ययीभाव

5. अव्ययीभावे चाऽकाले सूत्र से होता है –

(क) सह को स आदेश (ख) स को सह आदेश

(ग) सह को लोप (घ) स का लोप

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

1. प्रायेण ....ऽव्ययीभावो द्वितीयः।
2. अव्ययं विभक्ति.. साकल्यान्तवचनेषु।
3. नाव्ययीभावादतो........................... ।
4. .... यथार्थाः।
5. तृणमप्यपरित्यज्य .... ।

ग) सही/गलत का चयन करें ।

1. प्रायः उत्तरपदार्थप्रधान अव्ययीभाव होता है। सही/गलत
2. अधिहरि का अस्वपद विग्रह है "हरौ इति"। सही/गलत
3. "नदीभिश्च" सूत्र से विहित समास समाहार में ही इष्ट है। सही/गलत
4. "अनश्च" सूत्र से अन् का लोप होता है। सही/गलत
5. "नस्तद्धिते" सूत्र भसंज्ञक टि का लोप करता है। सही/गलत

अभ्यास प्रश्न

1. भूतपूर्व शब्द का लौकिक और अलौकिकविग्रह वाक्य लिखें।
2. "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" इस सूत्र में 'समासे' शब्द से क्या अभिप्रैत है?
3. "तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्" सूत्र किसका विधान करता है ?
4. समासान्त शब्द का क्या अभिप्राय है ? और यह किसके अवयव होते हैं ?

5. यथार्थों का सोदाहरण उल्लेख करें।

9.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से आपने सर्वप्रथम समास की परिभाषा तथा उसके प्रभेदों के लक्षणों तथा उदाहरणों के बारे में स्थूलतः परिचय प्राप्त किया। ततः पश्चात् अव्ययीभावादि विशेषसंज्ञा से विनिर्मुक्त केवलसमास जिसे कि सुप्सुपा–समास भी कहा जाता है का परिचय सोदाहरण प्राप्त किया। इसके बाद समास के पञ्चविधवृत्ति में अन्यतम होने के कारण वृत्ति के स्वरूप का परिज्ञान तथा लौकिक–अलौकिकादि विग्रहवाक्य का परिचय प्राप्त किया क्योंकि विग्रहवाक्यादि का ज्ञान किसी भी समस्तपद के ज्ञान तथा उसकी रूपसाधनप्रक्रिया हेतु अत्यन्त आवश्यक है। इसके बाद अव्ययीभावसमास प्रकरण का आरम्भ हुआ जिसमें आपने अव्ययीभावसमास विधायक सूत्रों का विशद अध्ययन किया। जिसमें मुख्य हैं – अव्ययं विभक्तिसमीप. सूत्र जो कि विभक्त्यर्थ–समीपार्थ–समृद्ध्यर्थादि 16 विभिन्न अर्थों में अव्ययीभावसमास का विधान करता है, उसी प्रकार नदीभिश्च सूत्र भी जो नदीविशेषवाची शब्दों के साथ सुबन्त का समास विधान करता है। तदुपरान्त समासोत्तर अवान्तर कार्य जैसे सुप् के स्थान पर नित्य तथा बहुलतया अम् भाव उसी प्रकार समासान्त प्रत्ययों का विधान इत्यादि सभी कार्यों का ससूत्र सोदाहरण विशदतया अध्ययन किया।

9.6 शब्दावली

केवलसमास– वह समास जिसका विधान "सुप् सुपा" सूत्र के द्वारा किया जाता है और यह अव्ययीभाव–तत्पुरुषादि की तरह किसी विशेषसंज्ञा से विनिर्मुक्त रहता है।

व्यपेक्षासामर्थ्य – आकांक्षा आदि की दृष्टि से पदों में परस्पर सम्बन्ध को व्यपेक्षा कहते हैं। इस प्रकार का सामर्थ्य केवल वाक्य में होता है। जैसे – राज्ञः पुरुषः यहाँ राज्ञः (राजा का) ऐसा षष्ठ्यन्त कहने पर आकांक्षा होती है कि – किं (क्या) ? जो कि पुरुषः कहने पर शान्त होती है। उसी प्रकार पुरुषः कहने पर किसका इस तरह की परस्पर आकांक्षा उदित होती है।

एकार्थीभाव सामर्थ्य जहाँ पृथक्-पृथक् पदों की उपस्थिति एक साथ हुआ करती है वहाँ एकार्थीभावरूप सामर्थ्य होता है। जैसे – राजपुरुषः में राज्ञः और पुरुषः का एकार्थीभाव हुआ और दोनों पदों के मिलने से एकार्थ की प्रतीति हुई। जिन पदों में सामर्थ्य होता है उन्हीं में पदविधि होती है। तो इस प्रकार पदविधि का प्रयोजक सामर्थ्य हुआ और यह एकार्थीभाव सामर्थ्य कृत्तद्धितसमासैकशेष–सनाद्यन्तधातुरूप इन पञ्चवृत्तियों में होता ही है। इसके अभाव में कोई वृत्ति नहीं हो सकती।

वृत्ति – परार्थाभिधानं वृत्तिः यह वृत्ति का स्वरूप है। किसी दूसरे अर्थ का अभिधान (कहना) ही वृत्ति है। जैसे राजन् पद का अर्थ राजा है और पुरुष पद का अर्थ पुरुष, परन्तु दोनों में सामर्थ्यवशात् समासवृत्ति होने पर वह एक दूसरे ही अर्थ राजसम्बन्धीपुरुष का अभिधान करती है। यह वृत्ति पाँच प्रकार की है – कृत्–तद्धित–समास–एकशेष–सनाद्यन्तधातुरूप।

विग्रहवाक्य – वृत्ति के अर्थ के अवबोधक वाक्य को विग्रहवाक्य कहते हैं।

लौकिक विग्रह – लोक में परनिष्ठित रूप से प्रयोग करने योग्य जैसे – राजपुरुष का राज्ञः पुरुषः।

अलौकिक विग्रह – यह विग्रह केवल प्रक्रिया के निमित्त ही उपयोगी है। लौकिक विग्रह में प्रयुक्त विभक्ति को इसमें पृथक् दिखाया जाता है। जैसे – राज्ञः पुरुषः का राजन् ङस्. पुरुष सु।

अस्वपदविग्रह – यह विग्रह वहाँ दिखाया जाता है जहाँ नित्य समास हो अथवा जिसका लौकिक विग्रह वाक्य न हो। अर्थात् समस्यमान पदों से इतर (भिन्न) पदों (जोकि समास के घटक न हो) से जहाँ विग्रह प्रदर्शित किया जाए वहाँ अस्वपदविग्रह होता है। जैसे – अधिहरि में समस्यमान पद हैं "अधि और हरि", परन्तु विग्रह में हम "हरौ इति" ऐसा निर्देश करते हैं। यहाँ इति पद समास का घटक नहीं है।

उपसर्जन – यह एक संज्ञा का नाम है जिसका विधान "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" सूत्र से किया जाता है। समास के विधायक सूत्र जो पद प्रथमाविभक्ति से निर्दिष्ट होता है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है।

पूर्वनिपात – उपसर्जनसंज्ञा जिसकी होती है उसका पूर्वनिपात किया जाता है अर्थात् समस्यमान पदों में से उपसर्जनसंज्ञा से युक्त पद का पूर्वप्रयोग करना ही पूर्वनिपात है।

वीप्सा – यथार्थ के जो चार अर्थ योग्यता–वीप्सा–पदार्थानतिवृत्ति–सादृश्य हैं उनमें वीप्सा का अर्थ होता है व्याप्ति। जैसे वृक्षं वृक्षं प्रति सिञ्चति कहते हैं तो उसका अर्थ है प्रत्येक वृक्ष को सींचता है। यहाँ व्याप्ति का अर्थ सकल रूप से व्याप्त करने की इच्छा से है। एक भी वृक्ष को न छोड़ते हुए। और जहाँ वीप्सा का प्रयोग होता है वहाँ "नित्यवीप्सयोः" सूत्र से द्वित्व अवश्य किया जाता है। इसीलिए वीप्सा के उदाहरण प्रत्यर्थम् के विग्रह में अर्थम् अर्थ प्रति यहाँ अर्थ शब्द का द्विप्रयोग किया।

पदार्थानतिवृत्ति – यथार्थ के जो चार अर्थ योग्यता–वीप्सा–पदार्थानतिवृत्ति–सादृश्य हैं उनमें अन्यतम है पदार्थानतिवृत्ति। पदार्थस्य अनतिवृत्तिः = पदार्थानतिवृत्तिः, न अतिवृत्तिः = अनतिवृत्तिः। इसका अर्थ है पदार्थ का अतिक्रमण न करना। जैसे यथाशक्ति। इसका तात्पर्य है शक्ति का अनतिक्रमण = शक्ति का अतिक्रमण न करते हुए। जितनी शक्ति उसके अनुसार यह फलितार्थ हुआ।

बहुलम् – कहीं प्रवृत्त होना, कहीं नहीं होना, कहीं विकल्प से होना और कहीं कुछ अन्य प्रकार से कार्य का सम्पन्न होना ही बहुल कहलाता है। जिसका प्रसिद्ध श्लोक है – क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव। विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

समासान्त – समासान्त एक विशेष प्रकार के प्रत्यय हैं। यह वह प्रत्यय हैं जो समास के अन्त में समाससमुदाय के अन्तावयव के रूप में युक्त होते हैं।

9.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)

2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

9.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

क) बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख), 5. (क)

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. पूर्वपदार्थप्रधानो,
2. समीप–समृद्धि–व्यृद्धयर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति–शब्दप्रादुर्भाव–पश्चाद्–यथाऽऽनुपूर्व्य–यौगपद्य–सादृश्य–सम्पत्ति–,
3. ऽम्त्वपञ्चम्याः
4. योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिसादृश्यानि
5. सतृणमत्ति

ग) सही/गलत का चयन

1. गलत 2. सही 3. सही 4. गलत 5. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 10 समास प्रकरण – भाग 2

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- तत्पुरुष समास के बारे में जानेंगें।
- तत्पुरुष समास के भेदों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगें।
- तत्पुरुष के ही भेद कर्मधारय तथा उसके भेद द्विगु के बारे में भी आप जान पाएँगें।
- कर्मधारय जिसे कि विशेषण समास कहते हैं के बारे में वितार से ज्ञान प्राप्त होगा।
- कर्मधारय के भेद द्विगु के बारे में जान पाँएगें कि द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा करने का क्या प्रयोजन है।
- विशेष रूप से तत्पुरुष प्रकरण के सूत्रों को (जिनमें कर्मधारय व द्विगु के सूत्र भी अन्तर्भूत हैं) विस्तार से सोदाहरण विवेचन के साथ पढ़ेंगें।
- तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो पाएँगें।

10.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई में आपको तत्पुरुष समास प्रकरण के बारे में अध्ययन करना है। जैसा कि पूर्वतन इकाई में आपको बताया गया था कि तत्पुरुष प्रायः उत्तरपदार्थप्रधान होता है। साथ ही पूर्वतन इकाई में आपने समास का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए समास के विभिन्न भेदों के बारे में स्थूलतया परिचय प्राप्त करके प्रथम भेद अव्ययीभाव समास विधायक सूत्रों का तथा उनके उदाहरणों का अध्ययन कर विस्तृत परिचय प्राप्त किया। अव्ययीभाव प्रकरण में ही कतिपय समासान्त प्रत्यय भी हैं जो कि पाठ के अन्त में यथाक्रम व्याख्यायित किए गए। तो इस प्रकार

समास के अन्यतम भेद अव्ययीभाव समास के बारे में विस्तार से सोदाहरण अध्ययन करवाकर आपको इस इकाई में तत्पुरुष समास के विधायक सूत्रों का अध्ययन कराया जाएगा। तत्पुरुष समास का विधान द्वितीया विभक्त्यन्त से लेकर सप्तमी विभक्त्यन्त तक किया गया है। अर्थात् द्वितीयान्त से सप्तम्यन्त तक का सुबन्त के साथ समास का विधान किया है अतः इनको क्रमशः द्वितीया–तत्पुरुष, तृतीया–तत्पुरुष, चतुर्थी–तत्पुरुष, पञ्चमी–तत्पुरुष, षष्ठी–तत्पुरुष, सप्तमी–तत्पुरुष नाम से जाना जाता है।

तदुपरान्त तत्पुरुष में ही जब दो प्रथमान्त पदों का समास विधान किया जाता है तो वह समानाधिकरण समास या विशेषणसमास कहलाता है। इसे ही तत्पुरूष के भेद कर्मधारय के रूप में जाना जाता है। इसके साथ ही कर्मधारय का अवान्तर भेद कहा गया है द्विगु। जो कि संख्यापूर्वपद होने पर होता है जैसा कि सूत्र है "संख्यापूर्वो द्विगुः"। इसी की तत्पुरुष संज्ञा भी की गई है। जिसाका प्रयोजन समासान्त इत्यादि है। इसका विवेचन विस्तार से पाठ के मध्य किया जाएगा।

10.2 समास –"तत्पुरुषः" सूत्र से "शाकपार्थिवादीनां सिद्धये इत्यादि" वार्तिकपर्यन्त

प्रिय छात्रों इस इकाई में हम "तत्पुरुषः" सूत्र से "शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्" वार्तिकपर्यन्त आने वाले सभी सूत्रों का क्रमशः अध्ययन करेंगें। यहाँ कुछ बातें ध्यात्व्य है कि द्वितीयादि सप्तमीतत्पुरुष समास व्यधिकरणसमास है क्योंकि यहाँ समस्यमान दोनों पदों में भिन्न–भिन्न विभक्ति का प्रयोग किया है। सुबन्त के साथ जिस विभक्त्यन्त का समास होता है उसे उसी के नाम से जाना जाता है। जैसे द्वितीयान्त का सुबन्त के साथ समास होने पर द्वितीया तत्पुरुष इत्यादि।

इसके विपरीत जहाँ समस्यमान पदों की विभक्ति समान हो वह समानाधिकरण समास कहलाता है। यहाँ प्रथमा विभक्तयन्त का प्रथमान्त के साथ समास किया जाएगा यही विशेषण समास भी कहा जाता है, जो कि कर्मधारय के नाम से प्रसिद्ध है। कर्मधारय में भी विशेषणपूर्वपद कर्मधारय तथा उपमानपूर्वपद कर्मधारय को सोदाहरण जानेंगें।

यदि इसी समानाधिकरण समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो तो द्विगु कहलाता है। जब द्विगु समास समाहार अर्थ में प्रयुक्त होता है तो समाहार (समूह) की प्रधानता होने के कारण सदैव नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन में ही प्रयुक्त होता है। यह सब पाठ में स्पष्ट हो जाएगा।

सूत्र – तत्पुरुषः 2.1.21

सूत्रवृत्ति – अधिकारोऽयं प्राग्बहुव्रीहेः।

सूत्रानुवाद – यह अधिकार सूत्र है "शेषो बहुव्रीहिः" से पूर्व तक इस सूत्र का अधिकार है।

व्याख्या – तत्पुरुषः यह एक पदात्मक सूत्र है। "शेषो बहुव्रीहिः" से पूर्व तक इसका अधिकार क्षेत्र है। अर्थात् "तत्पुरुषः" सूत्र से "शेषो बहुव्रीहिः" तक जिन सूत्रों के द्वारा जिस समास का विधान किया जाएगा उसकी तत्पुरुष संज्ञा होगी।

सूत्र – द्विगुश्च 2.1.23

सूत्रवृत्ति – द्विगुरपि तत्पुरुषसंज्ञकः स्यात्।

सूत्रानुवाद – द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – द्विगुः च यह पदच्छेद है। यह सूत्र द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा का विधान करता है। इसी प्रकरण में आगे तत्पुरुष के अधिकार में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" सूत्र से विहित त्रिविध समास में से जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो उसकी द्विगु संज्ञा "संख्यापूर्वो द्विगुः" सूत्र से की जाएगी।

द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा करने का प्रयोजन – यद्यपि आकडारादेका संज्ञा सूत्र के अधिकार के कारण एक की एक ही संज्ञा करनी चाहिए जो पर (अष्टाध्यायी में बाद में पढी हो) हो और अनवकाश हो। तो इस प्रकार द्विगु संज्ञा से तत्पुरुष संज्ञा का बाध हो जाएगा जोकि इष्ट नहीं है। तो क्या प्रयोजन है कि द्विगु की तत्पुरुषसंज्ञा भी करनी चाहिए ? तो इसक समाधान यह है कि एकसंज्ञाधिकार में भी द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा भी बनी रहे ताकि तत्पुरुष से "राजाहःसखिभ्यष्टच्" के द्वारा विहित टच्, "तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः" से विहित अच् आदि समासान्त प्रत्यय द्विगु से भी किए जा सके।

सूत्र – द्वितीया श्रिताऽतीत–पतित–गतात्यस्त–प्राप्तापन्नैः। 2.1.24

सूत्रवृत्ति – द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह समस्यते वा, स च तत्पुरुषः। कृष्णं श्रितः कृष्णश्रितः इत्यादि।

सूत्रानुवाद – द्वितीयान्त सुबन्त, श्रित आदि प्रकृति वाले सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं वह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – द्वितीया श्रिताऽतीत–पतित–गताऽत्यस्त–प्राप्तापन्नैः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। सह सुपा सूत्र से सुपा की अनुवृत्ति होती है जो कि वचन विपरिणाम से बहुवचन प्राप्त करता है सुबन्तैः इति। विभाषा, तत्पुरुष अधिकारों की तथा सुप् सुपा से सुप् की अनुवृत्ति पूर्व से है। यहाँ श्रितश्च अतीतश्च पतितश्च गतश्च अत्यस्तश्च प्राप्तश्च आपन्नश्च = श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नाः तैः श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः इस प्रकार से इतरेतरद्वन्द्व समास है। यहाँ श्रितादि की श्रितादिप्रकृतिकसुबन्त में लक्षणा की गई है, अन्यथा श्रितादि सुबन्त नहीं है तो उनका सुबन्तैः के साथ सामानाधिकरण्य सम्भव नहीं है। अतः श्रित है प्रकृति जिन सुबन्तों की ऐसा लाक्षणिक अर्थ कर लिया गया। द्वितीया शब्द से प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः परिभाषा से द्वितीयान्त का ग्रहण किया है इसी प्रकार सुप् से सुबन्त का। अतः सूत्रार्थ ऐसे सम्पन्न हुआ कि द्वितीयान्त सुबन्त का श्रितादिप्रकृतिक सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं।

उदाहरण – **कृष्णश्रितः** – कृष्णं श्रितः इस लौकिक विग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में "द्वितीया श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः" इस सूत्र से तत्पुरुष समास करने पर समासंज्ञा होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर कृष्णश्रित इस अवस्था में

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से समास विधायक सूत्र में द्वितीया शब्द के प्रथमानिर्दिष्ट होने से द्वितीयान्त की उपसर्जन संज्ञा होने पर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से द्वितीयान्त का पूर्वनिपात करने पर कृष्णश्रित इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय विभक्तिकार्य द्वारा रुत्वविसर्ग होने पर कृष्णश्रितः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन। 2.1.30

सूत्रवृत्ति – तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्। शंकुलया खण्डः शङ्कुलाखण्डः। धान्येनार्थो धान्यार्थः। तत्कृतेति किम्? अक्ष्णा काणः।

सूत्रानुवाद – तृतीयान्त सुबन्त, तृतीयान्त के अर्थ द्वारा कृत जो गुण तद्विशिष्ट द्रव्यवाचक सुबन्त के साथ एवं अर्थ–शब्द के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। सूत्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए प्राक्कडारात् समासः, सह सुपा तथा तत्पुरुषः की अनुवृत्ति करनी होती है। इस सूत्र मे 'तत्' पद का अभिप्राय सूत्रस्थ तृतीया से है। अतएव 'तत्कृतम्' का अर्थ होगा 'के द्वारा किया हुआ'। इसका अन्वय 'गुणवचनेन' के साथ होता है, 'अर्थेन' के साथ नहीं। गुणवचन शब्द का निर्वचन शब्दावली में विस्तार से करेंगें। "प्रत्यय ग्रहणे तदन्तग्रहणम्" इस परिभाषा से तृतीया में तदन्तविधि होने पर तृतीयान्त का ग्रहण किया जाता है। अब सूत्र का अर्थ होता है– तृतीयान्त अर्थात् तृतीयान्त सुबन्त का तृतीयान्तार्थ कृत–गुणवचनेन = तृतीयान्त के अर्थ के साथ किये गये गुण वाचक सुबन्त के साथ और अर्थप्रातिपदिक के सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है तथा इसको 'तत्पुरुष' कहा जाता है।

उदाहरण – शंकुलाखण्डः– शंकुलया खण्डः इस लौकिक विग्रह में शंकुला टा खण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र से समाससंज्ञा होने पर पूर्ववत् प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर शंकुलाखण्ड इस अवस्था में तृतीयान्त का समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने के कारण उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वनिपात करने पर **शंकुलाखण्ड** इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्त्यादिकार्य करने पर शंकुलाखण्डः रूप सिद्ध होता है।

तत्कृतेति किम् ? अब यहाँ विचार किया जाता है कि सूत्र में तत्कृत = तृतीयान्तार्थ कृ त अर्थात् 'तृतीयान्तार्थ से किये हुए गुणवचन से' – ऐसा कहने की क्या आवश्यकता थी ? तो इसका समाधान यह है कि तत्कृत ग्रहण करने से सूत्र का अर्थ होगा कि यदि तृतीयान्त का गुणवचन के साथ समास हो तो तृतीयान्तार्थ कृत से ही हो। इस नियम के आधार पर अक्ष्णा काणः में समास नहीं होगा। क्योंकि तृतीयान्त अक्ष्णा आँख से , आँख के द्वारा वह काना नहीं हुआ है। अतः अक्ष्णा और काणः में कारण कार्य सम्बन्ध न होने के कारण यहाँ समास भी नहीं होता है।

सूत्र –कर्तृकरणे कृता बहुलम् 2.1.32

सूत्रवृत्ति – कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत्। हरिणा त्रातः हरित्रातः। नखैर्भिन्न नखभिन्नः।

सूत्रानुवाद – कर्ता अथवा करण में जो तृतीया तदन्त सुबन्त (तृतीयान्त) का कृदन्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – कर्तृकरणे, कृता, बहुलम् यह इस त्रिपदात्मक सूत्र का पदच्छेद है। तृतीया पद की अनुवृत्ति तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन से होती है। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः – ये सब पूर्वतः अधिकृत है। कर्ता च करणं च कर्तृकरणम्, तस्मिन् = कर्तृकरणे, समाहारद्वन्द्वः। तृतीया से तदन्तविधि हो कर तृतीयान्तं सुबन्तम् बन जाता है। इसी प्रकार कृत् प्रत्यय होने के कारण तदन्तविधि से

कृता का भी तदन्तविधि हो कर कृदन्तेन सुबन्तेन या कृदन्त प्रकृतिकेन सुबन्तेन बन जाता है। सूत्रार्थ यह फलित होता है कि – कर्ता या करण कारक में जो तृतीया है तदन्त = तृतीयान्त सुबन्त, (कृता = कृदन्तेन) कृदन्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ बहुल प्रकार के समास को प्राप्त होता है।

कर्तृकारक में तृतीयान्त का उदाहरण – हरित्रातः – हरिणा त्रातः इस लौकिक विग्रह में हरि टा त्रात सु इस अलौकिकविग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् सूत्र द्वारा बहुल प्रकार से समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में अनुवर्तित तृतीया पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से तद्बोध्य हरि टा की उपसर्जनसंज्ञा और उपसर्जनम्पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाने पर हरि टा त्रात सु इस समास समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः द्वारा उस के अवयव (टा और सु) का लुक् करने पर हरित्रात इसकी पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् परिभाषा से प्रातिपदिकत्व तथा प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्त्यादि कार्य करके हरित्रातः रूप सिद्ध होता है।

कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम् (परिभाषा) नखैर्निर्भिन्नः – नखनिर्भिन्नः।

व्याख्या – इस परिभाषा का अर्थ है कि कृत् (कृदन्त) के ग्रहण में गति–कारक पूर्व का भी ग्रहण किया जाना चाहिये। तात्पर्य यह है कि कर्ता और करण अर्थ में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त का गतिकारक पूर्व कृदन्त के साथ भी समास होता है। जैसे – नखनिर्भिन्नः – नखैः निर्भिन्नः इस विग्रह में गतिसंज्ञक नि 'पूर्वक कृदन्त भिन्न के साथ नखैः तृतीयान्त का समास हुआ है। प्रक्रिया नखभिन्न के समान है। केवल समासविधायक सूत्र इस परिभाषा की सहायता से समास का विधान करता है।

सूत्र – चतुर्थी तदर्थार्थ–बलि–हित–सुख–रक्षितैः 2.1.36

सूत्रवृत्ति – चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना, अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत्। यूपाय दारु – यूपदारु। तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः, तेनेह न – रन्धनाय स्थाली।

सूत्रानुवाद – चतुर्थ्यन्त सुबन्त, उस चतुर्थ्यन्त के अर्थ (वाच्य) के लिये जो वस्तु तद्वाचक सुबन्त के साथ एवम् अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – चतुर्थी, तदर्थ–अर्थ–बलि–हित–सुख–रक्षितैः यह द्विपदात्मक सूत्र का पदच्छेद है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं।

प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार चतुर्थी से चतुर्थ्यन्तं सुबन्तम् का ग्रहण होता है। तदर्थञ्च अर्थश्च बलिश्च हितं च सुखं च रक्षितं च तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितानि, तैः तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितः, इतरेतरद्वन्द्वः। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित होता है – चतुर्थ्यन्त सुबन्त, तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

तदर्थ से प्रकृतिविकृतभाव का ग्रहण – तदर्थवाचक – में तद् से चतुर्थ्यन्त सुबन्त का ग्रहण किया जाता है। इस प्रकार तदर्थ का अर्थ होता है – चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये। अभिप्राय यह है कि चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये जिसका उपयोग किया जाता है उसके वाचक प्रातिपादक के सुबन्त के साथ उस चतुर्थ्यन्त सुबन्त का समास होगा। किन्तु चतुर्थ्यन्त सुबन्त और तदर्थवाचक सुबन्त दोनों में प्रकृति–विकृति भाव होना आवश्यक है। अभिप्राय यह हुआ कि चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये गृहीत वस्तु से यदि चतुर्थ्यन्त वस्तु में विकार सम्भव होगा तो परस्पर समास होगा, अन्यथा समास नहीं होगा।

उदाहरण – यूपदारु – यूपाय दारु (यज्ञस्तम्भ हेतु लकड़ी), में सुबन्त दारू का उपयोग चतुर्थ्यन्त यूपाय के लिये होता है। यहाँ दारु (लकड़ी) , प्रकृति है और यूपाय विकृति(क्योंकि यूप का निर्माण लकड़ी से ही होता है) है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा समास होकर यूपदारु बनता है।

किन्तु यदि तदर्थवाचक सुबन्त से चतुर्थ्यन्त सुबन्त में कोई विकार न होगा तो समास भी नहीं हो सकेगा जैसे – रन्धनाय स्थाली में तदर्थवाचक सुबन्त स्थली अवश्य है किन्तु स्थाली से 'रांधना' न बनने के कारण प्रकृतिविकृति भाव न होने से समास नहीं होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि 'प्रकृति–विकृतिभाव' दो द्रव्यों में हुआ करता है। द्रव्य और क्रिया में नहीं हुआ करता है। यहाँ स्थाली द्रव्य है और रन्धन क्रिया है। अतः यहाँ समास नहीं होगा।

वार्तिक–अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् । वार्तिक

वृत्ति – द्विजार्थः सूपः। द्विजार्था यवागूः। द्विजार्थं पयः। भूतबलिः। गोहितम्। गोसुखम्। गोरक्षितम्।

व्याख्या – अर्थ–शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त का समास नित्य होता है (नित्य समास होने के कारण यहाँ अस्वपदलौकिक विग्रह होगा) तथा इस समास का लिङ्ग भी विशेष्य के अनुसार होता है। विशेष्य के अनुसार लिङ्ग निर्धारण का कारण यह है कि परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः सूत्र से तत्पुरुष समास में उत्तरपद के अनुसार समास (समस्तपद) का लिङ्ग होता है। अतः यहाँ इस सूत्र से परवल्लिङ्गता को बाधकर विशेष्य के अनुसार समस्तपद का लिङ्गनिर्धारण किया जाता है।

उदाहरण – द्विजार्थः (सूपः) – द्विजाय अयम् इस अस्वपद लौकिक विग्रह में द्विज ङे अर्थ सु इस अलौकिकविग्रह में अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् इस वार्तिक से चतुर्थ्यन्त का अर्थशब्द से नित्य समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर चतुर्थ्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(द्विज शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके

द्विज अर्थ इस अवस्था में सवर्णदीर्घ होकर द्विजार्थ की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके सूपः इस विशेष्य के पुंल्लिंग होने से समस्त पद भी पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होगा अतः द्विजार्थः रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार स्त्रीलिङ्ग विशेष्य पद होने पर द्विजाय इयम् इस अर्थ में द्विजार्था यवागूः तथा नपुंसकलिङ्ग विशेष्य पद होने पर द्विजाय इदम् इस अर्थ में द्विजार्थं पयः रूप सिद्ध होते हैं। प्रक्रिया सभी की समान है।

सूत्र – पञ्चमी भयेन 2.1.37

सूत्रवृत्ति – चोराद् भयम् – चोरभयम्।

सूत्रानुवाद – पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ समास होता है वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह द्विपद सूत्र है। पूर्वसूत्रों की तरह यहाँ भी समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार 'पञ्चमी' से 'पञ्चम्यन्त सुबन्त' का ग्रहण होता है। तो पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयप्रकृतिक (भयवाचक) सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण – चोरभयम् – चोराद् भयम् इस लौकिक विग्रह में चोर ङसि भय सु इस अलौकिक विग्रह में पञ्चमी भयेन इस सूत्र से पञ्चम्यन्त का भयशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर पञ्चम्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(चोर शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके चोरभय इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके (सु को अम्भावपूर्वरूपादि) चोरभयम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन 2.1.39

सूत्रवृत्ति – मूलग्रन्थ में वृत्ति नहीं है अनुवृत्यादि से वृत्ति इस प्रकार होगी (स्तोकान्तिकदूरार्थवाचकाः कृच्छ्रशब्दश्चेति पञ्चम्यन्ताः क्तान्तप्रकृतिकेन सुबन्तेन वा समस्यते, स च तत्पुरुषः।)

सूत्रानुवाद – स्तोकार्थक (स्वल्पार्थक), अन्तिकार्थक (समीपार्थक), दूरार्थक तथा कृच्छ्र शब्द ये पञ्चम्यन्त सुबन्त क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त करते हैं जिनकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

व्याख्या – स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि, क्तेन यह द्विपदात्मक सूत्र है। पञ्चमी भयेन सूत्र से पञ्चमी की अनुवृत्ति आती है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः – ये सब अधिकृत हैं। स्तोकश्च अन्तिकञ्च दूरञ्चेति स्तोकान्तिकदूराणि, इतरेतरद्वन्द्वः। स्तोकान्तिकदूराणि अर्था येषां ते स्तोकान्तिकदूरार्थाः, बहुव्रीहिसमासः। स्तोकान्तिकदूरार्थाः कृच्छ्रञ्चेति स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि, इतरेतरद्वन्द्वः। प्रत्ययग्रहणपरिभाषाद्वारा 'पञ्चमी' से तदन्त विधि हो कर वचनविपरिणाम से 'पञ्चम्यन्तानि' बन जाता है। 'क्त' से भी तदन्तविधि हो कर 'क्तान्तेन' उपलब्ध हो जाता है। तब यह सूत्रार्थ फलित होता है –

स्तोकार्थक (स्वल्पार्थक), अन्तिकार्थक (समीपार्थक), दूरार्थक तथा कृच्छ्र शब्द ये पञ्चम्यन्त सुबन्त क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त करते हैं जिनकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

सूत्र – पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः 6.3.2

सूत्रवृत्ति – अलुगुत्तरपदे। स्तोकान्मुक्तः। (अल्पान्मुक्तः)। अन्तिकादागतः। अभ्याशादागतः। दूरादागतः। (विप्रकृष्टादागतः)। कृच्छादागतः।।

सूत्रानुवाद – स्तोक आदियों से परे पञ्चमी का लुक् नहीं होता उत्तरपद परे हो तो।

व्याख्या – पञ्चम्याः, स्तोकादिभ्यः यह द्विपद सूत्र है। पञ्चम्याः यह षष्ठ्यन्त है पञ्चमी का ऐसा अर्थ होता है। स्तोकादिभ्यः पञ्चमी बहुवचन है अतः स्तोकादि से पर में यह अर्थ लब्ध होता है। अलुक् उत्तरपदे यह दो पद अलुगुत्तरपदे सूत्र से अनुवृत्त है। स्तोक आदिर्येषान्ते स्तोकादयः, तेभ्यः = स्तोकादिभ्यः बहुव्रीहि समासः। स्तोकादियों से यहां पूर्वसूत्र में प्रतिपादित स्तोकादियों का ग्रहण ही अभीष्ट है। न लुक अलुक्, नञ्तत्पुरुषः। उत्तरपदे का अर्थ उत्तरपद के पर में रहते। तो इस प्रकार से सूत्रार्थ फलित होता है – स्तोक आदियों से परे पञ्चमी का लुक् नहीं होता उत्तरपद परे हो तो।

उदाहरण – **स्तोकान्मुक्तः** – स्तोकात् मुक्तः इस लौकिक विग्रह में स्तोक ङसि मुक्त सु इस अलौकिक विग्रह में स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन सूत्र से समास करने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् (ङसि तथा सु) प्राप्त होने पर पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः सूत्र से सुब्लुक् स्तोक से परे ङसि का लुक् निषेध होता है तथा सु मात्र का लोप होने पर स्तोक ङ्सि . मुक्त इस अवस्था में ङसि के स्थान पर टाङसिङसामिनात्स्याः सूत्र से आत् आदेश करने तथा सवर्णदीर्घ करने पर स्तोकात् मुक्त इस अवस्था में तकार का जश्त्व दकार तथा परसवर्ण करने पर स्तोकान्मुक्त इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुविभक्त्यादिकार्य करके स्तोकान्मुक्तः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – षष्ठी 2.2.8

सूत्रवृत्ति – सुबन्तेन प्राग्वत्। राजपुरुषः।

सूत्रानुवाद – षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह एकपदात्मक सूत्र है। इसका अर्थ पूर्ण करने हेतु समर्थः पदविधिः, समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुष इनकी अनुवृत्ति करनी पड़ती है। प्रत्ययग्रहण परिभाषा से षष्ठी, सुप्, सुपा सबका अर्थ क्रमशः षष्ठ्यन्त, सुबन्त, सुबन्तेन हो जाता है। तब पूर्वोक्तार्थ लब्ध होता है कि – षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण – **राजपुरुषः** – राज्ञः पुरुषः इस लौकिक विग्रह में राजन् ङस्. पुरुष सु इस अलौकिकविग्रह में षष्ठी इस सूत्र से षष्ठ्यन्त का समर्थ सुबन्त पुरुषशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर षष्ठ्यन्त के

समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(राजन् शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके राजन्पुरुष इस अवस्था में न लोप प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से राजन् शब्द के नकार का लोप होने पर राजपुरुष इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके रुत्वविसर्गादि विभक्ति कार्य करके राजपुरुषः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – पूर्वाऽपराऽधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे 2.2.1

सूत्रवृत्ति – अवयविना सह पूर्वादयः समस्यन्ते, एकत्वविशिष्टश्चेदवयवी। षष्ठीसमासाऽपवादः। पूर्व कायस्य – पूर्वकायः। अपरकायः। एकाधिकरणे किम् ? पूर्वश्छात्राणाम्।

सूत्रानुवाद – यदि अवयवी एकत्वसंख्याविशिष्ट हो तो तद्वाचक सुबन्त के साथ पूर्व अपर, अधर, उत्तर – ये चार सुबन्त विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं और वह समास तत्पुरुषसञ्ज्ञक होता है। यह सूत्र षष्ठी सूत्र द्वारा प्राप्त समास का अपवाद है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। पूर्वाऽपराऽधरोत्तरम् यह पद प्रथमान्त है। एकदेशिना तृतीयान्त तथा एकाधिकरणे सप्तम्यन्त। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः – ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। पूर्वञ्च परञ्च अधरञ्च उत्तरञ्च एषां समाहारः – पूर्वापराधरोत्तरम्, समाहारद्वन्द्वः। एकदेशः = अवयवः, सोऽस्यास्तीति एकदेशी, तेन = एकदेशिना, अवयविनेत्यर्थः। एकम् (एकत्वसंख्याविशिष्टम्) च तद् अधिकरणम् (द्रव्यम्) – एकाधिकरणम्, तस्मिन् = एकाधिकरणे, कर्मधारयसमासः। 'एकाधिकरणे' का सम्बन्ध 'एकदेशिना' के साथ है। अतः सूत्रार्थ हुआ एकत्वसंख्या विशिष्ट द्रव्य अर्थ में वर्तमान जो अवयवी तद्वाचक सुबन्त के साथ पूर्व, अपर, अधर और उत्तर इन सुबन्त का विकल्प से समास होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

षष्ठीसमास का अपवाद का तात्पर्य– अवयवी का, अवयव 'पूर्व' आदि के साथ, इस सूत्र द्वारा जो समास होता है वह षष्ठी समास का बाधक है। यदि षष्ठी समास होता तो षष्ठ्यन्त का प्रयोग पहले हो जाता। इस एकदेशि समास के विधायक सूत्र में प्रथमान्त निर्दिष्ट पद 'पूर्व' आदि अवयववाचक शब्द है। अतः प्रथमानिर्दिष्टं समासे उपसर्जनम् इस नियम से इनका प्रयोग पहले होता है। इसी कारण इस एकदेशि समास का विधान अपवाद स्वरूप किया गया है।

एकाऽधिकरणे किम् ? यहाँ प्रश्न होता है कि सूत्र में एकाधिकरणे क्यों कहा गया। इस समास में अवयवी का एकत्वसंख्याविशिष्ट अर्थात् एकवचनान्त होना आवश्यक है। अन्यथा 'पूर्वश्छात्राणाम' में समास होने लग जाता। यहाँ अवयवी छात्राणाम् बहुवचन होने से बहुत्त्वसंख्याविशिष्ट है, एकत्वसंख्याविशिष्ट नहीं। अतः यहाँ समास नहीं हुआ। यहाँ तत्पुरुष समास होने पर भी पूर्वपद का अर्थ ही प्रधान है। उसी का अन्य पदार्थों के साथ अन्वय होता है। अत एव समासप्रकरण की प्रथम इकाई में समास परिचयात्मक व्याख्यान में तत्पुरुष के लक्षण में प्रायः पद कहा गया था यह आपको ज्ञात है।

उदाहरण – पूर्वकायः – पूर्वं कायस्य यह लौकिक विग्रह है। पूर्व अम् काय ङस् इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से समास होता है। क्योंकि यहाँ काय अवयवी है और

एकवचनान्त भी, पूर्व शब्द अवयववाचक है। तदनन्तर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक् आदि कार्य करने के उपरान्त समासशास्त्रस्थ प्रथमान्त पद बोध्य होने के कारण पूर्व शब्द का पहले निपात करने पर पूर्वकाय समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्व विभक्तिकार्य करके पूर्वकायः रूप सिद्ध होता है।

इसी तरह अपरं कायस्य = अपरकायः इत्यादि सिद्ध होते है।

सूत्र – अर्धं नपुंसकम् 2.2.2

सूत्रवृत्ति –समांशवाची अर्धशब्दो नित्यं क्लीबे, स प्राग्वत्। अर्धं पिप्पल्याः अर्धपिप्पली।

सूत्रानुवाद – सम अंश का वाचक अर्ध शब्द नित्य नपुंसक होता है। नित्य नपुंसक यह अर्ध–सुबन्त एकत्वविशिष्ट अवयवी के वाचक सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करता है जो कि तत्पुरुष कहा जाता है।

व्याख्या – इस द्विपद सूत्र का अर्धम्, नपुंसकम् यह पदच्छेद है। पूर्वाडपराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे सूत्र से एकाधिकरणे, एकदेशिना यह पद अनुवृत्त होते हैं। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। तदनुसार सूत्रार्थ फलित होता है कि – एकत्वसंख्या विशिष्ट द्रव्य अर्थ में वर्तमान जो अवयवी, तद्वाचक सुबन्त के साथ नित्यनपुंसक 'अर्ध' सुबन्त का विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास (तत्पुरुषः) तत्पुरुषसञ्ज्ञक होता है। विशेष – 'अर्ध' बाद जब अंश (भाग) का वाचक हो तो पुंलिङ्ग या नपुंसक में प्रयुक्त होता है परन्तु समप्रविभाग (ठीक आधे भाग) का वाचक हो तब वह नित्यनपुंसक हुआ करता है। इस नित्यनपुंसक 'अर्ध' सुबन्त का एकत्वसंख्या–विशिष्ट अवयवी सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास हो जाता है।

उदाहरण – अर्धपिप्पली – अर्धं पिप्पल्याः इस लौकिकविग्रह में अर्ध सु पिप्पली ङस् इस अलौकिकविग्रह में समांशवाची अर्धशब्द है अतः 'अर्ध सु' का 'पिप्पली ङस्' इस एकत्वसंख्या विशिष्ट अवयवी सुबन्त के साथ प्रकृत अर्धं नपुंसकम् सूत्र द्वारा विकल्प से तत्पुरुषसमास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में 'अर्धम्' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'अर्ध सु' की उपसर्जनसञ्ज्ञा एवम् उपसर्जनं पूर्वम् से उसका पूर्वनिपात हो जाता है – अर्ध सु पिप्पली ङस्। अब समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, तथा उसके अवयव सुपों का लुक् होकर प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय लाकर विभक्तिकार्य करके 'अर्धपिप्पली' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – सप्तमी शौण्डैः 2.1.40

सूत्रवृत्ति – सप्तम्यन्तं शौण्डादिभिः प्राग्वत्। अक्षेषु शौण्डः – अक्षशौण्डः इत्यादि।

सूत्रानुवाद – सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्ड आदि सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – सप्तमी शौण्डैः यह द्विपदात्मक सूत्र है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। सप्तमी से तदन्तविधि होकर सप्तम्यन्त का ग्रहण होता है। सप्तम्यन्त का शौण्डादि सुबन्तों के साथ समास विकल्प से होता है यह फलितार्थ है।

उदाहरण – अक्षशौण्डः – अक्षेषु शौण्डः इस लौकिक विग्रह में अक्ष सुप् शौण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में सप्तमी शौण्डैः सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा सुब्लुक् करके अक्ष शौण्ड इस अवस्था में समासविधायक सूत्र में सप्तम्यन्त के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञकत्व के पूर्वनिपात करने पर अक्षशौण्ड समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुप्रत्यय करने पर विभक्ति कार्य करके अक्षशौण्डः रूप सिद्ध होता है।

द्वितीया–तृतीयेतित्यादियोगविभागादन्यत्रापि द्वितीयादिविभक्तीनां प्रयोगवशात् समासो ज्ञेयः ।

व्याख्या – यह वचन लघुसिद्धान्तकौमुदी में वरदराज ने पढा है अर्थात् 'द्वितीया, 'तृतीया' आदि का योगविभाग करने से अन्यत्र भी द्वितीयादि विभक्तियों का शिष्टप्रयोगवश समास जान लेना चाहिये। कहने का अभिप्राय यह है कि द्वितीया श्रितातीत..., तृतीया तत्कृतार्थेन.... इत्यादि सूत्रों द्वारा द्वितीयान्त आदि का पतित आदि सुबन्तों पर साथ समास का विधान किया गया है। किन्तु 'पतित' आदि से भिन्न पर साथ भी समास उपलब्ध होता है। उनकी सिद्धि के निमित्त 'द्वितीया' आदि को पृथक योग = सूत्र बना लिया जाएगा जिसका अर्थ सामान्यतया होगा – द्वितीयान्त का अन्य समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। इसमें 'पतित' आदि का सम्बन्ध नहीं रहेगा। अतएव इस योगविभाग द्वारा पतित आदि से भिन्न पदों के साथ समास सिद्ध हो जायेगा।

विशेष – इस स्थल तक भिन्न विभक्त्यन्तों का समास हुआ। इन्हें ही 'व्यधिकरण तत्पुरुष समास' कहा जाता है क्योंकि इनमें पूर्वपद तथा उत्तरपद का अर्थ भिन्न–भिन्न हुआ करता है। अब इसके बाद समानाधिकरण तत्पुरुष समास का निरूपण का जाएगा।

सूत्र –दिक्संख्ये संज्ञायाम् 2–1–50

सूत्रवृत्ति – पूर्वेषुकामशमी। सप्तर्षयः। संज्ञायामेवेति नियमार्थं सूत्रम्। तेनेह न – उत्तरा वृक्षाः, पञ्च ब्राह्मणाः।

सूत्रानुवाद – दिशावाची और संख्यावाची सुबन्त समानाधिकरण सुबन्तके साथ संज्ञा गम्य होने पर ही तत्पुरुष समास को प्राप्त करते हैं।

व्याख्या – इस द्विपदात्मक सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। तथैव 'पूर्वकालैकसर्वजरतपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति कर लेने पर सूत्र का अर्थ होता है कि – संज्ञा के विषय में दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त का समानाधिकरण वाले सुबन्त के साथ समास होता है। इस समास को तत्पुरुष कहते है।

संज्ञायामेवेति नियमार्थम् से यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि संज्ञा में ही दिशावाचक तथा संख्यावाचक पदों का समास होता है, अन्यथा नहीं, जैसे – उत्तरा वृक्षाः में 'उत्तरा' के सुबन्त होने पर भी संज्ञा न होने से समास नहीं होगा। इसी प्रकार पञ्च ब्राहाणाः में संज्ञा गम्यमान न होने के कारण संख्यावाचक पञ्च का सुबन्त ब्राह्मणाः के साथ समास नहीं होगा।

उदाहरण – पूर्वेषुकामशमी – 'पूर्वा च इषुकामशमी च' इस विग्रह में दिशावाचक सुबन्त 'पूर्वा' का समानाधिकरण वाले सुबन्त 'इषुकामशमी' के साथ प्रकृत सूत्र से समास होकर 'पूर्वेषुकामशमी' रूप बनता है।

सूत्र –तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च 2.1.51

सूत्रवृत्ति – तद्धितार्थे विषये, उत्तरपदे च परतः, समाहारे च वाच्ये, दिकसंख्ये प्राग्वत्। पूर्वस्यां शालायां भवः – पूर्वशाला, इति समासे जाते –

सूत्रानुवाद – तद्धित प्रत्यय के अर्थ का विषय होने पर, या उत्तरपद परे होने पर अथवा समाहार वाच्य होने पर (तीनों में से किसी एक दशा में) दिशा और संख्या के वाचक सुबन्त, समानाधिकरण सुबन्त के साथ मिलकर समास को प्राप्त करते हैं वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – इस द्विपदात्मक सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। यहाँ 'पूर्वकालैकसर्वजरत०' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की तथा दिक्संख्ये संज्ञायाम् सूत्र से 'दिक्संख्ये' की अनुवृत्ति करते हैं। तद्धितस्य अर्थः = तद्धितार्थः, षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तद्धितार्थश्च उत्तरपदं च समाहारश्चेति तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारम्, तस्मिन् = तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे, समाहारद्वन्द्वसमासः। तद्धितार्थे, उत्तरपदे समाहारे चेत्यर्थः। एकाऽपि सप्तमी विषयभेदादत्र भिद्यते। यहां तीनों में एक ही सप्तमी विषय के भेद से भिन्न–भिन्न है। तद्धितार्थे में सप्तमी वैषयिक अधिकरण में हुई है अतः तद्धितार्थ के विषय में यह अर्थ होता है। उत्तरपदे में परसप्तमी है अतः 'उत्तरपद परे होने पर यह अर्थ होता है। 'समाहारे' में यह सप्तमी वाच्याधिकरण में हुई है अतः श्समाहार की वाच्यता में यह अर्थ होता है। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होगा – तद्धित के अर्थ के विषय में, उत्तरपद परे रहते और समाहार वाच्य होने पर दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त का समानाधिकरण वाले सुबन्त के साथ समास होता है, और उस समास को तत्पुरुष कहा जाता है।

उदाहरण क्रमशः इस प्रकार होंगे –

1) **दिशावाचक – तद्धितार्थ –पूर्वस्यां शालायां भवः पौर्वशालः** । उत्तरपद परे होने पर – पूर्वा शाला प्रिया यस्य पूर्वशालाप्रियः। समाहार वाच्य होने पर दिशावाचक शब्द का समास नहीं होता है।

2) **संख्यावाचक – तद्धितार्थ में – पञ्चानां नापितानाम् अपत्यम् पाञ्चनापितिः** । उत्तरपद परे होने पर – पञ्च गावो धनं यस्य पञ्चगवधनः। समाहार वाच्य होने पर – पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्।

उदाहरण – पौर्वशालः – पूर्वस्यां शालायां भवः पौर्वशालः। यहाँ तत्र भवः के अर्थ में वक्ष्यमाण दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः सूत्र से तद्धितप्रत्यय 'ञ' करना है अतः उसकी विवक्षामात्र में ही प्रकृत तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र से दिशावाची 'पूर्वा ङि' का समानाधिकरण 'शाला ङि' के साथ समास हो जाता है। अब समास की प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सुपो धातुप्रातिपदिकयोःसे उस के अवयव सुपों का लुक् करने पर 'पूर्वाशाला' इस स्थिति में अग्रिम वार्तिक प्रवृत्त होता है–

वार्तिक – सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः।

व्याख्या – समास आदि वृत्तिमात्र में सर्वनाम के स्थान पर पुंलिङ्ग की तरह रूप हो जाता है। इसे ही पुवद्भाव कहते हैं।

प्रकृत उदाहरण में 'पूर्वाशाला' इस स्थिति प्रकृत वार्त्तिक से पूर्वा को पुंवद्भाव से 'पूर्व' हो कर पूर्वशाला बना। अब इस से तद्धितार्थ के अनुरूप सप्तमी का एकवचन ङि प्रत्यय लाकर 'पूर्वशाला ङि' इस स्थिति में अग्रिमसूत्र द्वारा तत्र भवः के अर्थ में तद्धितप्रत्यय का विधान करते हैं –

सूत्र – दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः 4.2.107

सूत्रवृत्तिः – अस्माद् भवाद्यर्थे ञः स्यादसंज्ञायाम्।

सूत्रानुवाद – दिशावाचक शब्द जिस का पूर्वपद हो ऐसे प्रातिपदिक से परे भव आदि अर्थों में तद्धितसज्ञक 'ञ' प्रत्यय हो जाता है असञ्ज्ञा में।

व्याख्या – यहाँ शेषे सूत्र का अधिकार प्राप्त है। सूत्र का अर्थ होता है संज्ञा से भिन्न विषय में वर्तमान दिशा पूर्वपद प्रातिपदिक से शैषिक अर्थों = तद्धितार्थ आदि में ञ्–प्रत्यय होता है। 'ञ' मे ञकार इत्संज्ञक है, मात्र 'अ' शेष रह जाता है। 'पूर्वशाला' में पूर्वपद 'पूर्व' दिशावाचक है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा तद्धितार्थ में ञ अ, प्रत्यय होकर 'पूर्वशाला अ' की स्थिति में –

सूत्र – तद्धितेष्वचामादेः 7.2.117

सूत्रवृत्ति – ञिति णिति च तद्धितेऽचामादेरचो वृद्धिः स्यात्। 266– यस्येति च पौर्वशालः।

सूत्रानुवाद – जिस तद्धित प्रत्यय के ञकार या णकार की इत्संज्ञा हुई हो उसके पर में अङ्ग के अचों में जो आदि (प्रथम) हो उस अच् को वृद्धि हो।

व्याख्या – सूत्र का स्पष्ट अर्थ करने के लिये 'अचो ञ्णिति' सूत्र की तथा 'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से 'वृद्धिः' की अनुवृत्ति करनी होती है। 'अङ्गस्य' का यहाँ अधिकार प्राप्त है। अब सूत्र का अर्थ होता है कि ञित् और णित् तद्धित प्रत्यय परे होने पर (अङ्गस्य) अङ्ग के अचों में से आदि 'अच्' को वृद्धि हो।

'पूर्वशाला अ' में ञित् तद्धित प्रत्यय 'अ' (ञ) परे है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा आदि अच् 'उ' के स्थान पर वृद्धि 'औ' होकर 'प् औ र्वशाला अ = पौर्वशाला अ' की स्थिति में 'यस्येति च' सूत्र से पौर्वशाला के अन्तिम 'आ' का लोप हो जाने पर पौर्वशाल् अ की स्थिति में विभक्ति कार्य आदि हो जाने पर पौर्वशालः रूप सिद्ध होता है।

उत्तरपद पर में रहने का उदाहरण – पञ्च गावो धनं यस्येति त्रिपदे बहुव्रीहौ।

पञ्चगवधनः – पञ्च गावो धनं यस्य पञ्चन् जस् गो जस्, धन सु इस विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे से त्रिपदबहुव्रीहि समास होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर पञ्चन् गो धन इस अवस्था में उत्तरपद 'धन' परे होने के कारण तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र से जो पञ्चन् संख्यावाची पद का समानाधिकरण पद

गो के साथ अवान्तर तत्पुरुषसमास होकर प्रथमानिर्दिष्ट होने से पञ्चन् का पूर्वनिपात हो जाता है। परन्तु यह समास महाविभाषाधिकार से वैकल्पिक है अतः समासाभाव में समासान्त टच् प्रत्यय नहीं हो सकेगा अतः इस अवान्तर तत्पुरुष समास को नित्य करने हेतु वार्तिक पढते हैं –

द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम् (वार्तिक) इसका तात्पर्य है कि उत्तरपद परे रहते द्वन्द्व या तत्पुरुष समास की नित्यता कही जाए। तो इस प्रकार अवान्तर तत्पुरुष समास को नित्य कर समासान्त टच् विधायक सूत्र पढते हैं –

सूत्र – गोरतद्धितलुकि 5.4.92

सूत्रवृत्ति – गोऽन्तात्तत्पुरुषाट्टच स्यात् समासान्तो न तु तद्धितलुकि। पञ्चगवधनः।

सूत्रानुवाद – यदि तद्धितलुक् न हआ हो तो, गो शब्द जिसके अन्त में ऐसे तत्पुरुष समास के परे समासान्त टच् प्रत्यय हो और वह तद्धितसंज्ञक भी हो।

व्याख्या – गोः अतद्धितलुकि यह पदच्छेद है। इस सूत्र में समासान्ताः का अधिकार प्राप्त है। तत्पुरुषस्याङ्गुलेःसे 'तत्पुरुषस्य' की अनुवृत्ति कर उसका तत्पुरुषात् ऐसा विभक्तिविपरिणाम करते हैं जो कि गोः का विशेषण है विशेषणात् तदन्तविधिः गोऽन्तात् तत्पुरुषात्। तथैव राजाहस्सखिम्यष्टच् से 'टच्' की अनुवृत्ति कर लेने पर सूत्र का अर्थ होता है – यदि तद्धित प्रत्यय का लोप न हुआ हो तो 'गो' शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे तत्पुरुष से समासान्त 'टच्' प्रत्यय हो। यहाँ अतद्धितलुकि में समास इस प्रकार है – तद्धितस्य लुक् = तद्धितलुक् (ष.त.), न तद्धितलुक् = अतद्धितलुक् (न.त.), तस्मिन् अतद्धितलुकि।

तत्पुरुष समास 'पञ्चगो' में 'गो' शब्द अन्त में है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा उससे टच् (अ), प्रत्यय हो जाने पर 'पञ्चगो अ' की अवस्था में 'एचोऽयावायावः' द्वारा 'ओ' के स्थान पर अवादेश कर 'पञ्च गव् अ = पञ्चगव' की स्थिति में अनेकमन्यपदार्थे से 'धनम्'(धन) सु , के त्रिपद बहुव्रीहि समास हो जाने पर 'पञ्चगवधन' रूप बन जाने पर पुनः प्रातिपदकसंज्ञादि विभक्तिकार्य करके 'पञ्चगवधनः' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र –तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः 1.2.42

सूत्रानुवाद – समानाधिकरण तत्पुरुष समास कर्मधारयसंज्ञक होता है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। कर्मधारय समास जो कि तत्पुरुष का एक भेद है को परिभाषित करने के लिए इस सूत्र का प्रणयन किया है। समानाधिकरण से तात्पर्य यह है कि पूर्वपद और उत्तरपद दोनों का आधार (समान विभक्त्यन्त) हो अर्थात् अर्थात् वाच्य एक ही हो। जैसे नीलमुत्पलम् इति नीलोत्पलम्।

सूत्र – संख्यापूर्वो द्विगुः 2.1.52

सूत्रवृत्ति – तद्धितार्थेत्यत्रोक्तस्त्रिविधः संख्यापूर्वो द्विगुसंज्ञः स्यात्।

सूत्रानुवाद – तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च इस सूत्र से कहा गया त्रिविध संख्यापूर्वक समास द्विगुसंज्ञक होता है।

व्याख्या – संख्यापूर्वो द्विगुः यह द्विपदात्मक सूत्र है। संख्यापूर्वः पद में संख्या पूर्वः (पूर्वावयवः) यस्य सः ऐसा बहुव्रीहि समास है। 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' इस सूत्र में कथित त्रिविध–संख्यापूर्वसमास ही यहाँ अन्यपदार्थ है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होता है –तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च इस सूत्र से कहा गया त्रिविध संख्यापूर्वक समास द्विगुसंज्ञक होता है।

उदाहरण – पञ्चगवम् – 'पञ्चानां गवां समाहारः' इस विग्रह में समाहार के वाच्य होने पर 'तद्धितार्थो...' सूत्र से पञ्चानां तथा गवां का पूर्ववत् समास होकर प्रातिपदिकत्व, सुब्लुक् आदि कर 'पञ्च गव' यह बन जाने पर पूर्वपद के संख्यावाचक होने से संख्यापूर्वो द्विगुः सूत्र से उसकी 'द्विगु' संज्ञा होती है। अब इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है दृ

सूत्र –द्विगुरेकवचनम् 2.4.1

सूत्रवृत्ति– द्विग्वर्थः समाहारः एकवत् स्यात्।

सूत्रानुवाद – द्विगु समास का अर्थ समाहार एकत्व का प्रतिपादक हो।

व्याख्या– द्विगुः एकवचनम् यह पदच्छेद है। यहाँ समाहारे का ग्रहण किया जाता है। जिससे समाहार द्विगु एकवचनवाला होता है यह अर्थ फलित होता है। यहाँ एकवचन का अर्थ है –'एकार्थवाचक'।

समाहार अर्थ में होने के कारण 'पञ्चगव' समाहारद्विगु है। अतः द्विगुरेकवचनम् सूत्र द्वारा वह एकवचन वाला हुआ। अब 'पञ्चगव सु' की स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होगा–

सूत्र – स नपुंसकम् 2.4.17

सूत्रवृत्ति – समाहारे द्विगुर्द्वन्द्वश्च नपुसकं स्यात्। पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्।

सूत्रानुवाद – समाहार में द्विगु व द्वन्द्व नपुंसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

व्याख्या – सः नपुंसकम् यह पदच्छेद है। सः से समाहार में हुए द्विगु और द्वन्द्व दोनों का ग्रहण किया जाता है। द्विगु समास के तत्पुरुष का भेद होने के कारण द्विगु के विषय में परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः का यह अपवाद है।

'पञ्चगव सु' समाहार द्विगु है। अतः स नपुंसकम् सूत्र से नपुंसक हो जाने पर प्रथमा के एकवचन में सु के स्थान पर अमादेश व पूर्वरूप करके 'पञ्चगवम्' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – विशेषणं विशेष्येण बहुलम् 2.1.57

सूत्रवृत्ति – भेदकं भेद्येन समानाधिकरणेन बहुलं प्राग्वत्। नीलम् उत्पलम् नीलोत्पलम्। बहुलग्रहणात् क्वचिन्नित्यम् – कृष्णसर्पः। क्वचिन्न – रामो जामदग्न्यः।

सूत्रानुवाद – भेदक (विशेषण) सुबन्त, समानाधिकरण भेद्य (विशेष्य) सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है। यह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। समानाधिकरण समास होने से यह कर्मधारय कहलाता है।

व्याख्या – विशेषणम्, विशेष्येण, बहुलम् यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। यहाँ 'पूर्वकालैकसर्वजरत०' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति की जाती है। भेदक (विशेषण) सुबन्त, समानाधिकरण भेद्य (विशेष्य) सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है। यह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। समानाधिकरण समास होने से यह कर्मधारय कहलाता है। विशेषण शब्द के प्रथमा निर्दिष्ट होने से उत्सर्गतः विशेषण का पूर्वनिपात होता है।

उदाहरणम् – नीलोत्पलम् – नीलम् उत्पलम् इस लौकिकविग्रह में नील सु उत्पल सु इस अलौकिकविग्रह में 'नील सु' इस विशेषण का 'उत्पल सु' इस विशेष्य के साथ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् सूत्र द्वारा समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में विशेषणम् पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः नील सु की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है – नील सु उत्पल सु अब समास की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुप् प्रत्ययों का लुक् एवं आद् गुणः से गुण एकादेश करने पर नीलोत्पल इतना बन जाने पर परवल्लिङ्ग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः के अनुसार यहां परपद अर्थात् 'उत्पल' के अनुसार समास का लिङ्ग होना चाहिये। 'उत्पल' नपुंसक है अतः समास का लिङ्ग भी नपुंसक होगा। प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय लाने पर अतोऽम् से उसे अम् आदेश तथा अमि पूर्वः से पूर्वरूप करने पर 'नीलोत्पलम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

ध्यातव्य – बहुल प्रकार से प्रवृत्त होने के कारण यह समास कहीं पर नित्य होता है। जैसे – कृष्णसर्पः – यहाँ प्रकिया दिखाने के लिए ही कृष्णः सर्पः ऐसा लौकिक विग्रह दिखाया जाता है। कृष्ण सु सर्प सु ऐसा अलौकिकविग्रह दशा में समासादिनिमित्त सुब्लुक्–पूर्वनिपातादि कार्य करके कृष्णसर्पः रूप सिद्ध होता है। वस्तुतः कृष्णसर्प जातिविशेष में रूढ होने के कारण इसका विग्रह नहीं होता।

इसी तरह बहुल ग्रहण के कारण तो कहीं कहीं यह समास होता ही नहीं। जैसे – रामो जामदग्न्यः। यहाँ विशेषण विशेष्य दोनों समानाधिकरण में विद्यमान है तथापि समास नहीं होता।

सूत्र –उपमानानि सामान्यवचनैः 2.1.55

सूत्रवृत्ति – घन इव श्यामः – घनश्यामः।

सूत्रानुवाद – उपमानवाचक सुबन्त, समानधर्म को कह चुके हुए समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त होते हैं और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – उपमानानि, सामान्यवचनैः यह द्विपदात्मक सूत्र है। समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन सूत्र से होती है। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। उपमीयते सदृशतया परिच्छिद्यते यैस्तानि उपमानानि, करणे ल्युट्। जिन के द्वारा किसी वस्त्वन्तर की तुल्यता या समानता दर्शाई जाती है उन को उपमान कहते हैं। समानस्य भावः सामान्यम्, साधारणो धर्म इत्यर्थः। सामान्यम् उक्तवन्त इति सामान्यवचनाः, तैः = सामान्यवचनैः। उपमान आर उपमेय में रहने वाली समानता (समानधर्म) को 'सामान्य' कहते हैं। जो शब्द पहले सामान्य (समानधर्म) को कह कर पुनः मत्वर्थीय अच् प्रत्यय' के बल से या

उपचार (आरोप) के कारण उस सामान्य धर्म से युक्त द्रव्य को कहने लगे तो उसे 'सामान्यवचन' कहते हैं। यथा – घन इव श्यामः (श्रीकृष्णः)। श्रीकृष्ण बादल की तरह श्यामवर्ण वाला है। यहाँ 'घन' (बादल) उपमान है। श्रीकृष्ण उपमेय है। उपमान और उपमेय में सामान्य श्यामत्व है। श्यामशब्द पहले तो श्यामगुण का वाचक होता है परन्तु बाद में श्यामगुणोऽस्त्यस्येति श्यामः (मत्वर्थीयोऽच्प्रत्ययः) इस प्रकार श्यामगुण वाले पदार्थ (श्रीकृष्ण) को कहने लग जाता है, तो अब यह श्यामशब्द सामान्यवचन हुआ। यह तत्पुरुष समास समानाधिकरण समास होने के कारण तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय सूत्र से कर्मधारयसंज्ञक होता है।

उदाहरण – घनश्यामः – धन इव श्यामः इस लौकिकविग्रह में घन सु श्याम सु इस अलौकिकविग्रह में उपमानानि सामान्यवचनैः सूत्र द्वारा तत्पुरुषसमास (कर्मधारय) हो जाने पर समाससूत्र में 'उपमानानि' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'घन सु' की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है कृ घन सु श्याम सु अब कृत्तद्धितसमासाश्च से समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से समास के अवयव सुपों का लुक् होने पर घनश्याम समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्वात् सुबुत्पत्ति के प्रसङ्ग में प्रथमा के एकवचन की विवक्ष में 'सु' प्रत्यय लाकर विभक्ति कार्य रुत्वविसर्ग कर 'घनश्यामः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

वार्तिक–शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसङ्ख्यानम्

अनुवाद – शाकप्रियः पार्थिवः – शाकपार्थिवः। देवपूजको ब्राह्मणः – देवब्राह्मणः।

व्याख्या – शाकपार्थिव आदि शब्दों की सिद्धि के लिये (पूर्वपद में स्थित) उत्तरपद के लोप का उपसंख्यान करना चाहिये। शाकपार्थिव आदि शब्दों की सिद्धि दो बार समास करने से होती है। पहले दो पदों में समास कर एक पद बना लिया जाता है। पुनः इस एक पद का अन्य समानाधिकरण पद के साथ कर्मधारयसमास किया जाता है। इस कर्मधारयसमास में पूर्व समस्त हए पद के अन्तर्गत उत्तरपद का प्रकृतवार्तिक से लोप किया जाता है। यथा – 'शाक' और 'प्रिय' पदों का अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास हो कर शाकः प्रियो यस्य सः = शाकप्रियः यह एकपद बन जाता है। अब इसका 'पार्थिवः' के साथ कर्मधारयसमास करने में पूर्वसमस्तपद (शाकप्रिय) के उत्तरपद 'प्रिय' का लोप हो कर 'शाकपार्थिवः' प्रयोग बन जाता है।

इसी प्रकार देवपूजको ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः की सिद्धि होती है। पहले देवानां पूजको देवपूजको यह षष्ठी तत्पुरुषसमास कर लिया जाता है। ततः पश्चात् देवपूजकः का ब्राह्मणः पद के साथ कर्मधारय समास किया जाता है। तब प्रकृत वार्तिक से देवपूजक शब्द के उत्तरपद पूजक का लोप करके देवपूजक रूपसिद्ध होता है। इसी प्रकार के उत्तरपद का लोपविशेष के लिए यह वार्तिक पढी गई है। समास तो वस्तुतः विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से होता है।

10.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

आशातीतः – आशाम् अतीतः इस लौकिक विग्रह में आशा अम् अतीत सु इस अलौकिक विग्रह में "द्वितीया श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः" इस सूत्र से तत्पुरुष समास करने पर समासंज्ञा होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा

सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर आशा अतीत इस अवस्था में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से समास विधायक सूत्र में द्वितीया शब्द के प्रथमानिर्दिष्ट होने से द्वितीयान्त की उपसर्जन संज्ञा होने पर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से द्वितीयान्त का पूर्वनिपात करने पर आशा अतीत इस अवस्था में सवर्णदीर्घ करने के बाद आशातीत इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय विभक्तिकार्य द्वारा रुत्वविसर्ग होने पर आशातीतः रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार नरकं पतितः = नरकपतितः, स्वर्गं गतः = स्वर्गगतः, कूपम् अत्यस्त (फेंका हुआ) = कूपात्यस्तः, सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः, संकटम् आपन्नः = संकटापन्नः इत्यादि अन्य उदाहरणों की प्रकिया भी पूर्ववत् है।

धान्यार्थः – धान्येन अर्थः (यहाँ तृतीयान्त सुबन्त धान्येन का सुबन्त अर्थ–शब्द के साथ समास होता है) इस लौकिक विग्रह में धान्य टा अर्थ सु इस अलौकिक विग्रह में तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र से समाससंज्ञा होने पर पूर्ववत् प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर धान्य अर्थ इस अवस्था में तृतीयान्त का समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने के कारण उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वनिपात करने पर धान्य अर्थ इस अवस्था में सवर्णदीर्घ के पश्चात् धान्यार्थ बनने पर समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्त्यादिकार्य करने पर धान्यार्थ रूप सिद्ध होता है।

करणकारक में तृतीयान्त का उदाहरण – नखभिन्नः– नखैः भिन्नः इस लौकिक विग्रह में नख भिस् भिन्न सु इस अलौकिकविग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् सूत्र द्वारा बहुल प्रकार से समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में अनुवर्तित 'तृतीया' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से तद्बोध्य 'नख भिस्' की उपसर्जनसंज्ञा और उपसर्जनम् पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाने पर नख भिन्न इस समास समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः द्वारा उस के अवयव (भिस् और सु) का लुक् करने पर नखभिन्न समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्व तथा प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्त्यादि कार्य करके नखभिन्नः रूप सिद्ध होता है।

गोहितम् – गोभ्यो हितम् इस लौकिक विग्रह में गो भ्यस् हित सु इस अलौकिक विग्रह में चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित.... इस सूत्र से चतुर्थ्यन्त का हितशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर चतुर्थ्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(गो शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके गो हित इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके (सु को अम्भावपूर्वरूपादि) गोहितम् रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार भूताय बलिः = भूतबलिः, गोभ्यः सुखम् = गोसुखम्, गोभ्यः रक्षितम् = गोरक्षितम् इत्यादि उदाहरणों की प्रक्रिया है।

अन्तिकादागतः – अन्तिकाद् आगतः इस विग्रह में पञ्चम्यन्त सुबन्त 'अन्तिकाद्' का सुबन्त 'क्त' प्रत्ययान्त 'आगतः' के साथ पूर्ववत् (स्तोकान्मुक्त की प्रक्रिया की तरह) समास होकर 'अन्तिकादागतः' रूप बनता है।

इसी प्रकार दूरार्थवाचक – जैसे – 'अभ्याशादागतः' में 'अभ्याशाद् आगतः' इस विग्रह में दूरीवाचक सुबन्त 'अभ्याशाद्' का 'क्त' प्रत्ययान्त 'आगतः' के साथ समास होता है। इसी तरह दूराद् आगतः = दूरादागतः इत्यादि रूप भी सिद्ध होते हैं।

समानतया कृच्छ्रशब्द के उदाहरण में भी – 'कृच्छ्राद् आगतः' इस विग्रह में पूर्ववत् समास होकर 'कृच्छ्रादागतः' रूप बनता है।

सप्तर्षयः – 'सप्त च ते ऋषयः' इस लौकिकविग्रह में सप्तन् जस् ऋषि जस् इस अलौकिक विग्रह में दिक्संख्ये संज्ञायाम् सूत्र से संख्यावाचक सुबन्त समानाधिकरण वाले सुबन्त 'ऋषयः' के साथ समास करने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर सप्तन् ऋषि इस अवस्था में सप्तन् के नकार का लोप करके सप्तर्षि इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा बहुवचन विवक्षा में जस् प्रत्यय तथा शेषविभक्ति कार्य करके सप्तर्षयः रूप सिद्ध होता है।

पञ्चगवम् – पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिकविग्रह में पञ्चन् आम्. गो आम् इस अलौकिकविग्रह में समाहार अर्थ में तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र द्वारा 'पञ्चन् आम्' इस संख्यावाचक सुबन्त का 'गो आम्' इस समानाधिकरण सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास हो जाता है। संख्यापूर्वो द्विगुः सूत्र से इस समास की द्विगुसंज्ञा भी रहती है। समासविधायक सूत्र में दिक्संख्ये यह पद अनुवर्तित होता है जो प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'पञ्चन् आम्' की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से उस का पूर्वनिपात हो जाता है कृ पञ्चन् आम्.गो आम् अब कृत्तद्धितसमासाश्च से समग्र समाससमुदाय की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुपों का लुक् तथा पञ्चन के आगे लुप्त हुई आम् विभक्ति को प्रत्ययलक्षणद्वारा मानकर पदत्व के कारण न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से पञ्चन् के नकार का लोप हो कर 'पञ्चगो' इस स्थिति में गोरतद्धितलुकि से समासान्त टच् (अ) प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप तथा एचोऽयवायावः से ओकार को अव् आदेश करने से पञ्चगव इस स्थिति में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके स्वादि उत्पत्ति विवक्षा में द्विगुरेकवचनम् सूत्र से प्रथमा एकवचन मात्र की प्राप्ति से सु–प्रत्यय करके स नपुंसकम् सूत्र द्वारा समाहार द्विगु का नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग इष्ट होने के कारण सु को अम् तथा पूर्वरूपादि कार्य करके पञ्चगवम् रूप सिद्ध होता है।

बोध प्रश्न

क) बहुविकल्पीय प्रश्न –

1. "कर्तृकरणे कृता बहुलम्" सूत्र में कृता का अर्थ है ?

   (क) कृदन्तेन (ख) कृदन्तस्य (ग) कृत् प्रत्ययेन (घ) कृत् प्रत्ययस्य

2. "तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन" सूत्र में तत्कृत का प्रयोजन है ?

   (क) अक्ष्णा काणः में समास करना (ख) अक्ष्णा काणः में समास वारण

   (ग) धान्येन अर्थः में समास करना (घ) पूर्वोक्त में कोई नहीं

3. "पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः" सूत्र है –

   (क) पञ्चमी तत्पुरुष विधायक (ख) टच् प्रत्यय विधायक

   (ग) विभक्ति का अलुग् विधायक (घ) सुब्लुक् विधायक

4. "दिक्संख्ये संज्ञायाम्" सूत्र है ?

   (क) अतिदेशसूत्र (ख) विधिसूत्र (ग) अधिकारसूत्र (घ) नियमसूत्र

5. "गोरतद्धितलुकि" सूत्र से होता है –

   (क) तद्धितलुक् (ख) टच् प्रत्यय (ग) गोशब्द को ह्रस्व (घ) वृद्धि

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

1. द्वितीया श्रितातीत .... ।
2. अर्थेन नित्यसमासो .... ।
3. ....मेकदेशिनैकाधिकरणे।
4. भेदकं ....बहुलं प्राग्वत्।
5. शाकपार्थिवादिनां ....लोपस्योपसंख्यानम्।

ग) सही/गलत का चयन करें ।

1. द्विगु की भी तत्पुरुषसंज्ञा होती हैं – सही/गलत
2. तृतीया समास में कृदन्त के ग्रहण में गतिकारकपूर्वक का ग्रहण नहीं होता – सही/गलत
3. रन्धनाय स्थाली में भी तदर्थ के कारणसमास होता है – सही/गलत
4. "तद्धितेष्वचामादेः" सूत्र आदि अच् की वृद्धि करता है – सही/गलत
5. "भेदकम्" का अर्थ विशेषण होता है – सही/गलत

अभ्यास प्रश्न

1. चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः सूत्र में तदर्थ से प्रकृतिविकृतिभाव को लेने का क्या फल है ?
2. "अर्धं नपुंसकम् सूत्र के द्वारा किस अर्ध शब्द के समास का विधान किया गया है?
3. "दिक्संख्ये संज्ञायाम्" सूत्र का सूत्रार्थ लिखे।
4. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र का सूत्रार्थ निरूपण करें।
5. पञ्चगवधनः रूपसाधन करें।

10.4 सारांश

प्रिय छात्रों इस समास सम्बन्धी द्वितीय पाठ में आपने तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास व द्विगु समास के बारे में अध्ययन किया। सर्वप्रथम तत्पुरुष के अवान्तर प्रकारों द्वितीया–तृतीया–चतुर्थी–पञ्चमी–षष्ठी–सप्तमी तत्पुरुष समासों का क्रमशः अध्ययन सोदाहरण सूत्रव्याख्या, रूपसाधन प्रक्रिया के साथ किया। उसके बाद समानाधिकरण समास के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उसी समानाधिकरण में संख्यापूर्व होने पर द्विगुसंज्ञा होती है। तत्पुरुष की ही द्विगुसंज्ञा का विधान समासान्त आदि के लिए किया जाता है यह भी आपने सोदाहरण विस्तार से जाना। साथ ही समाहार द्विगु एकवचन और नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है इसका नियम भी आपने जाना। उसके बाद समानाधिकरण समास कर्मधारय के सूत्रों का विवेचन उदाहरणपुरस्सर विस्तार से किया।

10.5 शब्दावली

गुणवचन – यह शब्द तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र में आया है। गुणमुक्तवान् इति गुणवचनः (शब्दः)। जो शब्द गुण को पहले कह कर अब द्रव्यवाचक हो चुका हो उसे यहां 'गुणवचन' कहा गया है। यथा 'श्वेत' शब्द श्वेतगुण का वाचक होकर अभेदोपचार के कारण या गुणवचनेभ्यो मतुबो लुगिष्टः (वार्तिक) के द्वारा मतुप् के लुक के कारण जब श्वेतगुणविशिष्ट पदार्थ को कहने लगता है तब वह 'गुणवचन' कहलाता है।

बहुलम् – कहीं प्रवृत्त होना, कहीं नहीं होना, कहीं विकल्प से होना और कहीं कुछ अन्य प्रकार से कार्य का सम्पन्न होना ही बहुल कहलाता है। जिसका प्रसिद्ध श्लोक है – क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव। विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

स्तोकार्थक – स्वल्पार्थक।

अन्तिकार्थक – समीपार्थक।

कृच्छ्र –कष्ट।

समांश –किसी भी वस्तु का ठीक आधा होना।

समानाधिकरण – समानम् एकम् अधिकरणम् ययोः तत् समानाधिकरण अर्थात् जिनका दो पदार्थों का समान अधिकरण = एक ही वाच्य हो वह समानाधिकरण कहलाते है।

भेदक – भेदक, व्यावर्तक, विशेषण यह पर्याय शब्द हैं। विशेषण को भेदक इसलिए कहते हैं क्योंकि वह किसी वस्तु को अन्य पदार्थ से भिन्न करता है। जैसे लाल घट कहने पर लाल रंग उससे विशिष्ट घट को अन्य पीत, हरित, कृष्ण आदिघटों से भिन्न करता है। इसी भेद करने वाले गुण के कारण विशेषण को भेदक कहते हैं।

भेद्य – विशेष्य को कहते हैं। जिसको किसी विशेषता के कारण विशेषण = भेदक के द्वारा अन्य से भिन्न दिखाया जाए उसे भेद्य कहा जाता है।

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृ हिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

10.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

क) बहुविकल्पीय प्रश्न

1– (क), 2 – (ख), 3 – (ग), 4 – (घ), 5 – (ख)

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति

1 – पतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः

2 – विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्

3 – पूर्वापराधरोत्तर

4 – भेद्येन समानाधिकरणेन

5 – सिद्धये उत्तरपदलोप।

ग) सही/गलत का चयन

1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 11 समास प्रकरण – भाग 3

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ् समास के विषय में जानेंगे।
- नञ् समास प्रकरण के सूत्रों को विस्तार से उदाहरण के साथ पढेंगे।
- नञ् समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे।
- नञ् समास के प्रवृत्ति निषेधादि के बारे में जानेंगे।
- नञ् तत्पुरुष समास के अन्त में इस प्रकरण से सम्बन्धित समासान्त प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे।
- द्वन्द्व व तत्पुरुष में समास का लिङ्गनिर्धारण (परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः इत्यादि सूत्र के माध्यम से) किस प्रकार करना है? इत्यादि ज्ञान प्राप्त करेंगे।

11.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई में आपको समास के बारे में अध्ययन करना है। पूर्व की इकाई में आपने समास के अन्य एक भेद तत्पुरुष समास का तथा उसके विधायक कतिपय सूत्रों का सोदाहरण विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जिसमें आप विशेष रूप से यह जान पाए थे कि तत्पुरुष का विधान द्वितीया से सप्तमीपर्यन्त किया जाता है। तदनन्तर आपने जाना कि तत्पुरुष का ही अन्य एक भेद है कर्मधारय जिसे विशेषण समास या समानाधिकरण समास कहते हैं, इसके अन्तर्गत दोनों समस्यमान पद प्रथमाविभक्त्यन्त होते हैं। उसके पश्चात् आपने यह भी जाना कि कर्मधारय का ही अन्य भेद द्विगु है जो कि संख्यापूर्व होने पर द्विगु समास कहलाता है इसकी ही तत्पुरुषसंज्ञा भी की है जिसका प्रयोजन समासान्तविधान है। पूर्व इकाई में इतना जानने के पश्चात् अब इस इकाई में आप तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ्

समास के बारे में जानेंगे। यही नञ् समास नञ्-तत्पुरुष के नाम से प्रसिद्ध है। आप नञ् समास के अन्तर्गत आने वाले उदाहरणों की रूपसिद्धि प्रक्रिया को भी करने में समर्थ होंगे। साथ ही तत्पुरुषप्रकरणान्तर्गत समासान्त प्रत्ययों के बारे में भी पढेंगे। इसके अतिरिक्त कतिपय उदाहरणों में समस्त पद की लिङ्गनिर्धारण व्यवस्था के बारे में भी अध्ययन करेंगे।

11.2 समास – "नञ्" सूत्र से "अर्धर्चाः पुंसि च" सूत्रपर्यन्त

सूत्र – नञ् 2.2.6

सूत्रवृत्ति – नञ् सुपा सह समस्यते।

सूत्रानुवाद – नञ् इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है।

व्याख्या – यह एक पदात्मक सूत्र है। 'नञ्' प्रथमान्त पद है। "सह सुपा" सूत्र से सुपा पद की अनुवृत्ति है। "तत्पुरुषः" एवं "समासः" का अधिकार है। इस सूत्र में निषेधार्थक नञ् का ग्रहण है न कि नञ् प्रत्यय का जो "स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ" इत्यादि सूत्र से विहित है। नञ् के ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर "न" शेष बचता है। यहाँ "न" का ग्रहण नहीं है यद्यपि वह भी निषेधार्थक है और नञ् के अवशिष्ट न के सदृश ही दिखता है। इस प्रकार नञ् सूत्र का फलितार्थ होगा– नञ् (निषेधार्थक) का समर्थ-सुबन्त के साथ समास होता है। यह समास तत्पुरुष का ही एक भेद है।

सूत्र – नलोपो नञः 6.3.73

सूत्रवृत्ति – नञो नस्य लोपः उत्तरपदे। न ब्राह्मणः अब्राह्मणः।

सूत्रानुवाद – उत्तरपद के पर में होने पर नञ् के नकार का लोप होता है।

व्याख्या – नलोपः नञः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। 'नलोपः' प्रथमान्त पद, 'नञः' षष्ठ्यन्त पद है। यहाँ न लुप्तषष्ठीकपद है। "अलुगुत्तरपदे" सूत्र से उत्तरपद की अनुवृत्ति हुई है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है– नञ् के नकार का उत्तर पद के पर में रहने पर लोप होता है।

उदाहरण – अब्राह्मणः (ब्राह्मण से भिन्न परन्तु क्षत्रिय जैसा) – न ब्राह्मण इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह में नञ् सूत्र से समास हुआ। प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति का लुक् करके न ब्राह्मण बना। प्रथमा निर्दिष्ट न की उपसर्जन संज्ञा और उसका पूर्व निपात। नलोपो नञः इस सूत्र से ब्राह्मण पद उत्तर पद में होने के कारण न के नकार का लोप हुआ, स्थिति हुई अ ब्राह्मण– अब्राह्मण। एकदेशविकृतन्यायेन अब्राह्मण को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर अब्राह्मणः रूप सिद्ध हुआ। यद्यपि यहाँ निषेध हुआ है तथापि तत्पुरुष समास होने के कारण उत्तर पद की ही प्रधानता होती है।

सूत्र – तस्मान्नुडचि 6.3.74

सूत्रवृत्ति – लुप्तनकारात् नञः उत्तरपदस्याजादे 'नुट्' आगमः स्यात्। अनश्वः। नैकधा इयादौ तु न शब्देन सह सुप्सुपेति समासः।

सूत्रानुवाद – नञ् सम्बन्धी नकार का लोप होने पर उससे परवर्ती अजादि उत्तर पद को नुट् आगम होता है।

व्याख्या – तस्मात्, नुट्, अचि यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। 'तस्मात्' पञ्चम्यन्त पद, 'नुट्' प्रथमान्त पद, 'अचि' सप्तम्यन्त पद। नलोपो नञः सूत्र से नञः तथा अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपद की अनुवृत्ति होती है। "यस्मिन्विधिः०" परिभाषा से अचि में तदादि विधि हो जाती है उत्तर पद का विशेषण होने के कारण। इस प्रकार अजादौ उत्तरपदे अर्थ मिलता है। तस्मात् पद से "नलोपो नञः" सूत्र के द्वारा लुप्त नकार का परामर्श होता है सर्वनाम्नः पूर्वपरामर्शित्वात्। अतः "तस्मादित्युत्तरस्य" परिभाषासूत्र द्वारा नञ् से पर को नुट् आगम प्राप्त हुआ और "तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य" परिभाषासूत्र के द्वारा अच् से अव्यवहित पूर्व को आगम प्राप्त हुआ, इस अवस्था में आगम किसको हो इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होती है तब "उभयनिर्देशे पञ्चमीनिर्देशो बलीयान्" परिभाषा के द्वारा पंचमी निर्देश की बलवत्ता सिद्ध हुई इस प्रकार से नञ् से पर को नुट् आगम होगा अर्थात् पर में विद्यमान अच् को। नुट् आगम टित् होने के कारण "आद्यन्तौ टकितौ" सूत्र से अजादि उत्तर पद का आद्यवयव के रूप में होगा। नैकधा इत्यादि में न शब्द के साथ समास है न कि नञ् के साथ अतः वहाँ पर "नलोपो नञः" तथा "तस्मान्नुडचि" इन दोनों सूत्रों की प्रवृत्ति नहीं होती है अतः नैकधा में सुप्सुपा समास होता है।

उदाहरण – अनश्वः (घोड़े से भिन्न) – न अश्वः इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा न अश्व सु में "नञ्" सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर न अश्व इस अवस्था में न की "प्रथमा निर्दिष्टे समास उपसर्जनम्" के द्वारा उपसर्जन संज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" से पूर्व निपात होने पर न अश्व होने पर "नलोपो नञः" से न के न् का लोप होने पर अ अश्व इस स्थिति में "तस्मान्नुडचि" के द्वारा अश्व को नुट् आगम होने पर नुट् का अनुबन्ध लोप होने पर अश्व के आद्यवयव के रूप में आगम होने पर अ न् अश्व होने पर वर्णसम्मेलन करने से अनश्व रूप बना। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन अनश्व को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर अनश्वः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – कुगतिप्रादयः 2.2.18

सूत्रवृत्ति – एते समर्थेन नित्यं समस्यन्ते। कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः।

सूत्रानुवाद – कु-शब्द, गतिसंज्ञक शब्द और प्र आदि का समर्थ सुबन्त शब्दों से नित्य समास होता है।

व्याख्या – प्र आदौ येषां ते प्रादयः। कुश्च गतिश्च प्रादयश्च तेषाम् इतरेतर द्वन्द्वः कुगतिप्रादयः। एकपदात्मकं सूत्रमिदम्। कुगतिप्रादयः प्रथमान्तं पदम्। "नित्यं क्रीडाजीविकयोः" सूत्र से नित्यम् पद की अनुवृत्ति। गति तथा प्रादि के साथ कु का पाठ होने के कारण कु भी यहाँ कुत्सितवाचक निपात ही गृहीत है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि कु (कुत्सितवाचक निपात), गतिसंज्ञक शब्द तथा च प्र आदि शब्द समर्थ सुबन्त के साथ मिलकर नित्य समास करते हैं।

उदाहरण – कुपुरुषः (निन्दित पुरुष) – कुत्सितः पुरुषः इस लौकिकविग्रह वाक्य में तथा कु पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर कुपुरुष होने पर कु की उपसर्जन संज्ञा तथा पूर्व निपात करने पर कुपुरुष रूप बना। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन से कुपुरुष को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर कुपुरुषः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ऊर्यादिच्विडाचश्च 1.4.61

सूत्रवृत्ति – ऊर्यादयः च्व्यन्ताः, डाजन्ताश्च क्रियायोगे गतिसंज्ञाः स्युः। ऊरीकृत्य। शुक्लीकृत्य। पटपटाकृत्य। सुपुरुषः। (प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया।) प्रगतः आचार्यः प्राचार्यः। (अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।) अतिक्रान्तो मालामिति विग्रहे –

सूत्रानुवाद – ऊरी आदि शब्द, च्वि प्रत्ययान्त शब्द तथा डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में "गति" संज्ञक होते हैं।

व्याख्या – ऊरी आदिर्येषां ते ऊर्यादयः। ऊर्यादयश्च च्विश्च डाच् च् तेषामितरेतरद्वन्द्व ऊर्यादिच्विडाचः। ऊर्यादिच्विडाचः च यह पदच्छेद है। 'ऊर्यादिच्विडाचः' प्रथमान्त पद, च अव्यय। उपसर्गाः क्रियायोगे से क्रियायोगे की अनुवृत्ति तथा गतिश्च सूत्र से वचनपरिणाम करके गतयः पद की अनुवृत्ति हुई। "प्रत्ययग्रहणे तदन्ताः ग्राह्याः" परिभाषा के द्वारा च्वि-प्रत्ययान्त तथा डाच्-प्रत्ययान्त अर्थ प्राप्त हुआ है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है ऊरी आदि गणपठित शब्द, च्वि-प्रत्ययान्त शब्द और डाच्-प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गतिसंज्ञक होते हैं। गतिसंज्ञा होने के पश्चात् "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास हो जाता है।

उदाहरण – ऊरीकृत्य (स्वीकार करके) – ऊरी कृत्वा इस अलौकिक तथा लौकिक विग्रह वाक्य में "ऊर्यादिच्विडाचश्च" सूत्र के द्वारा गति संज्ञा करने पर "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास हो जाता है। तदनन्तर प्रातिपदिकसंज्ञा करने पर ऊरीकृत्वा बन जाता है। तत्पश्चात् कृदन्तकार्य होकर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् तथा च तुगागम होकर ऊरीकृत्य हो जाता है। सुबादि कार्य होने पर अव्ययत्वात् सुप् का लुक् करने पर ऊरीकृत्य रूप सिद्ध हो जाता है।

(वा.) "प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया – प्र, परा आदि का प्रथमान्त सुबन्त के साथ "गत" आदि अर्थों में समास होता है। उदाहरण– प्रगतः आचार्यः प्राचार्यः।

(वा.) "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" – "क्रान्त" आदि अर्थों में अति आदि निपातों का द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। अतिक्रान्तो मालाम् इस स्थिति में

सूत्र – एकविभक्ति चापूर्वनिपाते 1.2.44

सूत्रवृत्ति – विग्रहे यन्नियतविभक्तिकं तदुपसर्जनसंज्ञं स्याद् न तु तस्य पूर्वनिपातः।

सूत्रानुवाद – विग्रह वाक्य में जो नियत विभक्त्यन्त पद हो, उसकी "उपसर्जन" संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

व्याख्या – एका विभक्तिः यस्य तद् एकविभक्ति, बहुव्रीहिः। पूर्वश्चासौ निपातश्चेति पूर्वनिपातः, कर्मधारयः। न पूर्वनिपातः अपूर्वनिपातः तस्मिन् अपूर्वनिपाते, नञ्तत्पुरुषः। एकविभक्ति प्रथमान्त पद, च अव्यय, अपूर्वनिपाते सप्तम्यन्त पद। त्रिपदात्मक सूत्र है। "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" सूत्र से समासे तथा उपसर्जनम् की अनुवृत्ति हुई है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि विग्रह कि दशा में नियत विभक्ति वाले पद की उपसर्जन संज्ञा होती है और उपसर्जन संज्ञा को उद्देश्य करके होने वाले सभी कार्य होंगे किन्तु पूर्व निपात नहीं होगा।

सूत्र – गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य 1.2.48

सूत्रवृत्ति – उपसर्जनं यो गोशब्दः, स्त्री प्रत्ययान्तं च, तदन्तस्य प्रातिपदिकस्य ह्रस्वः स्यात्। अतिमालः। (वा.) अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः। (वा.) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः। (वा.) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः।

सूत्रानुवाद – उपसर्जनसंज्ञक गो शब्द और उपसर्जन स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है।

व्याख्या – गौश्च स्त्री च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वः गोस्त्रियौ, तयोः गोस्त्रियोः। गोस्त्रियोः उपसर्जनस्य द्विपदात्मक यह सूत्र है। 'गोस्त्रियोः' षष्ठ्यन्त पद, उपसर्जनस्य षष्ठ्यन्त पद है। "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकान्तस्य" सूत्र से ह्रस्व तथा प्रातिपदिकस्य पद की अनुवृत्ति हुई है। यहाँ गो से गो शब्द तथा स्त्री पद से स्त्रियाम् सूत्र के अधिकार में विहित टाप्, डाप्, चाबादि का ग्रहण है न कि स्त्री स्वरूप का। प्रत्यय ग्रहण के कारण "प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्" परिभाषा से स्त्रीप्रत्ययान्त का ही ग्रहण होगा। इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ है – उपसर्जन गोशब्दान्त तथा उपसर्जन स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक के अन्तिम "अच्" को ह्रस्व होता है।

उदाहरण – **अतिमालः** – मालाम् अतिक्रान्तः इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा माला अम् अति इस अलौकिक विग्रह वाक्य में "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया"से अतिक्रमण अर्थ में विद्यमान अव्यय अति का द्वितीयान्त माला पद के साथ समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर माला अति इस स्थिति में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" के द्वारा अति की उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्वनिपात। अति माला इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् करने पर अति माला सु इस स्थिति में "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" के द्वारा नियत विभक्ति वाले माला पद की उपसर्जन संज्ञा करने पर किन्तु पूर्व निपात न करने पर अति माला सु इस स्थिति में "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" से उपसर्जन संज्ञक माला के अन्तिम "अच्" को ह्रस्व करने पर अति माल सु इस स्थिति में सु का अनुबन्ध लोप तदनन्तर रुत्वविसर्ग करने पर "अतिमालः" रूप सिद्ध होता है।

(वा.) अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः।– तृतीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ क्रुष्ट(कूजित) आदि अर्थों में विद्यमान "अव" का समास होता है। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः।

(वा.) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः। – ग्लानि आदि अर्थों में विद्यमान "परि" आदि का चतुर्थ्यन्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः।

(वा.) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः। – "क्रान्त" आदि अर्थों में 'निर्' आदि का पञ्चम्यन्त सुबन्त के साथ समास होता है। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः।

सूत्र – तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् 3.1.92

सूत्रवृत्ति – सप्तम्यन्ते पदे कर्मणीत्यादौ वाच्यत्वेन स्थितं यत्कुभादितद्वाचकं पदमुपपदं स्यात्।

सूत्रानुवाद – धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत कर्मण्यण्" आदि सूत्रों में कर्मणि सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट जो कुम्भ आदि, तद्वाचक पद की उपपदसंज्ञा होती है।

व्याख्या – सप्तम्यां तिष्ठति इति सप्तमीस्थम्। तत्र, उपपदम्, सप्तमीस्थम् यह पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। यहाँ "धातोः" का अधिकार है। सूत्रस्थ "तत्र" पद का यह तात्पर्य है कि धात्वधिकार से, सप्तमीस्थ का अर्थ है सप्तमी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट। "कर्मण्यण्" इत्यादि सूत्रों में "कर्मणि" आदि सप्तम्यन्त पद आये हैं, उसमें "कुम्भ" आदि अर्थ वाच्यरूप से स्थित हैं क्योंकि वाचक पद के अन्तर्गत अर्थ वाच्यरूप में रहा करता है तथा वाचक पद अपने अर्थ में वाचकरूप में। अतः उस अर्थ का वाचक पद "कुम्भ" इत्यादि "कुम्भं करोतीति कुम्भकारः इत्यादि उदाहरणों में आता है। अतएव इसकी उपपद संज्ञा होती है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ अर्थ यह है कि धातु अधिकार में सप्तमी-विभक्ति से निर्दिष्ट पद उपपद संज्ञक होता है अर्थात् सप्तम्यन्त "कर्मणि" इत्यादि में वाच्य रूप से स्थित जो कुम्भादि उसके वाचक पद की उपपद संज्ञा होती है।

सूत्र – उपपदमतिङ् 2.2.19

सूत्रवृत्ति – उपपदं सुबन्तं समर्थेन नित्यं समस्यते, अतिङन्तश्चायं समासः। कुम्भं करोति इति कुम्भकारः। अतिङ् किम्? मा भवान् भूत, माङि लुङिति सप्तमीनिर्देशात् माङुपपदम्। (वा.) गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः। व्याघ्री। अश्वक्रीती। कच्छपीत्यादि।

सूत्रानुवाद – उपपदसंज्ञक सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य से समास होता है। तिङ् भिन्नों का ही यह समास है। अर्थात् तिङन्त के साथ समास नहीं होगा।

व्याख्या – उपपदम्, अतिङ् यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। "सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे" सूत्र से सुप् की तथा "नित्यं क्रीडाजीविकयोः" सूत्र से नित्यम् पद की अनुवृत्ति हुई है। समर्थः, समासः तथा तत्पुरुषः का अधिकार अनुवर्तित है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ होगा कि उपपद सुबन्त का समर्थ के साथ नित्य समास होता है और वह समास अतिङन्त होता है। अर्थात् उपपद का तिङन्त भिन्न समर्थ शब्द के साथ नित्य समास होता है। यह समास भी तत्पुरुष होता है।

अतिङ् किम् ? – (सूत्र में अतिङ् का क्या प्रयोजन है यह प्रश्न का तात्पर्य है) मा भवान् भूत में समास न हो। इसमें "मा" उपपद है क्योंकि "माङि लुङिति सप्तमीनिर्देशात् माङुपपदम्"। किन्तु भूत् के तिङ् होने के कारण यहाँ समास नहीं होगा।

उदाहरण – कुम्भकारः (घड़े को बनाने वाला) – कुम्भं करोति इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा कुम्भ अम् कृ इस अलौकिक विग्रह वाक्य में कुम्भ अम् की "उपपदमतिङ्" से उपपदसंज्ञा करके कर्मण्यण् सूत्र से अण् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, वृद्धि आदि करके कृ धातु से "कार" बन जाने पर "कर्तृकर्मणोः कृति" सूत्र से कुम्भ शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति के लगने पर द्वितीया विभक्ति की निवृत्ति हो जाती है तत्पश्चात् कुम्भ ङस् कार इस स्थिति में "उपपदमतिङ्" से समास होने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" सूत्र से कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञा करके सुब्लुक् करके कुम्भकार बन जाता है। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन कुम्भकार को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर कुम्भकारः रूप सिद्ध हुआ।

(वा.) गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः। – गति, कारक, और उपपद का कृदन्तपदों के साथ समास सुब् उत्पत्ति से पहले हो जाता है। व्याघ्री। अश्वक्रीती। कच्छपीत्यादि।

उदाहरण – व्याघ्री – व्याजिघ्रति इस विग्रह में तथा वि आ पूर्वक घ्रा धातु से "आतश्चोपसर्गे" सूत्र से "क" प्रत्यय करने पर तथा व्या का घ्रा के साथ समास सुप् उत्पत्ति से पूर्व ही हो जाता है तत्पश्चात् "व्याघ्र" शब्द के जातिवाचक होने के कारण "जातेरस्त्रीविषयाद् अयोपधात्" सूत्र से ङीष् प्रत्यय होकर सुप् उत्पत्ति करके "हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्" सूत्र के द्वारा सुप् का लुक् करने पर "व्याघ्री" रूप बनता है।

इसी प्रकार कारक समास का उदाहरण है – अश्वक्रीती अश्वेन क्रीता। उपपद समास का उदाहरण है– कच्छपी कच्छेन पिबति।

सूत्र – तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः 5.4.86

सूत्रवृत्ति – संख्याव्ययादेरङ्गुल्यन्तस्य समासान्तः अच् स्यात्। द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य द्व्यङ्गुलम्। निर्गतमङ्गुलिभ्यः निरङ्गुलम्।

सूत्रानुवाद – संख्यावाचक शब्द या अव्ययशब्द जिसके आदि में हों तथा अंगुलिशब्द जिसके अन्त में हो, ऐसे समाससंज्ञक तत्पुरुष को समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – संख्या च अव्ययं च तयोः समाहारद्वन्द्वः, संख्याव्ययम्, संख्याव्ययम् आदिः यस्य स संख्याव्ययादिः तस्य। तत्पुरुषस्य, अङ्गुलेः, संख्याव्ययादेः यह पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। "अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः" सूत्र से अच् की अनुवृत्ति हुई है। ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च सूत्रों का अधिकार है। अङ्गुलेः यह "तत्पुरुष" का विशेषण है अतः येन विधिस्तदन्तस्य के द्वारा तदन्त विधि होकर "अङ्गुल्यन्तस्य तत्पुरुषस्य" अर्थ मिल जाता है। इसी प्रकार संख्याऽव्ययादेः पद का भी तत्पुरुष के साथ अन्वय होगा। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ होगा कि

संख्यावाचक और अव्ययवाचक शब्द जिस तत्पुरुष के आदि में तथा अंगुली शब्द के अन्त में हो उस तत्पुरुष से परे समासान्त "अच्" प्रत्यय होता है।

सूत्र – अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः 5.4.87

सूत्रवृत्ति – एभ्यो रात्रेरच् स्यात् चात्सङ्ख्याव्ययादेः। अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम्।

सूत्रानुवाद – अहन्, सर्व, एकदेशवाचक, सङ्घात और पुण्य इन शब्दों से तथा चकारात् संख्यावाचक एवं अव्यय शब्दों से परे भी जो रात्रि शब्द, उससे समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – अहश्च सर्वश्च एकदेशश्च संख्यातश्च पुण्यञ्च तेषां समाहारः अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यम्, तस्मात्। अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात्, च, रात्रेः यह त्रिपदात्मक सूत्र है। 'अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात्' पञ्चम्यन्त पद है 'च' अव्यय 'रात्रेः' षष्ठ्यन्त पद है। "तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः" सूत्र से तत्पुरुष की अनुवृत्ति है, "अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः" सूत्र से अच् की अनुवृत्ति हुई है। ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च सूत्रों का अधिकार है। चकार से पूर्व सूत्र से "संख्याव्ययादेः" पद का ग्रहण होता है। रात्रेः पद तत्पुरुष का विशेषण है अतः तदन्त विधि के द्वारा रात्र्यन्तस्य तत्पुरुषस्य अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि अहन्, सर्व, एकदेशवाचक, संख्यात और पुण्य इन शब्दों के परे जो रात्रिशब्द, तदन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। अहन् का ग्रहण द्वन्द्व समास के लिए हुआ है क्योंकि अहन् शब्द से परे रात्रि शब्द द्वन्द्व समास में ही संभव है।

सूत्र – रात्राह्नाहाः पुंसि 2.4.29

सूत्रवृत्ति – एतदन्तौ द्वन्द्वतत्पुरुषौ पुंस्येव। अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः। सर्वरात्रः। संख्यातरात्रः। **वा0 – संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबं।** द्विरात्रम्। त्रिरात्रम्।

सूत्रानुवाद – यदि द्वन्द्व तथा तत्पुरुष के अन्त में रात्र, अह्न और अह शब्द हों तो वे पुंल्लिंग में ही होते हैं।

व्याख्या – रात्रश्च अह्नश्च अहन् च तेषामितरेतरद्वन्द्वः रात्राह्नाहाः। रात्राह्नाहाः, पुंसि यह सूत्र का पदच्छेद है। द्विपदात्मक यह सूत्र है। रात्राह्नाहाः प्रथमान्त पद है, पुंसि सप्तम्यन्त पद है। द्वन्द्वतत्पुरुषयोः पद की अनुवृत्ति हुई है तदन्तर उसका विभक्ति परिणाम होकर द्वन्द्वतत्पुरुषौ बन जाता है। रात्राह्नाहाः द्वन्द्व तत्पुरुषौ का विशेषण है अतः तदन्तविधि के द्वारा "रात्राह्नाहान्तौ द्वन्द्वतत्पुरुषौ" बन जाता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि रात्र, अह्न, अहन् अन्त वाले शब्द द्वन्द्व और तत्पुरुष-समास में पुंल्लिंग ही होते हैं। अहोरात्रः, सर्वरात्रः, संख्यारात्रः आदि उदाहरण है।

सूत्र – राजाहः सखिभ्यष्टच् 5.4.91

सूत्रवृत्ति – एदन्तात्तत्पुरुषात् टच् स्यात्। परमराजः।

सूत्रानुवाद – राजन्, अहन्, और सखि अन्त में हो, ऐसे शब्दों से समास हो जाने के बाद समास के अन्त्यावयव के रूप में टच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – राजा च अहश्च सखा च तेषामितरेतरद्वन्द्वः राजाहःसखायस्तेभ्यः। राजाहःसखिभ्यः, टच् यह द्विपदात्मक सूत्र है। राजाहःसखिभ्यः पञ्चम्यन्त पद है, टच् प्रथमान्त पद है। राजाहःसखिभ्यः तत्पुरुषात् का विशेषण है अतः तदन्तविधि होकर राजन् अहन् सखि– इत्येदन्तात् तत्पुरुषात् अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ अर्थ है कि राजन्, अहन्, और सखि– ये शब्द जिसके अन्त में होते हैं ऐसे तत्पुरुष समास से परे टच् प्रत्यय हो जाता है और वह समास का ही अन्तावयव होता है।

उदाहरण – परमराजः – परमश्चासौ राजा इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा परम् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा सुप् लुक् होने पर परम की उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्व निपात करके परमराजन् बना। इस स्थिति में "राजाहःसखिभ्यष्टच्" सूत्र के द्वारा टच् करने पर परमराजन् अ इस स्थिति में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप करने पर परमराज् अ इस स्थिते में वर्ण संयोग करके परमराज बना तदन्तर सुबादि उत्पत्ति करने पर परमराजः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः 6.3.46

सूत्रवृत्ति – महत आकारोन्तोऽदेशः स्यात् समानाधिकरणे उत्तरपदे, जातीये च परे। महाराजः। प्रकारवचने जातीयर्। महाप्रकारो महाजातीयः।

सूत्रानुवाद – समानाधिकरण उत्तर पद तथा जातीय प्रत्यय के परे होने पर "महत्" शब्द को आकार अन्तादेश होता है।

व्याख्या – समानाधिकरणं च जातीयश्च तयोः इतरेतरद्वन्द्वः समानाधिकरणजातीयौ, तयोः समानाधिकरणजातीययोः। आत्, महतः, समानाधिकरणजातीययोः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपदे पद की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद का अन्वय केवल समानाधिकरणे के साथ है जातीयर् के साथ नहीं। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि महत् शब्द के स्थान पर आकारादेश हो जाता है यदि समानाधिकरण उत्तर पद परे हो या जातीयर् प्रत्यय परे हो तो। "अलोऽन्त्यस्य" के द्वारा अन्त के स्थान पर आदेश प्राप्त होगा यह अर्थ प्राप्त हुआ है।

उदाहरण – महाराजः – महान् च असौ राजा इस लौकिक विग्रह वाक्य में महान् तथा राजा का समानाधिकरण समास होकर महत् राजन् रूप बन जाने पर प्रकृत सूत्र से त् के स्थान पर आ होकर मह आ राजन् बन जाने पर "राजाहः सखिभ्यष्टच्" सूत्र के द्वारा टच् करने पर महाराजन् अ इस स्थिति में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप करने पर महाराज् अ इस स्थिते में वर्ण संयोग करके महाराज बना तदन्तर सुबादि उत्पत्ति करके महाराजः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः 6.3.47

सूत्रवृत्तिः – आत् स्यात्। द्वौ च दश च द्वादश। अष्टाविंशतिः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहि समास में तथा "अशीति" शब्द परे न हो तो संख्यावाचक उत्तरपद रहने पर द्वि और अष्टन के स्थान पर आकार अन्तादेश होता है।

व्याख्या – द्वौ च अष्टौ च तयोः समाहारद्वन्द्वः द्वयष्टन, तस्मात् द्वयष्टनः। बहुव्रीहिश्च अशीतिश्च तयोरितरेतरद्वन्द्वो बहुव्रीह्यशीती, तयोः बहुव्रीह्यशीत्योः। न बहुव्रीह्यशीत्योः अबहुव्रीह्यशीत्योः। द्वयष्टनः, संख्यायाम्, अबहुव्रीह्यशीत्योः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपदे पद की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपदे का संबंध संख्यायाम् तथा अशीत्याम् पद के ही साथ केवल है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है कि द्वि तथा अष्टन् शब्द के स्थान पर आकारदेश है संख्यावाचक उत्तरपद पर में हो तो किन्तु यह कार्य बहुव्रीहि तथा अशीति पद में नहीं होगा। "अलोऽन्त्यस्य" के द्वारा अन्त के स्थान पर आदेश प्राप्त होगा यह अर्थ प्राप्त हुआ है।

उदाहरण – **द्वादश** – द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा द्वि औ दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह वाक्य में चार्थे द्वन्द्वः से द्वन्द्व समास, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक् होकर अल्प अच् वाले द्वि का पूर्व प्रयोग करने पर द्विदशन् में द्वयष्टनः संख्यायाम० इत्यादि सूत्र से द्वि के इकार के स्थान पर आकार आदेश होकर द्वादशन् बना। यह बहुवचनान्त ही होता है अतः जस् का विधान हुआ है। तत्पश्चात् "ष्णान्ता षट्" के द्वारा द्वादशन् की षट्संज्ञा होने पर षड्भ्यो लुक् से जस् का लुक् करके द्वादशन् बना। "नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य" से नकार का लोप होने पर द्वादश रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – त्रेस्त्रयः 6.3.48

सूत्रवृत्ति – त्रयोदशः। त्रयोविंशतिः। त्रयस्त्रिंशत्।

सूत्रानुवाद – त्रि-शब्द के स्थान पर त्रयस् आदेश होता है, संख्यावाचक शब्द के उत्तरपद में रहते किन्तु यह कार्य बहुव्रीहिसमास एवं अशीति शब्द के परे रहते नहीं होता।

व्याख्या – त्रेः, त्रयः यह सूत्र का पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। त्रेः षष्ठ्यन्त पद है, त्रयः प्रथमान्त पद है। "द्वयष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः" से संख्यायाम् और अबहुव्रीह्यशीत्योः एवं "अलुगुत्तरपदे" से उत्तरपदे की अनुवृत्ति आती है। इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ सिद्ध होता है कि – त्रि-शब्द के स्थान पर त्रयस् आदेश होता है, संख्यावाचक शब्द के उत्तरपद में रहते परन्तु यह कार्य बहुव्रीहिसमास एवं अशीति शब्द के परे रहते नहीं होता है।

सूत्र – परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः 2.4.26

सूत्रवृत्ति – एतयोः परपदस्येव लिङ्गं स्यात्। कुक्कुटमयूर्याविमे। मयूरीकुक्कुटाविमौ। अर्धपिप्पली। (द्विगुप्राप्तापन्नलम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः) पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः पुरोडाशः।

सूत्रानुवाद – द्वन्द्व तथा तत्पुरुष समास का लिंग उस समास के उत्तर के लिंग के समान होता है।

व्याख्या – परस्य इव परवत्। द्वन्द्वश्च तत्पुरुषश्च द्वन्द्व तत्पुरुषौ, तयोः द्वन्द्वतत्पुरुषयोः। परवत्, लिङ्गम्, द्वन्द्वतत्पुरुषयोः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। इस सूत्र के द्वारा समास में लिंग निर्धारण होता है।

उदाहरण – कुक्कुटमयूर्यौ – कुक्कुटश्च मयूरी च इस विग्रह में द्वन्द्व समास होकर "कुक्कुट मयूरी" रूप बनता है। यहाँ उत्तर पद में मयूरी है और वह स्त्रीलिंग है अतः "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र से समस्त पद स्त्रीलिंग में होगा इस प्रकार से कुक्कुटमयूर्यौ रूप सिद्ध होता है।

(वा.) द्विगुप्राप्तापन्नलम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः। द्विगु समास, प्राप्त, आपन्न, और अलंपूर्वक समास तथा गति समास में पर शब्द के समान लिंग नहीं होता है। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः पुरोडाशः।

सूत्र – प्राप्तापन्ने च द्वितीयया 2.2.4

सूत्रवृत्ति – समस्येते। अकारश्चानयोरन्तादेशः। प्राप्तो जीविकां प्राप्तजीविकः। आपन्नजीविकः। अलं कुमार्यै– अलंकुमारिः। अतएव ज्ञापकात् समासः। निष्कौशाम्बिः।

सूत्रानुवाद – प्राप्त और आपन्न सुबन्तों का द्वितीयान्त सुबन्त के साथ समास होता है। इसको भी तत्पुरुष कहा जाता है।

व्याख्या – प्राप्तम् आपन्नं च तयोः इतरेतरद्वन्द्वः प्राप्तापन्ने। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः, विभाषा अन्यतरस्याम् आदि पदों की अनुवृत्ति तथा अधिकार है। यह सूत्र द्वितीया श्रितातीतपतित० इत्यादि सूत्र का अपवाद सूत्र है।

सूत्र – अर्धर्चाः पुंसि च 2.4.31

सूत्रवृत्ति – अर्धर्चादयः शब्दाः पुंसि क्लीबे च स्युः। अर्धर्चः। अर्धर्चम्। एवं ध्वज-तीर्थ-शरीर-मण्डप-यूप-देहाङ्कुश-पात्र-सूत्रादयः। सामान्ये नपुंसकम्। मृदु पचति। प्रातः कमनीयम्।

सूत्रानुवाद – अर्धर्च आदि गण में पठित सभी शब्द पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंग दोनों में होते हैं।

व्याख्या – अर्धर्चाः, पुंसि, च यह सूत्र का पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में अर्ध नपुंसकम् से नपुंसकम् की अनुवृत्ति हुई है। अर्धर्चादि एक गण है जिसमें अर्धर्च, गोमय, कषाय आदि शब्द आते हैं।

उदाहरण – "अर्धम् ऋचः" इस विग्रह में समास होकर अर्धर्च रूप बनने पर पुंल्लिंग में अर्धर्चः तथा नपुंसकलिंग अर्धर्चम् रूप बनता है। इसी प्रकार गोमय आदि शब्दों के भी रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

11.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन-प्रक्रिया

प्राचार्यः – प्रगतः आचार्यः इस अर्थ में प्र आचार्य सु इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "प्रादयः गताद्यर्थे प्रथमया" से गतादि अर्थ में समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् "प्रथमानिर्दिष्टं समास

उपसर्जनम्" से प्र की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब प्र आचार्य रूप बना "अकः सवर्णे दीर्घः" से सवर्ण दीर्घ हुआ, स्वादि-उत्पत्ति होने से प्राचार्यः रूपसिद्ध हुआ।

सुपुरुषः – शोभनः पुरुषः इस अर्थ की विवक्षा में सु पुरुष सु इस दशा में "कुगतिप्रादयः" से समास हुआ। अवशिष्ट सुबादि उत्पत्ति प्रक्रिया पूर्ववत् होती है।

अवकोकिलः – अवक्रुष्टः कोकिलया इस अर्थ मे अव कोकिला टा इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया" इस वार्तिक से तृतीयार्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से अव की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ अव कोकिला इस स्थिति में स्वादि-उत्पत्ति होने से अवकोकिला रूपसिद्ध हुआ।

पर्यध्ययनः – ग्लानः अध्ययनाय इस अर्थ मे परि अध्ययन ङे इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "पर्यादयः ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या" इस वार्तिक से चतुर्थ्यर्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से परि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब परि अध्ययन हुआ, स्वादि-उत्पत्ति होने से पर्यध्ययनः रूपसिद्ध हुआ।

निष्कौशाम्बिः – निष्क्रान्त्याः कौशाम्ब्याः इस अर्थ मे निर् कौशाम्बी इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या" इस वार्तिक से चतुर्थ्यर्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से निर् की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब निर् कौशाम्बी ये रूप बना, "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" से कौशाम्बी की उपसर्जन संज्ञा हुई। "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द की अन्तिम अच् के स्थान पर ह्रस्व इकार हुआ। तब खरवसानादि सूत्र से विसर्ग होने के पश्चात् "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य" सूत्र से षकारादेश होने पर निष् कौशाम्बि बना, स्वादि-उत्पत्ति होने से निष्कौशाम्बिः रूप सिद्ध हुआ।

कच्छपी – कच्छेन पिबति इस अर्थ मे "सुपिस्थः" इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ। कच्छ टा पा क इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "उपपदमतिङ्" से समास हुआ "कृतद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः "से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" से ङीष् प्रत्यय होने से कच्छपी रूप सिद्ध होगा।

द्व्यङ्गुलम् – द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य इस अर्थ में द्वि औ अङ्गुलि औ इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" संख्यावाचक अङ्गुलि सुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से द्वि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, "प्रमाणे लो

द्विगोर्नित्यम्" इस वार्तिक से उत्तर प्रमाण के अर्थ मे प्रत्यय का लुक् होता है। द्विगु समास होने के कारण मात्रच् प्रत्यय का लोप हो जाता है। प्रकृत सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ अनुबन्धलोप होने से, "यचि भम्" से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक इकार का लोप हुआ। स्वादि-उत्पत्ति होने से अदन्त सुबन्त को अम् आदेश हुआ, अमिपूर्वः से पूर्व रूप होने द्वयङ्गुलं रूप सिद्ध हुआ।

द्विरात्रम् – द्वयोः रात्रयोः समाहारः इस अर्थ की विवक्षा में द्वि ओस् रात्रि ओस् इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" संख्यावाचक अङ्गुलि सुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से द्वि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, अहस्सर्वैक0 इत्यादि सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ, अनुबन्धलोप होने से, यचि भम् से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक इकार का लोप हुआ। स्वादि-उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया, यहां परवल्लिङ्गम्0 इत्यादि सूत्र से स्त्रीलिङ्ग प्राप्त था, इसका रात्रान्हाहाः पुंसि से बाध हो गया और पुंल्लिङ्ग प्राप्त हुआ, उसको बाधकर संख्यापूर्वरात्रं क्लीबम् से नपुंसक हो गया, नपुंसक होने से अदन्त सुबन्त को अम् आदेश हुआ, अमिपूर्वः से पूर्व रूप होने द्विरात्रम् रूप सिद्ध हुआ।

महाजातीयः – महान् इव इस अर्थ की विवक्षा में महत् शब्द "प्रकारवचने जातीयर्" से जातीयर् प्रत्यय-अनुबन्धलोप होने से प्रकृत सूत्र से जातीयर् प्रत्यय परे रहते महत् शब्द के अन्तिम अल् के तकार को आकारादेश प्राप्त हुआ। सवर्णदीर्घ और स्वादि/उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया रुत्वविसर्ग होने से महाजातीयः रूप सिद्ध हुआ।

अलंकुमारिः – अलं कुमार्यै इस अर्थ की विवक्षा में अलं सु कुमारी ङे इस अलौकिक विग्रहवाक्य से समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से निर् की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब अलं कुमारी रूप बना, "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" से कुमारी की उपसर्जन संज्ञा हुई। "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द की अन्तिम अच् के स्थान पर ह्रस्व इकार हुआ। "मोनुस्वारः" से अनुस्वार हुआ, "अनुस्वारस्य" इत्यादि सूत्र से परसवर्ण हुआ पूर्ववत् स्वाद्युत्पत्ति। यहां "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र से स्त्रीलिङ्ग प्राप्त था, इसका प्राप्तापन्न0 इत्यादि वार्तिक से बाध हो गया और पुंल्लिङ्ग हुआ, स्वाद्युत्पति, रुत्व, विसर्ग होने से अलङ्कुमारिः रूप सिद्ध हुआ।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए–

i. प्रादियों का समास होता है –

(क) नित्यम् (ख) अनित्य

(ग) यदा कदा (घ) कभी नहीं

ii. शुद्ध रूप है –

(क) द्विरात्रमम् (ख) द्विरात्रम्

(ग) द्विरात्रः (घ) द्विरात्रिः

iii. तस्मान्नुडचि सूत्र से कार्य होता है –

(क) नुडादेशः (ख) नुड्लोपः

(ग) नुमागमः (घ) नुडागमः

iv. राजाहःसखिभ्यष्टच् का उदाहरण है –

(क) राजपुरुषः (ख) राजसखी

(ग) परमराजः (घ) कोई नहीं

v. नपुंसक के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है –

(क) क्लीबम् (ख) बहुलम्

(ग) वसनम् (घ) नक्तम्

2. **रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए –**

i. परवल्लिंगं ....पुरुषयोः।

ii. नैकधेत्यादौ तु..................... सह सुप् सुपेति समासः।

iii. कुश्च गतिश्च प्रादयश्च तेषाम्......................द्वन्द्वः कुगतिप्रादयः।

iv. संख्याव्ययादेरङ्गुल्यन्तस्य समासान्तः.......................स्यात्।

v. अहःसर्वैकदेश...........................पुण्याच्चा रात्रेः।

3. **सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–**

i. नशब्द के साथ सुप् सुपा समास होता है – सही / गलत

ii. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते के द्वारा पूर्व निपात का विधान होता है– सही / गलत

iii. प्रादियों का असमर्थों के साथ नित्य समास होता है – सही / गलत

iv. उपपदमतिङ् के द्वारा नित्य समास होता है – सही / गलत

v. द्वयङ्गुलम् में समासान्त अच् प्रत्यय विहित है – सही / गलत

अभ्यास प्रश्न

1. ऊरीकृत्य का लौकिक और अलौकिक विग्रह वाक्य लिखिए।
2. "नलोपो नञः" सूत्र का अर्थ लिखिए।
3. समासान्त अच् प्रत्यय विधायक सूत्र का उल्लेख कीजिए।
4. "तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्" में सप्तमीस्थ पद का क्या अभिप्राय है?
5. अतिमालः शब्द की रूपसिद्धि लिखिए।

11.4 सारांश

इस इकाई में आपने तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ् समास के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। नञ् समास से सम्बन्धित सूत्रों के उदाहरणों को स्पष्टतया जानने हेतु उन उदाहरणों के लौकिक तथा अलौकिक विग्रह वाक्यों को जानकर

उनकी रूपसाधन प्रक्रिया का अवबोध किया। इसी प्रकार इस प्रकरण के अन्तर्गत आने वाले कुछ समासान्त प्रत्ययों के बारे में भी आपने विस्तार से अध्ययन किया। "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" इत्यादि सूत्र के माध्यम से समास में लिंग निर्धारण किस प्रकार किया जाता है कहाँ समास होने पर उत्तरपद के लिङ्ग का ग्रहण करना है और कहाँ नहीं इस प्रकार तत्पुरुष समास के लिङ्गनिर्धारण का स्पष्टतया ज्ञान प्राप्त किया।

11.5 शब्दावली

गति – "कुगतिप्रादयः" सूत्र में जो गति शब्द आया है उसका अर्थ गतिसंज्ञक है। प्रादि 22 निपात जब क्रिया से युक्त होते हैं तो उनकी "उपसर्गाः क्रियायोगे" सूत्र से उपसर्ग संज्ञा हो जाती है। उसी के साथ "गतिश्च" सूत्र से गतिसंज्ञा भी क्रियायोग में ही होती है।

प्रादयः – प्रादयः से तात्पर्य प्र, परा, अप, सम इत्यादि 22 निपातों से हैं जिनकी क्रियायोग होने पर उपसर्ग व गति संज्ञा की जाती है।

उपपद – "तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्" सूत्र से इस संज्ञा का विधान किया गया है। धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत "कर्मण्यण्" आदि सूत्रों में कर्मणि सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट जो कुम्भ आदि, तद्वाचक पद की उपपदसंज्ञा होती है। इसी प्रकार उप = समीपे उच्चारितं पदम् उपपदम् ऐसा भी अर्थ किया जाता है।

समानाधिकरण – समानम् अधिकरणं ययोः तत् समानाधिकरणम्। जिन दो पदों का अधिकरण समान होता है उन्हें समानाधिकरण कहते हैं। अर्थात् जिन दो पदों का समान विभक्ति में निर्देश होता है वे समानाधिकरण कहलाते हैं, जैसे नीलम् उत्पलम्। यहाँ दोनों पदों में समान विभक्ति का श्रवण हो रहा है।

परवल्लिंगम् – इसका प्रयोग "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र में आया है। पर में अर्थात् बाद में विद्यमान पद के लिंग के जैसा लिंग होना। अर्थात् उत्तर पद जिस लिंग में है उसी लिंग को पूर्वपद के द्वारा भी प्राप्त कर लेना।

11.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी –आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

11.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i. (क) नित्यम्, ii. (ख) द्विरात्रम्, iii. (घ) नुडागमः, iv. (ग) परमराजः, v. (क) क्लीबम्
2. i. द्वन्द्वतत्, ii. नशब्देन, iii. इतरेतर, iv. अच्, iv. संख्यात
3. i. सही, ii. गलत, iii. गलत, iv. सही, v. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 12 समास प्रकरण – भाग 4

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास तथा उनसे सम्बन्धित समासान्त प्रत्ययों के बारे में जान सकेंगे।
- द्वन्द्व विधायक सूत्रों का सोदाहरण अध्ययन कर सूत्रों की व्याख्या करने में सक्षम हो सकेंगे।
- सर्वसमासोपयोगी कुछ समासान्त प्रत्ययों को जानने में आप समर्थ हो सकेंगे तथा तद्विधायक सूत्रों का विवेचन करने में सक्षम बनेंगे।
- बहुव्रीहि समास तथा द्वन्द्व समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई से पूर्व की इकाई में आपने तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ् समास के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। नञ् समास से सम्बन्धित सूत्रों के उदाहरणों को स्पष्टतया जानने हेतु उन उदाहरणों का रूपसाधन प्रक्रिया के माध्यम से अवबोधन किया। इसी प्रकार उस प्रकरण के अन्तर्गत आने वाले कुछ समासान्त प्रत्ययों के बारे में भी आपने विस्तार से ज्ञान प्राप्त करने के साथ "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" इत्यादि सूत्र के माध्यम से समास में लिंग निर्धारण किस प्रकार किया जाता है? कहाँ समास होने पर उत्तरपद के लिङ्ग का ग्रहण करना है और कहाँ नहीं इस प्रकार तत्पुरुष समास के लिङ्गनिर्धारण का स्पष्टतया ज्ञान प्राप्त किया था। यही "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र द्वन्द्व समास में भी पर अर्थात् बाद में रहने वाले पद के लिङ्ग के अनुसार समस्त पद का लिङ्गनिर्धारण करता है।

अतः पूर्व से आगे इस इकाई में विशेषतः क्रमशः बहुव्रीहि समास तथा द्वन्द्व समास के सूत्रों का सविस्तार विवेचन किया जायेगा। साथ ही साथ बहुव्रीहि समास द्वन्द्व समास तथा समासान्त प्रत्ययों से सम्बन्धित उदाहरणों का विवेचन भी रूपसाधन प्रक्रिया के माध्यम से आपको करा दिया जाएगा। तदनन्तर सर्वसमासोपयोगी कुछ समासान्त प्रत्ययों का भी अध्ययन आप इस इकाई के माध्यम से करेंगे।

12.2 समास – "शेषो बहुव्रीहिः" सूत्र से "न पूजनात्" सूत्र पर्यन्त

सूत्र – शेषो बहुव्रीहिः 2.2.23

सूत्रवृत्ति – अधिकारोऽयं प्राग् द्वन्द्वात्।

सूत्रानुवाद – चार्थे द्वन्द्वः इस द्वन्द्वविधान से पूर्व पूर्व प्रथमान्त पदों का समास बहुव्रीहिसंज्ञक हो – यह अष्टाध्यायी में अधिकृत किया जाता है।

व्याख्या – शेषः, बहुव्रीहिः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। प्राक्कडारात् समासः सूत्र से समासः पद की अनुवृत्ति होती है। यह अधिकार सूत्र है। इस का अधिकार यहां से लेकर चार्थे द्वन्द्वः सूत्र से पूर्व तक अष्टाध्यायी में जाता है। इस अधिकार में पाँच सूत्र आते हैं –

1) अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)।
2) संख्ययाव्ययासन्नाऽदूराधिकसंख्याः संख्येये (2.2.25)।
3) दिङ्नामान्यन्तराले (2.2.26)।
4) तत्र तेनेदमिति सरूपे (2.2.27)।
5) तेन सहेति तुल्ययोगे (2.2.28)।

इनमें से केवल एक अनेकमन्यपदार्थे सूत्र ही लघुसिद्धान्तकौमुदी में पढा गया है, शेष सूत्रों का सिद्धान्तकौमुदी में अवलोकन कर विस्तार से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। शेष समास बहुव्रीहिसंज्ञक हो – यह द्वन्द्व से पूर्व अर्थात् अगले पाँच सूत्रों में अधिकृत किया जाता है। 'शेष' किसे कहते हैं? उक्तादन्यः शेषः – जो कहने से बच गया है अर्थात् जो कहा नहीं गया वह 'शेष' है। क्या नहीं कहा गया? इस समासप्रकरण में द्वितीया श्रितातीत., तृतीया तत्कृतार्थेन., चतुर्थी तदर्थार्थ., पञ्चमी भयेन, षष्ठी, सप्तमी शौण्डैः – इस प्रकार सब विभक्तियों का नामोच्चारण कर समास विधान किया जा चुका है, केवल 'प्रथमा' का नाम लेकर कोई समास विधान नहीं किया गया अतः प्रथमा = प्रथमान्त ही शेष है। शेष अर्थात् प्रथमान्तों का समास ही बहुव्रीहिसंज्ञक हो – यह अर्थ फलित होता है।

सूत्र – अनेकमन्यपदार्थे 2.2.24

सूत्रवृत्ति – अनेकं प्रथमान्तमन्यस्य पदस्यार्थे वर्तमानं वा समस्यते, स बहुव्रीहिः।

सूत्रानुवाद – अन्यपद के अर्थ में वर्तमान एक से अधिक प्रथमान्त पदों का परस्पर विकल्प से समास होता है और वह समास बहुव्रीहिसंज्ञक होता है।

व्याख्या – अनेकम्, अन्यपदार्थे यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। प्राक्कडारात् समासः, विभाषा, शेषो बहुव्रीहिः – ये सब पहले से अधिकृत हैं। न एकम् अनेकम्, नञ्तत्पुरुषः। अन्यत् च तत् पदम् अन्यपदम्, तस्य = अन्यपदस्य, कर्मधारयसमासः। अन्यपदस्य अर्थः अन्यपदार्थः, तस्मिन् = अन्यपदार्थे, षष्ठीतत्पुरुषसमासः। 'वर्तमानम्' पद का अध्याहार करना होगा। अर्थ यह होगा – अन्यपद के अर्थ में वर्तमान एक से अधिक प्रथामान्त पद विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं और वह बहुव्रीहिसंज्ञक होता है।

सूत्र – सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ 2.2.35

सूत्रवृत्ति – सप्तम्यन्तं विशेषणं च बहुव्रीहौ पूर्वं स्यात्। अतएव ज्ञापनकात् व्यधिकरणपदो बहुव्रीहिः।

सूत्रानुवाद – सप्तम्यन्त पद का विशेषण का बहुव्रीहि समास में पूर्व प्रयोग होता है। सूत्र में जो सप्तमी पद का पाठ किया गया है उससे ज्ञापित होता है कि ये समास प्रथमान्त भिन्न पदों से ही होता है।

व्याख्या – सप्तमीविशेषणे, बहुव्रीहौ यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। 'उपसर्जनं पूर्वम्' इस सूत्र से पूर्वम् इति अनुवर्तित होता है वह क्रियाविशेषण होता है। 'प्रयुज्यते' इति क्रियापदमध्याहार्यम्। सप्तमी च विशेषणं च सप्तमीविशेषणे, द्वन्द्वसमासः परवल्लिङ्गता च। प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः इस परिभाषा की सहायता से तदन्तविधि होकर 'सप्तम्यन्तम्' बन जाता है। बहुव्रीहिविधायक सूत्र में अनेकम् इस प्रथमान्त पद के कारण तद्बोध्य सब पद प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञक होते थे अतः 'उपसर्जनं पूर्वम्' से सबका पूर्वनिपात पर्याय से प्राप्त होता था किन्तु यहाँ पर यह सूत्र नियम करता है कि बहुव्रीहिसमास में सप्तम्यन्त पद का तथा विशेषणपद का पूर्वनिपात होता है। अब प्रश्न यह होता है कि बहुव्रीहिसमास में तो प्रथमान्त पदों का ही विधान किया गया है अतः इसमें कोई पद सप्तम्यन्त नहीं हो सकता तो पुनः यहाँ सप्तम्यन्त पद के पूर्वनिपात का विधान कैसे किया जा रहा है? इसका उत्तर देते हैं –

"अतएव ज्ञापकाद् व्यधिकरणपदो बहुव्रीहिः" अर्थात् जब बहुव्रीहिसमास में सब पद प्रथमान्त होने से समानाधिकरण ही होते हैं कोई पद व्यधिकरण नहीं होता है तो पुनः आचार्य का इसमें सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात करना यह ज्ञापित करता है कि क्वचित् व्यधिकरणपदों में भी बहुव्रीहिसमास होता है। यदि ऐसा न होता तो सूत्रकार सप्तम्यन्त पद का बहुव्रीहि में पूर्वनिपात क्यों कहते? उनका ऐसा कहना व्यधिकरणपदबहुव्रीहिसमास के होने का ज्ञापक है इस व्यधिकरण बहुव्रीहि में सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात इस तरह होता है –

लौकिकविग्रह – कण्ठे कालः यस्य सः = कण्ठेकालः (कण्ठ में काल = नीलवर्ण है जिसके अर्थात् नीलकण्ठ महादेव या पक्षिविशेष)। अलौकिकविग्रह – कण्ठ ङि काल सु। यहाँ पर सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ सूत्र से सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात विधान होने से क्वचित् व्यधिकरण पदों में भी बहुव्रीहिसमास के ज्ञापित होने से अनेकमन्यपदार्थे द्वारा अन्यपदार्थ में वर्तमान दोनों पदों का बहुव्रीहिसमास हो जाता है। इस समास में सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ सूत्र से सप्तम्यन्त पद का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से सुपो (ङि सु) का लुक् प्राप्त होता है।

इनमें से सु का लुक् तो हो जाता है परन्तु 'ङि' के लुक् का अग्रिमसूत्र से निषेध होता है –

सूत्र – हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् 6.3.9

सूत्रवृत्ति – हलन्तात् अदन्ताच्च सप्तम्याः अलुक्। कण्ठेकालः। प्राप्तम् उदकं यं सः प्राप्तोदकः ग्रामः। ऊढरथः अनड्वान्। उपहृतपशूः रुद्रः। उद्धृतौधना स्थाली। पीताम्बरो हरिः। वीरपुरुषको ग्रामः। (प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः।) प्रपतितपर्णः प्रपर्णः। (नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः) अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः अपुत्रः।

सूत्रानुवाद – संज्ञा का बोध होने पर उत्तरपद के परे रहते हलन्त और अजन्त शब्दों से परे सप्तमी विभक्ति का लुक् नहीं होता है।

व्याख्या – हलदन्तात्, सप्तम्याः संज्ञायाम् इति यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। अलुक्, उत्तरपदे यह दोनों पद अलुगुत्तर पदे सूत्र से अधिकृत होते हैं। हल् च अत् च हलत्, हलत् अन्ते यस्य स हलदन्तः, तस्मात् = हलदन्तात्, द्वन्द्वगर्भबहुव्रीहिसमासः। न लुक् अलुक् नञ्तत्पुरुषः। प्रकृत में 'कण्ठ ङि काल सु' यहाँ 'कण्ठ' इस अदन्त से परे सप्तमीविभक्ति (ङि) विद्यमान है अतः हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् सूत्र से सप्तमी के लुक् का निषेध हो जाता है। पुनः ङि के ङकार का लोप होकर गुण होने से कण्ठेकाल यह समस्त शब्द उपपन्न होता है। प्रातिपदिकसंज्ञा के कारण इससे स्वाद्युत्पत्ति के प्रसङ्ग में प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय होने से विशेष्यानुसार लिङ्ग होने से 'कण्ठेकालः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है। अनेकमन्यपदार्थे सूत्र द्वारा अन्यपदार्थ को विशिष्ट करने वाले प्रथमान्त पदों का बहुव्रीहिसमास विधान किया गया है प्रथमान्त पदों के अन्यपदार्थ द्वितीयान्त आदि ही हो सकते हैं अतः द्वितीयान्त आदि अन्यपदार्थों में ही यह समास होता है जिनके क्रमशः उदाहरण सूत्रवृत्ति में दिये गये हैं।

वार्तिक – प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः।

वृत्ति – प्रपतितपर्णः प्रपर्णः।

अनुवाद – प्र आदियों से परे जो धातुज शब्द, तदन्त प्रथमान्त का अन्य प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहिसमास होता है और इस बहुव्रीहिसमास में पूर्वपद में स्थित धातुज उत्तरपद का विकल्प से लोप हो जाता है।

व्याख्या – प्र आदियों से परे धातुज कृदन्त शब्दों का पहले प्रादिसमास होता है। जैसे – प्रकृष्टं पतितं प्रपतितम्। यहाँ पर 'प्र' का 'पतित सु' के साथ प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया (वा.) से नित्य तत्पुरुषसमास होता है। तदनन्तर समस्त हुए इस 'प्रपतित' प्रथमान्त का अन्य प्रथमान्त के साथ सामान्यनियमानुसार बहुव्रीहिसमास किया जाता है तो इस बहुव्रीहि में पूर्वपद (प्रपतित) के धातुज उत्तरपद (पतित) का विकल्प से लोप हो जाता है। उदाहरण यथा –

लौकिकविग्रह – प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः = प्रपर्णः प्रपतितपर्णो वा वृक्षः (जिसके पत्ते अच्छी तरह से झड़ चुके हैं ऐसा वृक्ष)। अलौकिकविग्रह – प्रपतित जस् पर्ण जस्। यहाँ अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास होकर विशेषण का पूर्वनिपात, समास की

प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुपों (दोनों जस् प्रत्ययों) का लुक् होने पर 'प्रपतितपर्ण' बना। तत्पश्चात् प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः (वा.) से 'प्रपतित' शब्द के उत्तरपद 'पतित' का विकल्प से लोप हो जाता है इस प्रकार प्रपर्णः बन जाता है।

वार्तिक – नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः।

वृत्ति – अविद्यमानः पुत्रः, अपुत्रः।

अनुवाद – नञ् से परे अस्त्यर्थक जो शब्द, तदन्त प्रथमान्त का अन्य प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहिसमास हो जाता है और इस बहुव्रीहिसमास के पूर्वपद में स्थित विद्यमानार्थक उत्तरपद का विकल्प से लोप हो जाता है।

व्याख्या – विद्यमान अर्थ वाले शब्दों को अस्त्यर्थक शब्द कहते हैं। नञ् से परे अस्त्यर्थक शब्द आकर पहले नञ्तत्पुरुषसमास होता है, यथा –न विद्यमानः अविद्यमानः। यहाँ 'न विद्यमान सु' में नञ् सूत्र द्वारा तत्पुरुषसमास, नञ् का पूर्वनिपात, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक्, तथा नलोपो नञः सूत्र से नञ् के आदि नकार का लोप होकर विभक्ति लाने से 'अविद्यमानः' बन जाता है अब इस 'अविद्यमान सु' का जब 'पुत्र सु' के साथ अन्यपदार्थ में बहुव्रीहिसमास किया जाता है तो इस समास में पूर्वपद (अविद्यमान) में स्थित उत्तरपद (विद्यमान) का विकल्प से लोप हो जाता है।

उदाहरण – अपुत्रः (जिस का पुत्र नहीं अर्थात् पुत्रहीन व्यक्ति) – अविद्यमानः पुत्रो यस्य सः अपुत्रः इस लौकिकविग्रह में अविद्यमान सु पुत्र सु इस अलौकिक विग्रह में यहाँ दोनों प्रथमान्त पद अन्यपदार्थ को विशिष्ट करते हैं अतः अनेकमन्यपदार्थे से इनमें बहुव्रीहिसमास, विशेषण का पूर्वनिपात, प्रातिपदिकसंज्ञा तथा उसके अवयव सुपों का लुक् करने से अविद्यमानपुत्र समस्त पद बन जाता है। यहाँ पूर्वपद 'अविद्यमान' में 'विद्यमान' उत्तरपद है अतः नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः इस सूत्र से उसका विकल्प से लोप जाता है, तथा विशेष्यानुसार लिङ्ग विभक्ति तथा वचन का विधान करने से 'अपुत्रः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – स्त्रियाः पुंवद् भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु 6.3.34

सूत्रवृत्ति – उक्तपुंस्कात् अनूङ् ऊङोऽभावः अस्यामिति बहुव्रीहिः। निपातनात् पञ्चम्या अलुक् षष्ठ्याश्च लुक्। तुल्ये प्रवृत्तिनिमित्ते यदुक्तं पुंस्कं तस्मात् परः ऊङोऽभावो यत्र तथाभूतस्य स्त्रीवाचकशब्दस्य पुंवाचकस्येव रूपं स्यात् समानाधिकरणे स्त्रीलिङ्गे उत्तरपदे न तु पूरण्यां प्रियादौ च परतः। गोस्त्रियोरिति ह्रस्वः चित्रगुः। रूपवद्भार्यः अनूङ् किम्? वामोरूभार्या। पूरण्यां तु–

सूत्रानुवाद – भाषितपुंस्क अर्थात् जिस शब्द के प्रयोग का कारण पुंल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग मे समान हो और जिसके परे ऊङ् प्रत्यय न हो, ऐसे स्त्रीवाचकशब्द का पुंवाचक के समान रूप हो समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद परे रहते परन्तु पूरणी या प्रिया आदि शब्द के परे रहते यह पुंवद्भाव नहीं होता है।

व्याख्या – स्त्रियाः, पुंवद्, भाषितपुंस्कादनूङ्, समानाधिकरणे, स्त्रियाम्, अपूरणीप्रियादिषु इति यह विच्छेद है। यह षट्पदात्मकसूत्र है। अलुगुत्तरपदे से उत्तरपदे की अनुवृत्ति होती है। भाषितपुंस्कादनूङ् – यह लुप्तषष्ठ्येकवचनान्त है और 'स्त्रियाः' का विशेषण है। इसका विग्रह इस प्रकार है – ऊङोऽभावः – अनूङ्, अर्थाभावेऽव्ययीभावसमासः, भाषितपुंस्काद् अनूङ् यस्यां सा भाषितपुंस्कादनूङ् (स्त्री), तस्याः = भाषितपुंस्कादनूङ्। यह व्यधिकरणबहुव्रीहिसमास है। इसमें 'भाषितपुंस्कात्' पद की पञ्चमी का सौत्रत्वात् लुक् नहीं हुआ और समास से षष्ठी का लुक् हो गया है। प्रिया शब्द आदिर्येषां ते प्रियादयः, तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिः। पूरणी च प्रियादयश्च पूरणीप्रियादयः, तेषु = पूरणीप्रियादिषु, द्वन्द्वसमासः। न पूरणीप्रियादिषु –अपूरणीप्रियादिषु, नञ्तत्पुरुषः। पूरणी से यहाँ पूरणार्थकप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का ग्रहण होता है।

उदाहरण – चित्रगुः (चितकबरी गौओं वाला ब्राह्मण आदि) – चित्रा गावो यस्य सः इस लौकिकविग्रह में, चित्रा जस् गो जस् इस अलौकिकविग्रह में यहाँ दोनों प्रथमान्त पद अन्यपद (ब्राह्मण आदि) के अर्थ को विशिष्ट करते हैं अतः अनेकमन्यपदार्थे से इनका बहुव्रीहिसमास हो जाता है। समास में विशेषण का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुपों का लुक् करने पर 'चित्रा गो' बना। यहाँ "स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु" इस सूत्र से 'चित्रा' को पुंवत् करने से – चित्रगो का बहुव्रीहिसमास में प्रथमानिर्दिष्ट होने से सब पद उपसर्जनसंज्ञक होते हैं अतः गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य सूत्र से उपसर्जनसंज्ञक 'गो' के अन्त्यच् ओकार को ह्रस्व = उकार आदेश करने पर चित्रगु बना। विशेष्यानुसार लिङ्ग, विभक्ति और वचन लाने से 'चित्रगुः' सिद्ध हो जाता है। समास वैकल्पिक है अतः पक्ष में वाक्य भी रहेगा।

अनूङ् किम्? वामोरूभार्यः। यहाँ प्रश्न होता है कि सूत्र में यह क्यों कहा गया है कि भाषितपुंस्क से परे ऊङ् प्रत्यय न किया गया हो? समाधान देते हैं कि यदि ऐसा न कहते तो 'वामोरूः भार्या यस्य सः = वामोरूभार्यः' यहाँ पर भी पुंवत् होकर 'वामोरुभार्यः' ऐसा अनिष्ट रूप बन जाता। यहाँ वामोरू शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में संहित-शफ-लक्षण-वामादेश्च सूत्र से ऊङ् प्रत्यय किया गया है। अतः समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद 'भार्या' शब्द के परे होने पर भी भाषितपुंस्क को पुंवत् नहीं हुआ।

पूरण्यां तु – पूरणप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग समानाधिकरण उत्तरपद के परे रहते पुंवद्भाव नहीं होता इसे प्रत्युदाहरण समझाने के लिये उपयोगी समासान्त प्रत्यय को बता रहे हैं–

सूत्र – अप् पूरणीप्रमाण्योः 5.4.116

सूत्रवृत्ति – पूरणार्थप्रत्ययान्तं यत् स्त्रीलिङ्गं, तदन्तात् प्रमाण्यन्ताच्च बहुव्रीहेरप् स्यात्। कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः कल्याणीपञ्चमा रात्रयः। स्त्री प्रमाणी यस्य सः स्त्रीप्रमाणः। अप्रियादिषु किम्? कल्याणीप्रिय इत्यादि।

सूत्रानुवाद – पूरणार्थप्रत्ययान्त जो स्त्रीलिङ्गशब्द तदन्त बहुव्रीहि से तथा प्रमाणीशब्दान्त बहुव्रीहि से समासान्त अप् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – अप्, पूरणीप्रमाण्योः इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, तद्धिताः, समासान्ताः – ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। पूरणी च प्रमाणी च पूरणीप्रमाण्यौ, तयोः = पूरणीप्रमाण्योः, इतरेतरद्वन्द्वः। 'पूरणीप्रमाण्योः' तथा 'बहुव्रीहौ' पदों को पञ्चम्यन्ततया विपरिणाम कर लिया जाता है– पूरणीप्रमाणाभ्याम्, बहुव्रीहेः। पुनः विशेषण से तदन्तविधि होने पर 'पूरण्यान्तात् प्रमाण्यन्ताच्च बहुव्रीहेः' यह उपलब्ध होता है। जिससे उपरोक्त अर्थ फलित हो जाता है।

उदाहरण – कल्याणी पञ्चमा रात्रयः। लौकिकविग्रह – कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः = कल्याणीपञ्चमा रात्रयः (जिन रातों में पाँचवीं रात कल्याणप्रदा है ऐसी रातें)। अलौकिकविग्रह – कल्याणी सु पञ्चमी सु। अनेकमन्यपदार्थे से पूर्ववत् समास होने पर, सुपोधातु प्रातिपदिकयोः से सुब्लुक् हो जाने पर 'कल्याणी पञ्चमी' बना। अब यहाँ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे सूत्र से 'कल्याणी' इस भाषितपुंस्क को पुंवद्भाव नहीं होता। पूरण्यन्त बहुव्रीहि से प्रकृत अप् पूरणी प्रमाण्योः सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होकर 'कल्याणीपञ्चमी अ' इस अवस्था में तद्धितसंज्ञक प्रत्यय के परे रहते यस्येति च से भसंज्ञक ईकार का लोप हो जाता है कल्याणीपञ्चमी अ = कल्याणीपञ्चम। अदन्तत्वात् टापि, सुबुत्पत्तौ कल्याणीञ्चमाः रूप सिद्ध हुआ।

अप्रियादिषु किम्? कल्याणीप्रियः। लौकिकविग्रह – कल्याणी प्रिया यस्य सः कल्याणीप्रियः (कल्याणकरा स्त्री जिसे प्रिय हो ऐसा पुरुष)। अलौकिकविग्रह – कल्याणी सु प्रिया सु। यहाँ अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास होकर सुब्लुक् करने से कल्याणी प्रिया बना। अब यहाँ समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग 'प्रिया' शब्द उत्तरपद में परे विद्यमान है जो प्रियादिगण का प्रथम शब्द है अतः स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्. सूत्र से भाषितपुंस्क भी कल्याणीशब्द को पुंवद्भाव नहीं होता। स्त्रीप्रत्ययान्त उपसर्जनसञ्ज्ञक प्रियाशब्द अन्त में होने के कारण गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य सूत्र से उपसर्जन ह्रस्व होकर विशेष्यानुसार लिङ्ग, विभक्ति और वचन लाने से 'कल्याणीप्रियः' रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् 5.4.113

सूत्रवृत्ति – स्वाङ्गवाचिसक्थ्यक्ष्यन्ताद् बहुव्रीहेः षच् स्यात्। दीर्घसक्थः। जलजाक्षी। स्वाङ्गात् किम्? दीर्घसक्थि शकटम्। स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः। अक्ष्णोऽदर्शनादिति वक्ष्यमाणोऽच्।

सूत्रानुवाद – स्वाङ्गवाची सक्थि और अक्षि शब्दान्त बहुव्रीहि से समासान्त षच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – बहुव्रीहौ, सक्थ्यक्ष्णोः, स्वाङ्गात्, षच् इति यह चतुष्पदात्मक सूत्र है।' सक्थ्यक्षिभ्याम्' पद 'बहुव्रीहेः' का विशेषण है अतः विशेषण से तदन्तविधि होकर सक्थ्यन्ताद् बहुव्रीहेः ऐसा उपलब्ध हो जाता है। इस प्रकार उपरोक्त अर्थ फलित हो जाता है।

उदाहरण – दीर्घसक्थः – दीर्घे सक्थिनी यस्य सः = दीर्घसक्थः पुरुषः (दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष)। दीर्घ औ सक्थि औ। अब यहाँ पर अनेकमन्यपदार्थे से समास होने पर,

समास में विशेषण का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर 'दीर्घसक्थि' बना। स्वाङ्गवाची सक्थिशब्द अन्त में है अतः बहुव्रीहि से बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से समासान्त षच् प्रत्यय होकर अनुबन्धों का लोप करने पर – 'दीर्घसक्थि अ' इस अवस्था में 'अ' इस तद्धित प्रत्यय के परे रहते यस्येति च से भसंज्ञक इकार का लोप होने से विभक्त्यनुसार प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय लगाकर दीर्घसक्थः रूप सिद्ध हुआ।

जलजाक्षी – जलजे इव अक्षिणी यस्याः सा = जलजाक्षी स्त्री (कमल की तरह नेत्रों वाली स्त्री)। प्रकृत सूत्र से षच् होने पर स्त्रीत्व की विवक्षा में षित्वात् षिद्गौरादिभ्यश्च सूत्र से ङीष्, ङ्कार और षकार अनुबन्धों का लोप एवं भसंज्ञक अकार का भी लोप होकर विभक्तिकार्य करने पर जलजाक्षी रूप सिद्ध होता है।

स्वाङ्गात् किम्? दीर्घसक्थि शकटम्। प्रकृत सूत्र में 'स्वाङ्गात्' कहा गया है अतः सक्थि और अक्षि यदि स्वाङ्गवाची न होंगे तो एतदन्त बहुव्रीहि से समासान्त षच् प्रत्यय नहीं होगा, यथा – दीर्घं सक्थि यस्य तत् = दीर्घसक्थि शकटम् (लम्बे फड़ वाला छकड़ा)। यहाँ पूर्ववत् बहुव्रीहिसमास तो है और अन्त में सक्थिशब्द भी है, पर वह स्वाङ्गवाची नहीं है अतः यहाँ समासान्त षच् नहीं हुआ। स्वमोर्नपुंसकात सूत्र से सु का लुक् होकर 'दीर्घसक्थि' प्रयोग सिद्ध होता है।

स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः – स्थूलानि अक्षीणि यस्याः सा स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः। पूर्ववत् समास होने पर, सुब्लुक् तथा सवर्णदीर्घ होने से 'स्थूलाक्षि' बना। अब अक्षि शब्दान्त बहुव्रीहि होने पर भी प्रकृत सूत्र से समासान्त षच् नहीं होता, क्योंकि अक्षिशब्द यहाँ स्वाङ्गवाची नहीं है। अतः अक्ष्णोऽदर्शनात् सूत्र से अच् प्रत्यय होकर, टाप् होने से स्थूलाक्षा रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः 5.4.115

सूत्रवृत्ति – आभ्याम् मूर्ध्नः षः स्याद् बहुव्रीहौ। द्विमूर्धः। त्रिमूर्धः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहिसमास में 'द्वि' और 'त्रि' शब्दों के परे यदि 'मूर्ध्न' शब्द हो तो बहुव्रीहि समासान्त ष प्रत्यय होता है।

व्याख्या – द्वित्रिभ्याम्, ष, मूर्ध्नः इति यह त्रिपदात्मक सूत्र है। द्विश्च त्रिश्च द्वित्रौ, ताभ्याम् = द्वित्रिभ्याम्, इतरेतरद्वन्द्वः। 'ष' प्रत्यय को इत्संज्ञक करने का प्रयोजन षित्वात् स्त्रीत्वविवक्षा में षिद्गौरादिभ्यश्च सूत्र से ङीष् हो जाता है। उदाहरण – द्विमूर्ध्नः – द्वौ मूर्धानौ यस्य सः = द्विमूर्धः (दो सिरों वाला)। पूर्ववत् समासप्रक्रिया होकर, द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः सूत्र से समासान्त 'ष' प्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप होने पर, द्विमूर्धन् अ नस्तद्धिते सूत्र से टि (अन्) का लोप कर द्विमूर्ध् अ = 'द्विमूर्ध' इस स्थिति में विशेष्यानुसार लिङ्ग, विभक्ति वचन लाने से द्विमूर्ध्नः रूप सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार त्रिमूर्ध्नः भी समझना चाहिए।

सूत्र – अन्तर्बहिभ्यां च लोम्नः 5.4.117

सूत्रवृत्ति – आभ्यां लोम्नोप्स्याद् बहुव्रीहौ। अन्तर्लोमः। बहिर्लोमः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहिसमास में अन्तर् और बहिस् अव्ययों से परे यदि लोमन् शब्द हो तो उस समास से समासान्त अप् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – अन्तर्बहिर्भ्याम्, च, लोम्नः इति यह त्रिपदात्मक सूत्र है। अप् पूरणी प्रमाण्योः सूत्र से अप् की अनुवृत्ति होती है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ की अनुवृत्ति होती है।

उदाहरण – अन्तर्लोमः – अन्तर्लोमानि यस्य सः = अन्तर्लोमः (अन्दर की ओर रोमों वाला चादर आदि)। अन्तर् लोमन् जस्। यहाँ अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा सुब्लुक् करने से – अन्तर्लोमन्। अब यहाँ अन्तर् से परे लोमन् शब्द विद्यमान है अतः प्रकृत सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होकर तद्धित प्रत्यय के परे रहते टि (अन्) का नस्तद्धिते से लोप होने से अन्तर्लोम बना। विशेष्यानुसार लिङ्ग, विभक्ति वचन लाने से अन्तर्लोमः बन जाता है। इसी प्रकार बहिर्लोमः भी समझना चाहिए।

सूत्र – पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः 5.4.138

सूत्रवृत्ति – हस्त्यादिवर्जितादुपमानात् परस्य पादशब्दस्य लोपो स्यात् बहुव्रीहौ। व्याघ्रस्येव पादावस्य इति व्याघ्रपात्। अहस्त्यादिभ्यः किम्? हस्तिपादः। कुसूलपादः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि से भिन्न उपमान वाचक शब्द से परे पाद शब्द का समासान्त लोप होता है।

व्याख्या – पादस्य, लोपः, अहस्त्यादिभ्यः इति यह त्रिपदात्मक सूत्र है। उपमानाच्च सूत्र से उपमानात् की अनुवृत्ति होती है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ की अनुवृत्ति होती है। हस्तिशब्दः आदिर्येषां ते हस्त्यादयः, तद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः। न हस्त्यादयः – अहस्त्यादयः, तेभ्यः अहस्त्यादिभ्यः, नञ्तत्पुरुषः समासः। व्याघ्रस्य पादौ व्याघ्रपादौ (षष्ठीतत्पुरुषः), व्याघ्रपादाविव पादौ यस्य स व्याघ्रपात् (शेर के पैरों के सदृश पैरों वाला व्यक्ति)। यहाँ सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च वार्तिक से अन्यपदार्थ में दोनों का बहुव्रीहिसमास, सुब्लुक् तथा समास में पूर्वपद (व्याघ्रपाद) के उत्तरपद पाद का लोप करने पर 'व्याघ्रपाद' बना। अब प्रकृत सूत्र से पादशब्द के अन्त्य अल् दकारोत्तरवर्ती अकार का समासान्त लोप होकर व्याघ्रपाद् बना। अहस्त्यादिभ्यः किम्? हस्तिपादः, कुसूलपादः। सूत्र में अहस्त्यादिभ्यः कहा गया है इसलिए हस्तिन् आदि उपमानों से परे प्रकृत सूत्र द्वारा 'पाद' को लोपरूप समासान्त नहीं होता है तो हस्तिपादः ही बनता है। वैसे ही कुसूलपादः भी बनता है।

सूत्र – संख्यासुपूर्वस्य 5.4.140

सूत्रवृत्ति – पादस्य लोपः स्यात् समासान्तो बहुव्रीहौ। द्विपात्। सुपात्।

सूत्रानुवाद – संख्यावाचक शब्द अथवा सु अव्यय जिसके पहले हो ऐसे पादशब्द का समासान्त लोप होता है बहुव्रीहि समास में।

व्याख्या – संख्या-सु-पूर्वस्य इति यह एकपदात्मक सूत्र है। पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः सूत्र से पादस्य लोपः इति दो पदों की अनुवृत्ति होती है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः

स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ कि अनुवृत्ति होती है। संख्या च सुश्च संख्यासू, इतरेतरद्वन्द्वः। संख्यासू पूर्वौ यस्य सः संख्यासुपूर्वः, तस्य संख्यासुपूर्वस्य, बहुव्रीहिसमासः।

उदाहरण – द्विपात् – द्वौ पादौ यस्य सः द्विपात्। पूर्ववत् प्रकिया होकर प्रकृत सूत्र से दकारोत्तरवर्ती अकार का समासान्त लोप होकर द्विपाद् बना। विशेष्यानुसार लिङ्ग, विभक्ति और वचन लाने पर प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय हल्ङ्यादिलोप होकर वाऽवसाने से वैकल्पिक चर्त्व करने से द्विपात्, द्विपाद् प्रयोग सिद्ध हो जाते हैं।

ऐसे ही शोभनौ पादौ यस्य सः सुपात् भी समझना चाहिए।

सूत्र – उद्विभ्यां काकुदस्य 5.4.148

सूत्रवृत्ति – लोपः स्यात्। उत्काकुत्। विकाकुत्।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहिसमास में उद् और वि इन दोनों निपातों से परे काकुदशब्द का समासान्त लोप हो जाता है।

व्याख्या – उद्विभ्याम्, काकुदस्य इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। ककुदस्यावस्थायां लोपः सूत्र से लोपः इति पद की अनुवृत्ति होती है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ कि अनुवृत्ति होती है। उश्च विश्च उद्वी, ताभ्याम् =उद्विभ्याम्, इतरेतरद्वन्द्वः।

उदाहरण – उत्काकुत् – उद्गतं काकुदं यस्य स उत्काकुत् (उठे हुए तालु वाला)। उद्गत सु काकुद सु। यहाँ पर प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः (वा.) से बहुव्रीहिसमास होकर उद्गत के उत्तरपद (गत) का लोप कर खरि च से चर्त्व द्वारा उत्काकुद् बना। अब प्रकृत सूत्र से अन्त्य अल् दकारोत्तरवर्ती अकार का समासान्त लोप कर प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय होकर हल्ङ्यादिलोप होने पर उत्काकुद् बना। वाऽवसाने से वैकल्पिक चर्त्व होने से उत्काकुत्, उत्काकुद् ये दो प्रयोग सिद्ध होते हैं। ऐसे ही विकाकुत् भी बनता है।

सूत्र – पूर्णाद्विभाषा 5.4.149

सूत्रवृत्ति – पूर्णकाकुत्। पूर्णकाकुदः।

सूत्रानुवाद – पूर्ण शब्द से उत्तर काकुद् शब्द के अन्तिम अकार का बहुव्रीहि समास में विकल्प से लोप होता है।

व्याख्या – पूर्णात्, विभाषा इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। उद्विभ्यां काकुदस्य सूत्र से काकुदस्य की अनुवृत्ति, ककुदस्यावस्थायां लोपः सूत्र से लोपः इति पद की अनुवृत्ति होती है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ की अनुवृत्ति होती है।

उदाहरण – पूर्णकाकुत्/पूर्णकाकुदः – पूर्णं काकुदं यस्य सः = पूर्णकाकुद् (पूर्ण या परिपक्व तालु वाला)। पूर्ण सु काकुद सु। पूर्ववत् समासप्रक्रिया होने पर पूर्णकाकुद बना। अतः पूर्णाद्विभाषा इस प्रकृत सूत्र से काकुद के अन्त्य अकार का विकल्प से लोप हो जाता है। लोपपक्ष में पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुद्। लोपाभावपक्ष में पूर्णकाकुदः बनेगा।

सूत्र – सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः 5.4.150

सूत्रवृत्ति – सुदुर्भ्यां हृदयस्य हृद्भावो निपात्यते। सुहृन्मित्रम्। दुर्हृदमित्रः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहिसमास में सु और दुर् निपातों से परे हृदयशब्द के स्थान पर हृत् आदेश निपातित किया जाता है क्रमशः मित्र और शत्रु के अर्थ में।

व्याख्या – सुहृद्दुहृदौ, मित्राऽमित्रयोः इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ कि अनुवृत्ति होती है। सुहृत् च दुर्हृत् च सुहृद्दुहृदौ, इतरेतरद्वन्द्वः। मित्रञ्च अमित्रश्च मित्रामित्रौ, तयोः = मित्राऽमित्रयोः, इतरेतरद्वन्द्वः।

उदाहरण – सुहृत् – सु शोभनं हृदयं यस्य सः सुहृत् (शोभन हृदय वाला अर्थात् मित्र)। सु हृदय सु। पूर्ववत् अनेकमन्यपदार्थे से समास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा सुब्लुक् होकर प्रकृत सूत्र से हृदय को हृद् आदेश करने पर विभक्ति लाने से सुहृत्, सुहृद् रूप सिद्ध हो जाते हैं। ऐसे ही दुर्हृत् भी समझना चाहिए।

सूत्र – उरः प्रभृतिभ्यः कप् 5.4.151

सूत्रानुवाद – उरसान्त बहुव्रीहि को समासान्त कप् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – उरः प्रभृतिभ्यः, कप् इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् सूत्र से बहुव्रीहौ कि अनुवृत्ति होती है। उरः प्रभृतिः आदिः येषां ते उरः प्रभृतयः, तेभ्यः = उरः प्रभृतिभ्यः, तद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिसमासः। 'उरः प्रभृतिभ्य' यह पद 'बहुव्रीहेः' का विशेषण है अतः विशेषण से तदन्तविधि होकर 'उरः प्रभृत्यन्ताद् बहुव्रीहेः' बन जाता है।

उदाहरण – व्यूढोरस्कः – व्यूढम् उरो यस्य सः = व्यूढोरस्कः (चौड़ी छाती वाला पुरुष)। व्यूढ सु उरस् सु। पूर्ववत् सर्वप्रक्रिया करने पर व्यूढ उरस् इस अवस्था में आद्गुणः सूत्र से अकार व उकार को गुणरूप एकादेश करने पर व्यूढोरस् बना। अब उरः प्रभृतिभ्यः कप् सूत्र से समासान्त कप् प्रत्यय होने पर, "स्वादिष्वसर्वनामस्थाने" से 'व्यूढोरस्' की पदसंज्ञा करने पर रुत्व, विसर्ग व्यूढोरः इस अवस्था में अग्रिम सूत्र आरम्भ होता है –

सूत्र – सोऽपदादौ 8.3.38

सूत्रवृत्ति – पाशकल्पककाम्येषु विसर्गस्य सः।

सूत्रानुवाद – पाश, कल्प, क और काम्य – इन चार प्रत्ययों के परे रहते विसर्ग को सकार आदेश होता है।

व्याख्या – सः अपदादौ इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। विसर्जनीयस्य सः सूत्र से विसर्जनीयस्य की अनुवृत्ति हुई है। पदस्यादिः पदादिः, षष्ठीतत्पुरुषः। न पदादिः अपदादिः, तस्मिन् अपदादौ, नञ् तत्पुरुषः। 'अपदादौ, का 'कुप्वोः' के साथ अन्वय होता है अतः इसे द्विवचनान्त बनाकर 'अपदाद्योः कुप्वोः' ऐसा जानना चाहिए।

सूत्र – कस्कादिषु च 8.3.48

सूत्रवृत्ति – एष्विण उत्तरस्य विसर्गस्य षोऽन्यस्य तु सः। इति सः। व्यूढोरस्कः।

सूत्रानुवाद – कस्कादिगण में पठित शब्दों में 'इण्' से परे विसर्ग को षकार हो, अन्य विसर्ग को सकार हो।

व्याख्या – कस्कादिषु, च इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। कस्कः आदिः येषां ते कस्कादयः, बहुव्रीहिसमासः, तेषु कस्कादिषु। प्रकृत उदाहरण में व्यूढोरः क इस अवस्था में विसर्ग को सकार आदेश होने से 'व्यूढोरस्क' रूप बन जाता है।

सूत्र – इणः षः 8.3.39

सूत्रवृत्ति – इण उत्तरस्य विसर्गस्य षः पाशकल्पकाम्येषु परेषु।

सूत्रानुवाद – पाश, कल्प, क और काम्य – चार प्रत्ययों के परे रहते यदि इण् प्रत्याहार से परे विसर्ग हो तो उसे षकार आदेश हो जाता है।

व्याख्या – इणः, षः इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। विसर्जनीयस्य सः सूत्र से विसर्जनीयस्य की अनुवृत्ति हुई है। सोऽपदादौ से अपदादौ की अनुवृत्ति हुई है।

उदाहरण – प्रियसर्पिष्कः– प्रियं सर्पिः यस्य सः प्रियसर्पिष्कः (घृत जिसे प्रिय हो)। पूर्ववत् समास तथा क प्रत्यय होकर प्रियसर्पिः कः रूप बन जाने पर प्रकृत सूत्र से विसर्ग को षकार आदेश होकर 'प्रियसर्पिष्कः' रूप बन जाता है।

सूत्र – निष्ठा 2.2.36

सूत्रवृत्ति – निष्ठान्तम् बहुव्रीहौ पूर्वं स्यात्। युक्तयोगः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहि समास में निष्ठान्त क्त और क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों का पूर्व निपात होता है।

व्याख्या – निष्ठा इति यह एकपदात्मक सूत्र है। सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ सूत्र से बहुव्रीहौ की अनुवृत्ति हुई है। उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्वम् की अनुवृत्ति हुई है। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् (प.) के अनुसार यहाँ निष्ठा से निष्ठाप्रत्ययान्तों का ग्रहण होता है।

उदाहरण – युक्तयोगः – युक्तो योगोऽनेन स युक्तयोगः (जिसका योग सफल हो चुका है ऐसा सिद्ध योगी)। पूर्ववत् समास तथा इस सूत्र से निष्ठान्त युक्त शब्द का पूर्वनिपात करके 'युक्तयोगः' रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – शेषाद्विभाषा 5.4.154

सूत्रवृत्ति – अनुक्तसमासान्ताद् बहुव्रीहेः कब्वा। महायशस्कः, महायशाः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहि समास में जिस शब्द से समासान्त प्रत्यय नहीं कहा गया हो ऐसे शेष से कप् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – शेषात्, विभाषा इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। बहुव्रीहि समास में जिस शब्द से समासान्त प्रत्यय नहीं कहा गया हो ऐसे शेष से कप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – महायशस्कः, महायशाः – महद् यशो यस्य सः = महायशस्कः महायशाः वा। पूर्ववत् समास होकर महत् यशस् बना। अब यहाँ आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः सूत्र से महत् के तकार को आकार आदेश होकर सवर्णदीर्घ

हो जाता है तो महायशस् बन जाता है। शेषाद्विभाषा सूत्र से विकल्प से कप् प्रत्यय होता है अतः महायशस्कः, महायशाः ये दो रूप बनते हैं।

इस प्रकार बहुव्रीहि समास का प्रकरण यहाँ समाप्त हुआ। अब द्वन्द्व समास प्रकरण का निरूपण प्रारम्भ करते हैं।

सूत्र – चार्थे द्वन्द्वः 2.2.29

सूत्रवृत्ति – अनेकं सुबन्तं चार्थे वर्तमानं वा समस्यते, स द्वन्द्वः। समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः। तत्र "ईश्वरं गुरुं च भजस्व" इति परस्परनिरपेक्षस्य अनेकस्य एकस्मिन् अन्वयः समुच्चयः। भिक्षामट गां चानय इत्यन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेनान्वयोऽन्वाचयः। अनयोरसामर्थ्यात्समासो न। "धवखदिरौ छिन्धि" इति मिलितानामन्वय इतरेतरयोगः। संज्ञापरिभाषम् इति समूहः समाहरः।

सूत्रानुवाद – इतरेतर और समाहार मे विद्यमान अनेक सुबन्तों का च के अर्थ में समास होता है और वह द्वन्द्वसंज्ञक होता है।

व्याख्या – चार्थे, द्वन्द्वः इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। अनेकमन्यपदार्थे सूत्र से अनेकम् की अनुवृत्ति हुई है। समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग और समाहार – ये चार 'च' के अर्थ होते हैं।

समुच्चय – जब परस्पर निरपेक्ष अनेक पद किसी एक में अन्वित होते हैं तो वहाँ 'च' का अर्थ समुच्चय होता है, यथा – ईश्वरं गुरुं च भजस्व (ईश्वर को भजो और गुरु को भी)।

अन्वाचय – जहाँ कोई एक आनुषङ्गिक रूप से क्रिया में अन्वित हो रहा हो वहाँ 'च' का अर्थ अन्वाचय होता है, यथा – भिक्षामट गां चानय (भिक्षार्थ भ्रमण कर, गाय को भी लेते आना)।

इतरेतरयोग – जब अनेक पदार्थ मिलकर समूह बनाकर किसी क्रियादि में अन्वित होते हैं तो वहाँ 'च' का अर्थ इतरेतरयोग होता है, यथा – धवखदिरौ छिन्धि (धव और खदिर पेड़ों को काटो)।

समाहार – जब समूह एक होकर क्रिया आदि में अन्वित होता है तो वहाँ 'च' का अर्थ समाहार होता है, यथा – संज्ञापरिभाषम् (संज्ञा और परिभाषा का समूह)।

सूत्र – राजदन्तादिषु परम् 2.2.31

सूत्रवृत्ति – एषु पूर्वप्रयोगार्हं परं स्यात्। दन्तानां राजानः राजदन्ताः। (धर्मादिष्वनियमः) अर्थधर्मौ। धर्मार्थावित्यादि।

सूत्रानुवाद – राजदन्तादि गण में पूर्वनिपात योग्य पद का परनिपात होता है। धर्म आदि शब्दों के द्वन्द्वसमास में पूर्वनिपात का कोई नियम नहीं होता।

व्याख्या – राजदन्तादिषु, परम् इति यह द्विपदात्मक सूत्र है। उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्वम् की अनुवृत्ति हुई है। प्रयुज्यते इति क्रियापदम् अध्याहार्यम् अर्थात् प्रयुज्यते पद का

अध्याहार किया जाता है। राजदन्त इति शब्दः आदिर्येषां ते राजदन्ताः, तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिः समास है।

उदाहरण – राजदन्तः – दन्तानां राजा राजदन्तः। दन्त आम् राजन् सु। यहाँ षष्ठी सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास करना है। प्रकृत सूत्र से परनिपात होकर राजदन्तः रूप बन जाता है।

विशेष – धर्मादि शब्दों मे तो यह नियम नहीं लगता है अतः अर्थधर्मौ। धर्मार्थौ दोनों बनते हैं।

सूत्र – द्वन्द्वे घि 2.2.32

सूत्रवृत्ति – द्वन्द्वे घिसंज्ञं पूर्वं स्यात्। हरिश्च हरश्च हरिहरौ।

सूत्रानुवाद – द्वन्द्वसमास में घि संज्ञक का पूर्व निपात होता है।

व्याख्या – द्वन्द्वे घि यह सूत्र का पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से पूर्व शब्द की अनुवृत्ति हुई है। सूत्रस्थ घि एक संज्ञा है जो "शेषो घ्यसखि" सूत्र से विहित होती है। अतः घिसंज्ञक का पूर्वनिपात अर्थात् पूर्वप्रयोग किया जाता है।

उदाहरण – हरिहरौ – "हरिश्च हरश्च" इस विग्रह में समास होने पर घि संज्ञक पद "हरि" का पूर्व प्रयोग हुआ है। शेष प्रक्रिया समान है।

सूत्र – अजाद्यन्तम् 2.2.33

सूत्रवृत्ति – द्वन्द्वे पूर्वं स्यात्। ईशकृष्णौ।

सूत्रानुवाद – द्वन्द्वसमास में अजादि जो शब्द है उसका पूर्व प्रयोग होता है।

व्याख्या – यह एकपदात्मक सूत्र है। अच् आदिर्यस्य तद् अजादि, बहुव्रीहिः। अत् अन्तो यस्य तद् अदन्तम्, बहुव्रीहिः। अजादि च तद् अदन्तं च अजाद्यदन्तम्, कर्मधारयः। 'द्वन्द्वे घि' सूत्र से द्वन्द्वे की तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्व शब्द की अनुवृत्ति हुई है।

उदाहरण – ईशकृष्णौ – "ईशश्च कृष्णश्च" इस विग्रह में ईश पद अजादि है तथा उसके अन्त में अकार भी है अतः द्वन्द्व समास होने पर प्रकृत सूत्र से ईश का पूर्व प्रयोग होकर "ईशकृष्णौ" रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – अल्पाच्तरम् 2.2.34

सूत्रवृत्ति – शिवकेशवौ।

सूत्रानुवाद – द्वन्द्व समास में कम अच् वाले शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

व्याख्या – यह एकपदात्मक सूत्र है। अल्पः अच् यस्य तद् अल्पाच्, बहुव्रीहिः। अल्पाच् एव अल्पाच्तरम्, स्वार्थे तरप्। 'द्वन्द्वे घि' सूत्र से द्वन्द्वे की तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्व शब्द की अनुवृत्ति हुई है।

उदाहरण – शिवकेशवौ – शिवश्च केशवश्च इस विग्रह में शिव पद में दो अच् तथा केशव में तीन अच् हैं। अतः कम अच् वाले पद शिव का पूर्व प्रयोग होकर "शिवकेशवौ" रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – पिता मात्रा 1.2.70

सूत्रवृत्ति – मात्रा सहोक्तौ पिता वा शिष्यते। माता च पिता च पितरौ मातापितरौ। वा।

सूत्रानुवाद – माता और पिता इन दोनों शब्दों का प्रयोग करने पर पितृ शब्द शेष बचता है।

व्याख्या – पिता मात्रा यह द्विपदात्मक सूत्र है। 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' से शेषः तथा 'नपुंसकमनपुंसके०' इत्यादि सूत्र से अन्यतरस्याम् की अनुवृत्ति होती है। मातृ शब्द के साथ उच्चरित पितृ शब्द का विकल्प से शेष बचता है।

सूत्र – द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् 2.4.2

सूत्रवृत्ति – एषाम् द्वन्द्वः एकवत्। पाणिपादम्। मार्दङ्गिकवैणविकम्। रथिकाश्वरोहम्।

सूत्रानुवाद – प्राणियों के अङ्गवाची शब्द तथा वादन यन्त्रों के अङ्ग और सेना के अङ्ग इन सभी का द्वन्द्व समास एकवत् होता है, अर्थात् इनका समाहार के अर्थ में समास होता है।

व्याख्या – द्वन्द्वः, च, प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् यह सूत्र का पदच्छेद है। यह सूत्र त्रिपदात्मक है। प्राणी च तूर्यञ्च सेना च तेषाम् इतरेतरद्वन्द्वः प्राणितूर्यसेनाः, तासामङ्गानि प्राणितूर्यसेनाङ्गानि, तेषां प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्। द्वन्द्वान्त में श्रूयमाण पद अङ्ग का तीनों शब्दों के साथ अन्वय होता है। "द्विगुरेकवचनम्" सूत्र से एकवचनम् की अनुवृत्ति हुई है।

उदाहरण – पाणिपादम् (प्राणी का अंग वाचक) – "पाणि च पादौ च" इस विग्रह में द्वन्द्व समास होकर नपुंसक एकवचन में "पाणिपादम्" रूप बनता है।

इसी प्रकार तूर्य का अंग वाचक मार्दङ्गिकवैणविकम् तथा सेना का अंग वाचक रथिकाश्वरोहम् उदाहरण है।

सूत्र – द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे 5.4.106

सूत्रवृत्ति – चवर्गान्ताद् दषहान्ताच्चा द्वन्द्वाटच् स्यात् समाहारे। वाक् च त्वक् च वाक्त्वचम्। त्वक्स्रजम्। शमीदृषम्। वाक्त्विषम्। छत्रोपाहनम्। समाहारे किम्? प्रावृट्शरदौ।

सूत्रानुवाद – समाहार के अर्थ मे चवर्गान्त दकारान्त षकारान्त और हकारान्त द्वन्द्व उन शब्दों से समासान्त टच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – द्वन्द्वात्, चुदषहान्तात्, समाहारे यह सूत्र का पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। चुश्च दश्च षश्च हश्च तेषाम् इतरेतरद्वन्द्वः चुदषहाः। चुदषहाः अन्ते यस्य सः चुदषहान्तः, तस्मात् चुदषहान्तात्। "राजाहः सखिभ्यष्टच्" से टच् की अनुवृत्ति होती है। "प्रत्ययः, परश्च, तद्धिताः, समासन्ताः" का अधिकार अनुवर्तित है।

उदाहरण – वाक्त्वचम् – "वाक् च त्वक् च" इस विग्रह में द्वन्द्व समास होकर "वाच् त्वच्" रूप बनता है। चकारान्त होने के कारण प्रकृत सूत्र से टच् प्रत्यय होकर वाच् त्वच् अ = वाच् त्वच् यह अकारान्त रूप बनता है तत्पश्चात् पूर्व पद वाच् के चकार को "चोः कुः" से ककार आदि होकर नपुंसकलिंग एकवचन में वाक्त्वचम् रूप सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार द्वन्द्व समास का प्रकरण यहाँ समाप्त हुआ। इसके उपरान्त समासान्त प्रत्यय का प्रकरण आरम्भ होता है। यह एक प्रकार से सर्वसमासान्त प्रत्यय हैं जो कि अब तक कहे गए समासों के अन्त में उस समास समुदाय के अवयव होकर समुदाय के अन्त में विहित होते है।

सूत्र – ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे 5.4.74

सूत्रवृत्ति – अ अनक्षे इतिच्छेदः। ऋगाद्यन्तस्य समासस्य अप्रत्ययोऽन्तावयवोऽक्षे या धूस्तदन्तस्य तु न। अर्धर्चः। विष्णुपुरम्। विमलापं सरः। राजधुरा। अक्षे तु अक्षधूः। दृढधूरक्षः। सखिपथः। रम्यपथो देशः।

सूत्रानुवाद – जिस समास के अन्त मे ऋक्, पुर्, अप्, पथिन् और अक्ष से भिन्न के अर्थ में धुर शब्द हो उनसे समासान्त अ प्रत्यय होता है।

व्याख्या – ऋक्पूरब्धूःपथाम्, अ, अनक्षे यह त्रिपदात्मक सूत्र है। प्रत्ययः, परश्च, तद्धिताः, समासान्ताः इत्यादि सूत्रों का अधिकार है। ऋक् च पूश्च आपश्च धूश्च पन्थाश्च तेषामितरेतरद्वन्द्वः ऋक्पूरब्धूःपन्थाः, तेषाम् ऋक्पूरब्धूःपथाम्। न अक्षः अनक्षः, तस्मिन् अनक्षे ऐसा नञ्तत्पुरुषः समास है। सम्बन्धस्य अधिकरणविवक्षायां सप्तमी। समासस्य अन्तः (अन्तावयवः) समासान्तः पर समासस्य का वचनविपरिणाम कर समासानाम् कर लिया जाता है। ऋक्पूरब्धूःपथाम् यह समासानाम् का विशेषण है अतः तदन्तविधि होकर समासानाम् का विशेषण बन जाता है। अनक्ष यह निषेध यद्यपि साधारणतया कहा गया तथापि अन्यों के साथ असम्भव होने से सम्बद्ध नहीं होता केवल धुर् के साथ ही सम्बद्ध होता है। अर्थ– (ऋक्पूरब्धूःपथाम् = ऋगाद्यन्तानाम्) ऋक्, पुर्, अप्, धुर् और पथिन्ये शब्द जिनके अन्त में हों ऐसे (समासानाम्) समासों का (अन्तः = अन्तावयवः) अन्तावयव (अः प्रत्ययः) 'अ' प्रत्यय हो जाता है परन्तु (अनक्षे) अक्ष = रथचक्र के विषय में जो धुर् शब्द तदन्त समास को यह समासान्त नहीं होता।

ऋक्शब्दान्त समास का उदाहरण – ऋचोऽर्धम् अर्धर्चः – ऋचोऽर्धम् अर्धर्चः लौकिकविग्रह, अर्धर्चं वा (ऋचा अर्थात् ऋक्मन्त्र का ठीक आधा भाग)। अलौकिकविग्रह – ऋच् ङस् अर्ध सु। यहाँ अर्धं नपुंसकम् सूत्र से तत्पुरुषसमास, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, प्रथमानिर्दिष्ट 'अर्ध' शब्द का पूर्वनिपात तथा आद् गुणः सूत्र से गुण-रपर करने पर अर्धर्च् बना। यहाँ समास के अन्त में ऋच् शब्द विद्यमान है अतः ऋक्पूरब्धःपथामानक्षे इस प्रकृत सूत्र से समासान्त 'अ' प्रत्यय होकर अर्धर्च् अ = अर्धर्च ऐसा अदन्त शब्द बनने पर पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके सु प्रत्यय होने पर इस दशा में "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" से प्राप्त परवल्लिङ्गता का बाधकर "अर्धर्चाः पुंसि च" से पुंल्लिङ्ग विवक्षा में प्रथमैकवचन सु के स्थान पर विसर्गादि होकर 'अर्धर्चः' तथा

नपुंसकलिङ्ग विवक्षा में सु को अम् आदेश तथा पूर्वरूपादि करने से 'अर्धर्चम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

इसी प्रकार अविद्यमाना ऋचो यस्य सोऽनृचो माणवकः (वह बालक जिसने ऋचाओं का अध्ययन नहीं किया)। यहाँ नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा इत्यादि वार्तिक से बहुव्रीहिसमास, उत्तरपद का लोप, नुट् का आगम तथा प्रकृत सूत्र ऋक्पूरब्धःपथामानक्षे के द्वारा समासान्त अ प्रत्यय करने पर अनृचः प्रयोग सिद्ध हो जाता है। इसी तरह – बहव ऋचो यस्यासौ बह्वृचः बनता है।

पुर् – शब्दान्त का उदाहरण – विष्णुपुरम् – लौकिकविग्रह = विष्णोः पूः – विष्णुपुरम् (विष्णु की नगरी)। अलौकिकविग्रह विष्णु ङस् पुर् सु यहाँ "षष्ठी" सूत्र से तत्पुरुषसमास, समास की प्रातिपदिकसंज्ञा एवं प्रातिपदिक के अवयव सुपों (ङस् और सु) का लुक् करने पर ऋक्पूरब्धःपथामानक्षे सूत्र द्वारा समासान्त 'अ' प्रत्यय करने से विष्णु पुर् अ = विष्णपुर बन जाने पर इस अवस्था में परवल्लिङ्ग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः से परवल्लिङ्गता अर्थात् पुर् शब्द के समान स्त्रीलिङ्गता प्राप्त होती है परन्तु लोक में इस प्रकार के शब्द नपुंसक में ही प्रयुक्त होते देखे जाते हैं अतः लिङ्ग के लोकाश्रित होने के कारण यहाँ नपुंसक में विभक्तिकार्य करने पर 'विष्णुपुरम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

अप् – शब्दान्त समास का उदाहरण – विमलापं सरः – लौकिकविग्रह – विमला आपो यस्य तद् विमलापं सरः (स्वच्छ है जल जिसका ऐसा तालाब)। अलौकिकविग्रह – विमला जस् अप् जस्। यहाँ अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक् तथा स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्0 सूत्र द्वारा 'विमला' को पुंवद्भाव से 'विमल' होकर सवर्णदीर्घ करने से 'विमलाप' हुआ। 'विमलाप' के अन्त में 'अप्' शब्द होने के कारण ऋक्पुरब्धूःपथामानक्षे सूत्र से समासान्त 'अ' प्रत्यय करने पर विशेष्य (सरः) के अनुसार नपुंसक प्रथमैकवचन में 'विमलापम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

धुर् – शब्दान्त समास का उदाहरण – राजधुरा –लौकिकविग्रह – राज्ञो धूः अलौकिकविग्रह – राजन् ङस् धुर् सु इस अवस्था में "षष्ठी" सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा के पश्चात् समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक् तथा न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से पदान्त नकार का लोप करने पर राजधुर् बना। राजधुर् के अन्त में धुर् शब्द होने के कारण ऋक्पूरब्धःपथामानक्षे सूत्र से समासान्त 'अ' प्रत्यय होकर राजधुर् अ = राजधुर बन जाने पर अब परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः से परवल्लिङ्गता के कारण स्त्रीत्व की विवक्षा में अजाद्यतष्टाप् से टाप्, अनुबन्धलोप कर सवर्णदीर्घ तथा प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय लाकर उसका हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सूत्र द्वारा लोप करने पर 'राजधुरा' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

विशेष – सूत्र में अनक्षे कहा गया है अतः धुर् शब्द का सम्बन्ध यदि अक्ष के साथ होगा तो प्रकृत सूत्र से समासान्त न होगा, यथा – अक्षस्य धूः – अक्षधूः (चक्र की धुरी अर्थात् मध्यभाग)। यहाँ समासान्त नहीं होता है।

पथिन् – शब्दान्त समास का उदाहरण – सखिपथः– लौकिकविग्रह – सख्युः पन्थाः सखिपथः (मित्र का मार्ग)। अलौकिकविग्रह – सखि ङस् पथिन् सु। यहाँ षष्ठी सूत्र द्वारा षष्ठी तत्पुरुषसमास कर सुपों का लुक् करने से 'सखिपथिन्' बना। अब

समास में पथिन् शब्द अन्त में होने के कारण ऋक्पूरब्धःपथामानक्षे सूत्र द्वारा समासान्त 'अ' प्रत्यय होकर पूर्व की यचि भम् सूत्र से भसञ्ज्ञा तथा भस्य टेर्लोपः सूत्र से पथिन् की टि (इन्) का लोप करने पर सखिपथ् अ = सखिपथ यह अकारान्त शब्द निष्पन्न होता है। तत्पुरुषसमास में परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः के अनुसार पुंस्त्व में प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय लाकर रुत्व, विसर्ग करने से 'सखिपथः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – अक्ष्णोऽदर्शनात् 5.4.76

सूत्रवृत्ति – अचक्षुःपर्यायादक्ष्णोऽच् स्यात् समासान्तः। गवामक्षीव गवाक्षः।

सूत्रानुवाद – यदि अक्षि शब्द नेत्रवाची न हो तो समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – यह द्विपदात्मक सूत्र है। अक्ष्णः यह पञ्चमी का एकवचन है। अदर्शनात् यह पञ्चम्यन्त भी उसका विशेषण है। अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति होती है। अच् प्रथमान्त पद है जो कि विधीयमान समासान्त प्रत्यय है। प्रत्ययः, परश्च, तद्धिताः, समासान्ताः – ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम् = नेत्रम्, करणे ल्युट्। न दर्शनम् अदर्शनम्, तस्माद् – अदर्शनात्, नञ्तत्पुरुषः। अदर्शनात् पद 'अक्ष्णः' के साथ अन्वित होता है। 'अक्ष्णः' पद 'समासान्त' का विशेषण है अतः विशेषण से तदन्तविधि हो जाती है। तो सूत्रार्थ इस प्रकार फलित होता है – अदर्शनात् = जो चक्षुर्वाचक नहीं ऐसा अक्ष्णः = अक्षिशब्द तदन्त समास से पर में होने पर तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय हो जाता है और वह इस समाससमुदाय का अन्तावयव होता है। अच् प्रत्यय का चकार हलन्त्यम् सूत्र द्वारा इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाता है, 'अ' मात्र शेष रहता है।

उदाहरण – गवाम् अक्षीव गवाक्षः – लौकिकविग्रह – गवाम् अक्षीव गवाक्षः (गौओं की आँख सदृश आकार वाला अर्थात् झरोखा, रोशनदान)। अलौकिकविग्रह – गो आम् अक्षि सु। यहाँ अक्षि शब्द चक्षुर्वाचक नहीं अपितु आँख के सदृश अर्थ में लाक्षणिक है। यहाँ षष्ठी सूत्र द्वारा तत्पुरुषसमास में सुब्लुक करने पर गो अक्षि हुआ। अवङ् स्फोटायनस्य सूत्र से 'गो' के ओकार को नित्य अवङ् (अव) आदेश कर सवर्णदीर्घ करने से 'गवाक्षि' बनने पर अक्ष्णोऽदर्शनात् सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय करके गवाक्षि अ इस दशा में यचि भम् से तद्धितसंज्ञक समासान्त प्रत्यय होने से भसंज्ञा करके यस्येति च से इकार का लोप करके गवाक्ष बना लोकप्रसिद्धाश्रय लिङ्ग का आश्रय करके पुंल्लिङ्ग विवक्षा में गवाक्षः बना।

सूत्र – उपसर्गादध्वनः 5.4.84

सूत्रवृत्ति – प्रगतोऽध्वानं प्राध्वो रथः।

सूत्रानुवाद – प्रादि उपसर्ग से उत्तर जो अध्वन् शब्द उससे समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – द्विपदात्मक सूत्र है। उपसर्गात्, अध्वनः यह दोनों पद पञ्चमी एकवचनान्त हैं। अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति होती है। अच् प्रथमान्त पद है जो कि विधीयमान समासान्त प्रत्यय है। प्रत्ययः, परश्च, तद्धिताः, समासान्ताः –

ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। उपसर्ग से तात्पर्य यहाँ प्रादि 22 उपसर्गों से हैं। अध्वनः यह समासात् का विशेषण है, अतः विशेषण से तदन्तविधि हो जाती है। सम्पूर्ण सूत्रार्थ – (उपसर्गात्) प्र आदि से परे जो अध्वन् शब्द है तदन्त समास समुदाय से परे तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय हो जाता है और वह उस समास समुदाय का अन्तावयव होता है।

उदाहरण – प्राध्वो रथः – लौकिकविग्रह – प्रगतोऽध्वानं प्राध्वो रथः (वह रथ जो मार्ग पर चल पड़ा है)। अलौकिकविग्रह – प्र अध्वन् अम्। यहाँ पर अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया वार्तिक से प्रादितत्पुरुषसमास, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक तथा प्रकृत उपसर्गादध्वनः सूत्र द्वारा समासान्त अच् प्रत्यय होकर प्र अध्वन् अ इस दशा में अब अच् तद्धितसंज्ञक समासान्त के परे रहते नस्तद्धिते से भसंज्ञक टि (अन्) का लोप हो सवर्णदीर्घ कर विभक्ति लाने से 'प्राध्वः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – न पूजनात् 5.4.69

सूत्रवृत्ति – पूजनार्थात् परेभ्यः समासान्ता न स्युः। सुराजा। अतिराजा।

सूत्रानुवाद – जो प्रातिपदिक पूजार्थक शब्दों से परे है उससे समासान्त प्रत्यय नहीं होता है।

व्याख्या – द्विपदात्मक सूत्र है। न यह अव्ययपद है। पूजनात् पञ्चमी एकवचनान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपतिकात्, समासान्ताः – ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं अर्थात् पूजनार्थक से परे जो प्रातिपदिक है, तदन्त समास से पर में समामान्त प्रत्यय नहीं हो। यहाँ पर एक वार्तिक है जो लघुसिद्धान्तकौमुदी में नहीं पढी गई परन्तु सिद्धान्तकौमुदी में भाष्यकार की इष्टि के रूप में पढी गई है – स्वतिभ्यामेव। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक पूजनार्थक से यह निषेध प्रवृत्त नहीं होता अपितु 'सु' और 'अति' इन दो पूजनार्थक निपातों से परे ही यह निषेध प्रवृत्त होता है।

उदाहरण – सुराजा – लौकिकविग्रह सु = शोभनो राजा सुराजा (सुन्दर या अच्छा राजा)। अलौककविग्रह – सुराजन् सु। यहाँ कु–गति–प्रादयः सूत्र से प्रादितत्पुरुषसमास होकर सुब्लुक करने से 'सुराजन्' बना। अब यहाँ राजाहःसखिभ्यष्टच् सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय प्राप्त होता है परन्तु प्रकृत सूत्र न पूजनात् से सु निपात से परे राजन् को समासान्त टच् का निषेध हो जाता है। पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा होने से स्वादियों की उत्पत्ति के प्रसङ्ग में प्रथमा के एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्त्यादि कार्य करके सुराजा सिद्ध हो जाता है।

इसी प्रकार अतिशयितो राजा अतिराजा इस अर्थ में पूर्ववत् अति और राजा पदों में समास करने पर 'अति' इस पूजनार्थक निपात से परे राजन्–शब्दान्त समास को प्राप्त समासान्त टच् का प्रकृत सूत्र से निषेध हो जाता है। शेष विभक्त्यादिकार्य करने पर अतिराजा रूप सिद्ध होता है।

12.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

प्राप्तोदकः ग्रामः – प्राप्तम् उदकं यं सः इस अर्थ की विवक्षा में प्राप्त सु उदक सु इस अलौकिक विग्रहवाक्य से अनेकमन्यपदार्थे. से समास हुआ।"कृत्तद्धितसमासाश्च"

से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से प्राप्त उदक हुआ, सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ इस सूत्र से प्राप्त शब्द का पूर्व प्रयोग हुआ। गुण सन्धि होने से रूप बना प्राप्तोदक, स्वादि–उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया रुत्वविसर्ग होने से प्राप्तोदकः रूप सिद्ध हुआ।

पीताम्बरः – पीतानि अम्बराणि यस्य सः इस अर्थ की विवक्षा में पीत जस् अम्बर जस् इस अलौकिक विग्रहवाक्य से अनेकमन्यपदार्थे. से समास हुआ।"कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से पीत अम्बर हुआ, सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ इस सूत्र से पीत शब्द का पूर्व प्रयोग हुआ। सवर्णदीर्घ सन्धि होने से रूप बना पीताम्बर, स्वादि–उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया रुत्वविसर्ग होने से पीताम्बरः रूप सिद्ध हुआ।

रूपवद्भार्यः – रूपवती भार्या यस्य सः इस अर्थ की विवक्षा में रूपवती सु भार्या सु अलौकिक विग्रहवाक्य से अनेकमन्यपदार्थे. से समास हुआ।"कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से रूपवती भार्या हुआ, सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ इस सूत्र से रूपवती शब्द का पूर्व प्रयोग हुआ। स्त्रियाः पुंवद्0 इत्यादि सूत्र से रूपवती शब्द को पुंवद्भाव प्राप्त हुआ उससे रूपवत् शब्द बना "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द की अन्तिम अच् के स्थान पर ह्रस्व अकार हुआ। जश्त्व होने से तकार का दकार हुआ तब रूपवद्भार्य पूर्ववत् स्वादि-उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया रुत्वविसर्ग होने से रूपवद्भार्यः रूप सिद्ध हुआ।

स्त्रीप्रमाणः – स्त्री प्रमाणम् अस्य इति इस अर्थ की विवक्षा में स्त्री सु प्रमाणी सु अलौकिक विग्रहवाक्य से अनेकमन्यपदार्थे. से समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से स्त्री प्रमाणी हुआ, सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ इस सूत्र से स्त्री शब्द का पूर्व प्रयोग हुआ। स्त्रियाः पुंवद्0 इत्यादि सूत्र से स्त्री शब्द को पुंवद्भाव नही होगा क्योंकि स्त्री शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग है भाषितपुंस्क नहीं है। प्रकृत सूत्र से अप् प्रत्यय हुआ। अनुबन्धलोप होने से, यचि भम् से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक ईकार का लोप हुआ। स्वादि-उत्पत्ति होने से रुत्वविसर्ग होने से स्त्रीप्रमाणः रूप सिद्ध हुआ।

बहिर्लोमः – बहिः लोमानि यस्य सः अर्थ की विवक्षा में बहिः लोमन् जस् अलौकिक विग्रहवाक्य से अनेकमन्यपदार्थे. से समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से बहिः लोमन् हुआ, सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ इस सूत्र से बहिः शब्द का पूर्व प्रयोग हुआ। अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः इति सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय हुआ अनुबन्धलोप होने से, यचि भम् से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक अन् का लोप हुआ। अदन्त सुबन्त से स्वादि-उत्पत्ति होने से रुत्वविसर्ग होने से बहिर्लोमः रूप सिद्ध हुआ।

सखिपथः – सख्युः पन्थाः इस अर्थ की विवक्षा में सखि ङस् पथिन् सु अलौकिक विग्रहवाक्य से तत्पुरुष समास हुआ, "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् होने से ऋक्पूरब्धू0 सूत्र से अ प्रत्यय हुआ। यचि भम् से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक इन् का लोप हुआ। अदन्त सुबन्त से स्वादि-उत्पत्ति होने से रुत्वविसर्ग होने से सखिपथः रूप सिद्ध हुआ।

अतिराजा – राजानम् अतिक्रान्तः इस अर्थ की विवक्षा में राजन् अम् अति विग्रहवाक्य से "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" इस वार्तिक से द्वितीयार्थ समर्थ सुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से अति की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब रूप बना अति राजन्, यहाँ "न पूजनात्" से समासान्त प्रत्यय का निषेध होने से और स्वादि–उत्पत्ति होने से अतिराजा रूपसिद्ध हुआ। अन्यत् सुराजा से समान है।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए–

i. बहुव्रीहि समास में शब्दों का पूर्व निपात होता है–

(क) निष्ठान्त का (ख) ल्यबन्त का

(ग) सन्नन्त का (घ) अजन्त का

ii. शुद्ध रूप है –

(क) सुराजम् (ख) सुराजा

(ग) सुराजः (घ) सुराजि

iii. सप्तम्यन्त विशेषण बहुव्रीहि में होता है –

(क) परम् (ख) अन्ते

(ग) मध्ये (घ) पूर्वम्

iv. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः के द्वारा विधान होता है –

(क) द्वि का (ख) ष का

(ग) त्रि का (घ) किसी का नहीं

v. पूर्णाद्विभाषा का उदाहरण है –

(क) विकाकुत् (ख) उत्काकुत्

(ग) पूर्णकाकुत् (घ) कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

i. उरसान्त बहुव्रीहि को समासान्त...................प्रत्यय होता है।

ii. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे.................. अपूरणीप्रियादिषु।

iii. ....विशेषणं च बहुव्रीहौ पूर्वं स्यात्।

iv. अचक्षुःपर्यायादक्ष्णः..................... स्यात् समासान्तः।

v. चवर्गान्ताद्दषहान्ताच्च.................. टच् स्यात्समाहारे।

3. सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

i. बहुव्रीहि समास में पूर्व पद प्रधान होता है – सही/गलत

ii. क्त और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है– सही/गलत

iii. समास में अल्पाच् का पूर्व प्रयोग होता है– सही/गलत

iv. द्वन्द्व समास में उभय पद की प्रधानता नहीं होती है– सही/गलत

v. निष्ठा सूत्र का उदाहरण युक्तयोगः है – सही/गलत

अभ्यास प्रश्न

1. व्यूढोरस्क का लौकिक और अलौकिक विग्रह वाक्य लिखिए।
2. इणः षः सूत्र का अर्थ लिखिए।
3. अनेकमन्यपदार्थे सूत्र का सरलार्थ लिखिए।
4. सुहृन्मित्रम् किस् सूत्र का उदाहरण है? लिखिए।
5. स्त्रीप्रमाणः शब्द की रूपसिद्धि लिखिए।

12.4 सारांश

इस इकाई में विशेषतः आपने क्रमशः बहुव्रीहि समास तथा द्वन्द्व समास के सूत्रों का सविस्तार सोदाहरण अध्ययन किया। इस इकाई में वस्तुतः तीन प्रकार के सूत्रों का अध्ययन आपके द्वारा किया गया। पहले आपने बहुव्रीहि समास के सूत्र, उसके बाद द्वन्द्व समास के सूत्र, तदनन्तर सर्वसमासान्त प्रत्ययों का अध्ययन उनके विधायक सूत्रों के विस्तृत विवेचन तथा उदाहरणों की रूप प्रक्रिया के साथ अतीव विस्तार से किया। इस प्रकार समास प्रकरण की आपके पाठ्यक्रमानुसार यह अन्तिम इकाई थी जिससे समास प्रकरण यहीं समाप्त हुआ।

12.5 शब्दावली

शेषः – उक्तादन्यः शेषः। उक्त से अन्य अर्थात् जो बोला जा चुका है उससे भिन्न को शेष कहा जाता है।

प्रादि – प्रादिभ्यो धातुजेभ्य इत्यादि वार्तिक में आये प्रादि से तात्पर्य प्र, परा, अप, सम इत्यादि 22 उपसर्गों से है।

धातुजः – धातोः जायते इति धातुजः अर्थात् धातु से जो उत्पन्न होता है उसे धातुज कहते हैं।

भाषितपुंस्कः – भाषितः पुमान् येन सः भाषितपुंस्कः। जो शब्द किसी निमित्त को लेकर पुंल्लिंग में प्रवृत्त हुआ हो वह शब्द उसी निमित्त को लेकर किसी अन्य लिंग अर्थात् नपुंसकलिंग में भी प्रयुक्त हो तो वह शब्द भाषितपुंस्क कहलाता है।

अल्पाच् – अल्पः अच् यस्य तद् अल्पाच् अर्थात् जिस पद में न्यून अच् होते हैं उसे अल्पाच् कहते हैं। समास में अल्पाच् पदों का पूर्व निपात होता है।

समासान्त – समासान्त से तात्पर्य समासान्त प्रत्यय जो कि समाससंज्ञक समुदाय के अन्त में होते हैं। अतः यह प्रत्यय समुदाय के अवयव कहलाते हैं।

12.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

12.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. i. (क) निष्ठान्त का ii.(ख) सुराजा iii. (घ) पूर्वम्, iv. (ख) ष का v. (ग) पूर्णकाकुत्
2. i. कप्, ii.स्त्रियाम्, iii.सप्तम्यन्त, iv. अच्, v. द्वन्द्वात्
3. iii. गलत,iii.सही, iii.सही, iv. गलत, v. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।